हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-169, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.

लखनऊ, सोमवार 02 दिसम्बर 2024

मौलाना आजाद इन्स्टीट्यूट आंफ हयूमनिटीज,साइंस...02

महराजगंज प्रीमियर लीग के उद्घाटन मैच पर स्पिटन ...06

न्यूज

जबरन किसी का धर्मांतरण न हो, ऐसा होना ही चाहिए कानून- शेखावत

जोधपुर,(एजेंसी)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान सरकार के लाए जा रहे धर्मांतरण कानून का स्वागत करते हुए ने कहा है कि जबरन किसी का भी धर्मांतरण न हो, निश्चित रूप से ऐसा कानून होना ही चाहिए। हम सब लोग राजस्थान सरकार के इस निर्णय के साथ हैं। अपने गृह जो जोधपुर पहुंचे श्री शेखावत ने रविवार को मीडिया से बातचीत में यह बात कही। उन्होंने कहा कि प्रलोभन के आधार पर और जबरन धर्मांतरण न हो, राजस्थान में इस तरह का कानून राज्य सरकार लेकर आ रही है, वह इसका स्वागत करता हैं।

चुनौतियों एवं हमलों ने अदाणी समूह को बनाया मजबूत-अदाणी

जयपुर,(एजेंसी)। अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी ने कहा है कि अदाणी समूह को मिली चुनौतियों और इस पर हुए हमलों ने उन्हें और मजबूत बनाया हैं। श्री अदाणी शनिवार रात जयपुर 51वें इंडिया जेम्स एंड ज्वेलरी अवाड्र्स समारोह में बोल रहे थे। अमरीका में उन पर लगे आरोपों पर पहली बार बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह पहली बार नहीं है जब ऐसी चुनौतियो का सामना करना पड़ा है, जब जब चुनौतियां आई और हमले हुए उन्हें और मजबूत बनाता और यह बाधा अदाणी समूह के लिए सीढी बन जाती है।

अरविंद केजरीवाल का आपराधिक चेहरा सामने आया: वीरेंद्र सचदेवा

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने शनिवार को दिल्ली की सत्ताधारी श्आप्श् और पूर्व सीएम और पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधा। दिल्ली में बढ़ रहे क्राइम को लेकर वीरेंद्र सचदेवा ने कहा, अरविंद केजरीवाल का आपराधिक चेहरा सामने आया, वो खुद जेल से जमानत पर हैं। उनके विधायक जनता को लूटने का काम कर रहे हैं। सोशल मीडिया के पब्लिक डोमेन में जो ऑडियो है, उसके हिसाब से उत्तम नगर के आप विधायक नरेश बालियान खुद गैंगस्टर को टिप्स दे रहे हैं। वो बोल रहे हैं, इन आदमियों को फोन करो, जब उनको धमकाओगे, डराओगे तो वह पैसे लेकर आएंगे फिर हम उसका हिसाब करेंगे। उनको जनता की सेवा के लिए चुना था, लेकिन वो लूटने का काम कर रहे हैं। यह आम आदमी पार्टी का आपराधिक चरित्र है, जो आज जनता के सामने आया है। उन्होंने आगे कहा, मैं अरविंद केजरीवाल से एक सवाल पूछना चाहता हूं, उन सड़कों का क्या हुआ, जो दीपावली तक बनने वाली थी। आज भी सड़कों पर गड्ढे हैं और आदमी रोज उसमें गिरते हैं।

बधाईः सीएम खुद आपकी शादी में आए हैं

⇨ योगी ने विधायकों की चुटकी ली, कहा- पछता रहे होंगे कि सामूहिक विवाह में शादी क्यों नहीं की

लखनऊ/ गोरखपुर। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत एक दिसंबर को हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड के परिसर में आयोजित भव्य समारोह में करीब 1200 गरीब बेटियों का विवाह संपन्न होगा. उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार आगामी एक दिसंबर को 1200 ऐसी गरीब बेटियों की शादी बेहद खास बनने जा रही है जिनके परिवार के लिए शादी के संसाधन जुटाना पहाड़ तोड़ने जैसा मुश्किल था. आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की इन बेटियों की शादी सरकार करा रही है. इसके लिए एक दिसंबर को गोरखपुर में होने वाले भव्य समारोह में आशीर्वाद देने के लिए सरकार के मुखिया योगी आदित्यनाथ खुद

मौजूद रहेंगे. मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत एक दिसंबर को हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (खाद कारखाना) के परिसर में आयोजित भव्य समारोह में करीब 1200 गरीब बेटियों का विवाह संपन्न होगा. इस आयोजन में वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने वाले जोड़ों को आशीर्वाद देने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं उपस्थित रहेंगे. मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत प्रति विवाह पर सरकार की तरफ से 51 हजार रुपये खर्च किए जाएंगे. इसमें से 35 हजार रुपये विवाह बंधन में बंधने जा रही कन्या के बैंक खाते में अंतरित कर दिए जाते हैं. 10 हजार रुपये उपहार व शेष राशि अन्य व्यवस्थागत खर्चों के मद में है. उपहार में वधू के लिए विवाह हेतु कढ़ाई की एक साड़ी, एक चुनरी, एक डेली यूज की साड़ी, वर हेतु कुर्ता पायजामा, पगड़ी तथा माला, मुस्लिम विवाह के लिए वधू को कढ़ाई वाला सूट, चुनरी, सूट का कपड़ा, वर हेतु कुर्ता पायजामा आदि दिया जाता है. आभूषण में चांदी की पायल, बिछुआ भी प्रदान किया जाता है. गृहस्थी के समान में कुकर, जग या लोटा, थाली, गिलास, कटोरा व चम्मच, बक्सा तथा प्रसाधन सामग्री से भरी श्रृंगारदानी दी जाती है. जिला प्रशासन और समाज कल्याण विभाग के अधिकारी सामूहिक विवाह कार्यक्रम की तैयारियों को अंतिम रूप देने में जुटे हुए हैं. जिला समाज कल्याण अधिकारी वशिष्ठ नारायण सिंह से मिली जानकारी के अनुसार आगामी एक दिसंबर को होने वाले मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम के लिए ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से अब तक प्राप्त 2663 आवेदनों का सत्यापन कराया जा रहा है. इसमें करीब 1200 पात्र आवेदकों के सामूहिक विवाह कार्यक्रम में शामिल होने की संभावना है. गोरखपुर में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना की उपलब्धि वित्तीय वर्ष संख्या 2017-18 81 2018-19 256 2019-20 651 2020-21 622 2021-22 1416 2022-23 15052023-24 4078 अब तक हो चुके हैं 8609 सामूहिक विवाह आर्थिक रूप से कमजोर किसी वही व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी चिंता बेटी के हाथ पीले करने की होती है. योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद बीते सात साल से उनकी यह चिंता दूर हो गई है. वित्तीय वर्ष 2017-18 से अब तक समाज कल्याण विभाग मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत सिर्फ गोरखपुर जिले में ही 8609 शादियां सम्पन्न करा चुका है. अब इसमें 1200 की संख्या और जुड़ जाएगी।

गोरखपुर में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना की उपलब्धि

वित्तीय वर्ष	संख्या
2017-18	81
2018-19	256
2019-20	651
2020-21	622
2021-22	1416
2022-23	1505
2023-24	4078

अब तक हो चुके हैं 8609 सामूहिक विवाह

सरगुजा में भीषण सड़क हादसा, ट्रक ने कार को मारी टक्कर, पांच लोगों की दर्दनाक मौत

अंबिकापुर,(एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला में अंबिकापुर-बिलासपुर नेशनल हाईवे 130 पर उदयपुर के पास भीषण सड़क हादसा हुआ है। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई है। रायपुर से अंबिकापुर की ओर जा रही कार को ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में कार के परखचे उड़ गए। कार सवार चार लोगों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि एक अन्य ने उदयपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दम तोड़ दिया। घटना रविवार की सुबह पांच से 5रू30 बजे के बीच की है। बताया जा रहा है कि ट्रक अंबिकापुर से बिलासपुर की ओर जा रहा था। कार चालक रायपुर से अंबिकापुर की ओर आ रहे थे। इसी दौरान उदयपुर अदानी गेस्ट हाउस के पास आमने-सामने दोनों की जबरदस्त टक्कर हो गई। हादसे के बाद ट्रक चालक ने भागने की कोशिश की, उसके ट्रक को पीछे किया तो कार और भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। कार के परखचे उड़ गए और उसमें सवार लोग कार में ही बुरी तरह से दब गए। जिससे सभी लोगों की मौत हो गई। कार में सवार पांचों लोग चंगोराभाटा रायपुर के रहने वाले हैं, वह घर से जगदलपुर जाने की बात कहकर निकले थे।

देश में आग लगाकर रिटायर हुए जस्टिस चंद्रचूड़: राउत

मुंबई,(एजेंसी)। चुनाव नतीजे घोषित हुए एक हफ्ते से ज्यादा समय बीत चुका है और अभी तक महाराष्ट्र में सीएम के नाम का एलान नहीं हुआ है। इस पर भी शिवसेना यूबीटी नेता ने तंज कसा। महाराष्ट्र चुनाव नतीजे को शिवसेना यूबीटी के नेता संजय राउत ने गलत बताते हुए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ पर ठीकरा फोड़ा है। उन्होंने महाराष्ट्र के चुनाव नतीजों को संविधान के खिलाफ बताया और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की। चुनाव नतीजे घोषित हुए एक हफ्ते से ज्यादा समय बीत चुका है और अभी तक महाराष्ट्र में सीएम के नाम का एलान नहीं हुआ है। इस पर शिवसेना यूबीटी नेता ने तंज कसा। इतिहास कभी जस्टिस चंद्रचूड़ को माफ नहीं करेगा संजय राउत ने कहा कि महाराष्ट्र में ऐसी सरकार सत्ता में है, जो संविधान के अनुसार गलत है। इस सरकार को सुप्रीम कोर्ट का समर्थन मिला और इसके लिए तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ जिम्मेदार हैं। संजय राउत ने पूर्व सीजेआई पर शिवसेना विधायकों की अयोग्यता के मामले में देरी से सुनवाई करने का आरोप लगाया। ऐसा नहीं है कि महाराष्ट्र चुनाव में हार के लिए संजय राउत ने पहली बार पूर्व मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ पर ठीकरा फोड़ा है।

महाराष्ट्र में सरकार का शपथ ग्रहण समारोह पांच दिसंबर को

मुंबई,(एजेंसी)। महाराष्ट्र की नयी सरकार का शपथ ग्रहण समारोह पांच दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में होगा। यह जानकारी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने शनिवार को दी। राज्य विधानसभा चुनाव 20 नवंबर को हुए थे और नतीजे 23 नवंबर को घोषित किए गए थे। कुल 288 सदस्यीय विधान सभा में 235 सीटें महायुति को मिलीं, जिसे स्पष्ट बहुमत मिला। निर्विवाद बहुमत मिलने के बाद भी, महागठबंधन ने सरकार बनाने में देरी की, क्योंकि तीन सहयोगियों - भाजपा, शिवसेना (शिंदे) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) (एपी) के बीच मुख्यमंत्री पद और अन्य मंत्री पदों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा थी। इस बीच भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बावनकुले ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट के जरिए शपथ ग्रहण समारोह को लेकर अहम जानकारी दी है। शपथ ग्रहण समारोह पांच दिसंबर को दोपहर बाद आयोजित किया जाएगा।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से गठबंधन नहीं

➲ आप अकेले चुनाव लड़ेगीय दिल्ली की खराब कानून व्यवस्था के लिए अमित शाह जिम्मेदार

नई दिल्ली,(एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर बड़ा एलान किया है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वह दिल्ली में अकेले विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने रविवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर बड़ा एलान किया है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वह दिल्ली में अकेले विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। हरियाणा चुनाव के बाद आम आदमी पार्टी के कई नेताओं ने कहा था कि दिल्ली में कांग्रेस के साथ आप का गठबंधन नहीं होगा। आप के साथ लोकसभा चुनाव में गठबंधकर

"मैं पदयात्रा पर जा रहा था। मेरे ऊपर एक लिक्विड फेंका। वो लिक्विड हार्मलेस था लेकिन हार्मफुल भी हो सकता था।

अरविंद केजरीवाल

करके देख चुके हैं। लोकसभा में कांग्रेस के साथ गठबंधन से कोई फायदा नहीं हुआ था। इसके बाद हरियाणा में सीटों के झगड़े को लेकर गठबंधन नहीं हो सका था। दिल्ली में आम आदमी पार्टी अकेले चुनाव लड़ेगी, इसके संकेते तो हरियाणा चुनाव के वक्त ही मिल गए थे, जब सीटों को लेकर कांग्रेस और आप के बीच मामला फंस गया था। लोकसभा चुनाव के दौरान आप और कांग्रेस ने दिल्ली और हरियाणा में गठबंधन के तहत चुनाव लड़ा था। दिल्ली में तब भाजपा ने सात सीटें जीती थी। वहीं आप दिल्ली के साथ-साथ हरियाणा में भी अपना खाता नहीं खोल पाई थी। अब विधानसभा चुनाव को लेकर आप ने साफ कर दिया कि वह अकेले चुनाव लड़ेगी। ऐसे में दिल्ली में त्रिकोणीय मुकाबला संभव है।

एक और नया खुलासा

पाउडर में न मिला कोई केमिकलय धमाके के बाद गायब हुए लोगों की पहचान की कोशिश

नई दिल्ली,(एजेंसी)। दिल्ली के प्रशांत विहार में धमाका मामले में एक नया खुलासा हुआ है। शुरुआती जांच में सामने आया है कि पाउडर में कोई दूसरा केमिकल नहीं मिला है। सुरक्षा एजेंसियां आतंकियों के व्हाट्सएप ग्रुप पर नजर रख रही है। दिल्ली के प्रशांत विहार में हुए धमाके में पुलिस के हाथ अभी भी खाली हैं।

पुलिस खुफिया तरीके से इलाके में उन लोगों की पहचान करने में जुटी है, जो धमाका होने के बाद से गायब हैं। पुलिस सीसीटीवी कैमरे के जरिए ऐसे लोगों के संदिग्ध गतिविधि के बारे में जानकारी हासिल कर रही है। तीसरे दिन भी दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का मुआयना किया। पुलिस की एक टीम घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज को खंगालने में जुटी है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि घटना में घायल टेंपो चालक सहित करीब 50 लोगों से पुलिस अब तक पूछताछ कर चुकी है। पुलिस ने टेंपो चालक को शुक्रवार रात पूछताछ के बाद छोड़ दिया है। पूछताछ में शामिल किसी भी शख्स ने आरोपी को देखने का दावा नहीं किया है। ऐसे में पुलिस घटनास्थल के पास से जब्त किए गए सीसीटीवी कैमरे से सप्ताह भर का फुटेज खंगाल रही है।

विजयपुर में हार पर घमासान

➢ सिंधिया खुद नहीं गए या भाजपा ने नहीं बुलाया? इन बयानों से भड़की सियासत

भोपाल,(एजेंसी)। मध्य प्रदेश भाजपा की विजयपुर हार पर घमासान शुरू हो गया है। केंद्रीय मंत्री सिंधिया और भाजपा आमने-सामने आ गए हैं। हार पर मंथन के बीच सिंधिया और भाजपा प्रदेश महामंत्री सबनानी के बयानों से सियासत तेज हो गई है। मध्य प्रदेश में विजयपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा की हार के बाद अब घमासान शुरू होता दिख रहा है। पार्टी के कद्दावर नेता व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और भाजपा प्रदेश महामंत्री भगवानदास सबनानी आमने सामने आ गए हैं। विजयपुर उपचुनाव में प्रचार को लेकर दिए गए सिंधिया के बयान को सबनानी में सिरे से खारिज कर दिया है। ऐसे में हार के

मंथन के बीच भाजपा में इसे लेकर तकरार भी हो सकती है। आइए, सिलसिलेवार तरीके से जानते हैं कि हार के इस घमासान की शुरुआत कैसे हुई, दोनों नेताओं की ओर से क्या बयान दिए गए? विजयपुर की हार से उठे थे सवाल मध्य प्रदेश की विजयपुर सीट पर हुए उपचुनाव के परिणाम बीती 23 नवंबर को सामने आए थे। उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार और वन मंत्री रामनिवास रावत को हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा ने रावत को 7228 वोटों से हरा दिया। यह हार भाजपा के लिए बड़ा झटका थी, क्योंकि सारे प्रयास के बाद भी पार्टी जीत दर्ज नहीं कर पाई थी। इस सीट को जीतने के लिए ही भाजपा ने कांग्रेस विधायक रहे रामनिवास रावत को पार्टी में शामिल किया था। साथ ही उन्हें वन मंत्री का पद भी दिया गया था, इसके बाद भी पार्टी को हार का सामना करना पड़ा।

अलीगढ़ में आठ साल की बच्ची की हार्ट अटैक से मौत

अलीगढ़,(एजेंसी)। अलीगढ़ में आठ साल की बच्ची की घर में बड़े भाई-बहन के साथ खेलते हुए हार्ट अटैक से मौत हो गई। अचानक उसके सीने में दर्द हुआ, इसके बाद बच्ची बेहोश हो गई। डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। छोटे-छोटे बच्चों को भी दिल की बीमारी जकड़ रही है। शनिवार को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में हंसती खिलखिलाती, घर में इधर से उधर दौड़ रही आठ साल की बच्ची दीक्षा (8) की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वह अपने बड़े भाई-बहन के साथ खेल रही थी। अचानक उसके सीने में दर्द उठा और बेहोश हो गई। परिजन उसे लेकर चिकित्सक के पास पहुंचे, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। दीक्षा

अलीगढ़ रोड स्थित लोधी नगर निवासी जीतू राजपूत की बेटी थी और ग्रीन वैली कान्वेंट पब्लिक स्कूल में कक्षा एक में पढ़ती थी। इसी स्कूल में आठवीं कक्षा में उसकी बड़ी बहन मोनिका (15) और सातवीं में उसका भाई समीर (13) भी पढ़ता है।

कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 16.5 रुपये की बढ़ोतरी, लगातार पांचवें महीने बढ़े दाम

नई दिल्ली,(एजेंसी)। महाराष्ट्र और झारखंड में चुनाव खत्म होते ही लोगों को महंगाई की मार लगी है। तेल कंपनियों ने वाणिज्यिक (कमर्शियल) एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमतों में बदलाव कर दिया है। इसके मद्देनजर 19 किलोग्राम वाले वाणिज्यिक एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमत में 16.50 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। बढ़ी हुई कीमतें आज यानी रविवार से ही लागू हो गई हैं। दिल्ली में अब इतने रुपये में मिलेगा कमर्शियल सिलेंडरबढ़ी कीमतों के बाद राजधानी दिल्ली में आज से 19 किलोग्राम वाले कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर खुदरा बिक्री मूल्य 1,818.50 रुपये में मिलेगा। 5 किलोग्राम वाले एफ्टीएल सिलेंडर की कीमतों में भी चार रुपये की बढ़ोतरी की गई है। 14.2 किलोग्राम वाले सिलेंडर की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। वाणिज्यिक एलपीजी की कीमतों में लगातार चौथी मासिक वृद्धि तेल कंपनियों ने वाणिज्यिक एलपीजी की कीमत भी 16.50 रुपये बढ़ाकर 1,818.50 रुपये प्रति 19 किलोग्राम सिलेंडर कर दी। यह वाणिज्यिक एलपीजी की कीमतों में लगातार पांचवी मासिक वृद्धि है। इससे पहले बीते महीने भी 19 किलो के वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की दरों में 62 रुपये की बढ़ोतरी की गई थी। एक अक्टूबर को 48.5 रुपये की बढ़ोतरी से इसकी कीमत 1,740 रुपये हो गई थी। इससे पहले कीमत में एक अगस्त को 6.5 रुपये प्रति सिलेंडर और एक सितंबर को 39 रुपये प्रति सिलेंडर की बढ़ोतरी की गई थी।

मौलाना आजाद इन्स्टीट्यूट आंफ ह्यूमनिटीज,साइंस एंड टेक्नोलॉजी के सभागार में भव्य अभिनन्दन समारोह का किया गया आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। मौलाना आज़ाद इन्स्टीट्यूट ह्यूमनिटीज़ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के सभागार में भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देश के प्रमुख चिकित्सक एवं वैज्ञानिकों को उनके द्वारा अपने अपने क्षेत्र में की गयी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। समारोह का प्रारम्भ जैन धर्म से अनुज जैन सहित हिन्दू मुस्लिम,सिख,ईसाई एवं बौद्ध धर्म के धर्मगुरूओं के द्वारा दीप प्रवलित कर किया गया। इसके बाद सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तों हमारा राष्ट्रीय गीत गाया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि इलाहाबाद हाइकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस ए आर मसूदी ने कहा कि दुनिया में तरक्की के लिए तालीम बहुत आवश्यक है।भगवान ने दुनिया बना दी लेकिन जमीन पर बहुत सारे मजहब पैदा हो गए। दुनिया में आप बहुत सी चीजों को जैसे इंसान के खून का रंग, हवा,पानी,प्रकाश आदि को कभी बदल नहीं सकते।अतिथियों का स्वागत संस्था के सचिव डॉ. अम्मार रिज़वी प्राचार्य डॉ. विभा मिश्रा ने बुके देकर किया।सम्मानित होने वालों में प्रो. अब्बास अली महदी,कुलपति ऐरा विश्वविद्यालय प्रो. सूर्यकान्त त्रिपाठी,विभागाध्यक्ष रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ, प्रो. रवीन्द्र कुमार गर्ग, विभाग अध्यक्ष न्यूरोलॉजी विभाग किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ एवं डॉ. मोहम्मद इक्तेदार हुसैन फारूकी प्रख्यात वैज्ञानिक हैं जिन्होंने वाणिज्यिक और औषधीय महत्व के पादप उत्पादों पर सहरानीय शोध किया है एवं राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ के उप निदेशक रहे हैं, शामिल हैं। इन सभी ने विज्ञान जगत में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। इनकी ख्याति केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है। हाल ही में प्रो. अब्बास अली मेंहदी, प्रो. सूर्यकान्त त्रिपाठी एवं प्रो. रवीन्द्र कुमार गर्ग को स्टैन फोर्ड यूनिवर्सिटी की दुनिया के टॉप दो प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में शामिल किया गया है जो देशवासियों के लिए बहुत ही गौरव एवं सम्मान की बात हैं। मौलाना आज़ाद इन्स्टीट्यूट ऑफ ह्यूमनिटीज़, साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के संस्थापक सचिव मा. डॉ. अम्मार रिज़वी ने सम्मानित किये जाने वाले सभी चिकित्सक एवं वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि मुझे बेहद प्रसन्नता हो रहीहै कि आज हमारे देश में ऐसे भी विद्वान है जिनकी ख्याति न केवल देश में है बल्कि विदेश में भी है। डॉ. रिज़वी ने कहा कि आज ज्ञान की आवश्यकता है। डॉ. अम्मार रिजवी ने एवि सेना पुस्कार प्रोफेसर डॉ. अब्बास अली मेहंदी, प्रोफेसर डॉ. सूर्य कांत त्रिपाठी,प्रो.डॉ. रवींद्र कुमार गर्ग,डॉ.मो. इक्तेदार हुसैन फारूकी ने एवॉर्ड दे कर सम्मानित किया। न्यायमूर्ति ए.आर. मसूदी ने डॉ. अम्मार रिज़वी द्वारा क्षेत्र में शिक्षा के लिए किये जा रहे प्रयासों की सराहना की और कहा मुझे विश्वास है कि इस संस्था को विश्वविद्यालय बनाने में जो उनका प्रयास है वह बेकार नहीं जायेगा। प्रो. ऐनुल हसन ने कहा कि हमारा महमूदाबाद से पुराना रिश्ता है यहां हमारे पिता के बड़े भाई रहा करते थे। मुझे यहां आकर बेहद खुशी हो रही है कि पिछले पन्द्रह वर्षों से यहां मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद का परीक्षा केन्द्र है। उन्होंने कहा कि मेरा पूरा प्रयास होगा कि यहां मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का कैम्पस कॉलेज बन जाये।पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. नसीम जैदी ने डॉ. अम्मार रिज़वी के प्रयासों की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि डॉ. रिज़वी,इस क्षेत्र में विश्व विद्यालय बनाने का जो प्रयास कर रहे हैं उन्हें एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।प्रो. अब्बास अली मेंहदी,प्रो. सूर्यकान्त त्रिपाठी कुमार गर्ग,डॉ. मो. इक्तेदार हुसैन फारूकी ने डॉ. अम्मार रिज़वी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि आज कल ऐसे लोग कम मिलते हैं जो विद्वान और ज्ञान का सम्मान करते हैं। इन सभी ने कहा कि डॉ. रिज़वी का विश्वविद्यालय बनाने का जो प्रयास है उसमें हम सब अपना पूरा पूरा सहयोग करेंगें। अन्त में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. विभा मिश्रा ने सभी का धन्यवाद किया और कहा कि संस्था का शीघ्र ही एक विश्वविद्यालय बन जाये यहीं हम सब की इच्छा है ताकि क्षेत्र के आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार के छात्र-छात्राओं को अपने ही क्षेत्र में उच्च शिक्षा मिल सके।समारोह का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

पुलिस ने छह बारंटियो को पकड़कर भेजा जेल

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता मैनपुरी

कुरावली। पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार के द्वारा चलाये जा रहे वारंटियों के खिलाफ अभियान में क्षेत्राधिकारी चंद्रकेश सिंह के कुशल निर्देशन में थानाध्यक्ष डीएस चौहान के नेतृत्व में कोर्ट से फरार चल रहे छह वारंटी अभियुक्तों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया पूरन पुत्र रणबीर ब अजय पुत्र गुरपाल निवासीगण मिढबली कला भुवनेश अवनीश पप्पू शिवनेश पुत्रगण बेचेलाल निवासीगण नगला गरहू सभी लोगो को घर से पकड़कर जेल भेज दिया है।पकड़ने वाली टीम वरिष्ठ उपनिरीक्षक संजय सिंह उपनिरीक्षक खुशी राम उपनिरीक्षक भगवती सिंह हेड कांस्टेबल देवेंद्र सिंह रजनीश पाल महेंद्र सिंह संजय शर्मा अभिषेक त्यागी

जिलाधिकारी अभिलाष शर्मा ने जमुई मेडिकल कॉलेज का निर्माण कार्य का किया निरीक्षण।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - कन्हैया कुमार सिंह

जमुई पटना। जिला कलेक्टर अभिलाषा शर्मा ने जमुई जिले के खैरा प्रखंड अंतर्गत बेला में 27 एकड़ में 500 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज का निरीक्षण किया। उन्होंने मौके पर कहा कि भवन का निर्माण कार्य तेजी किया जा रहा है। अब तक 25 प्रतिशत कार्य पूरा कर लिया गया है। अक्टूबर 2026 तक निर्माण कार्य पूरा कर लिए जाने की संभावना है। उन्होंने नामित एजेंसी को निर्माण कार्य में और तेजी लाए जाने का निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। डीएम ने बीएमएसआईसीएल के प्रोजेक्ट अभियंता से मौके पर संवाद किया और उनसे निर्माण कार्य की यथोचित जानकारी ली। उन्होंने नामित अभियंता को गुणवत्तापूर्ण तरीके से कार्य करने का निर्देश दिया। डीडीसी सुमित कुमार , एसडीएम अभय कुमार तिवारी , सिविल सर्जन डॉ. नौशाद अहमद , डीपीएम पवन कुमार समेत कई पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

जिलाधिकारी द्वारा किया गया राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय का औचक निरीक्षण।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - कन्हैया कुमार सिंह

जमुई पटना। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अभिलाषा शर्मा ने राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने निरीक्षण के दरम्यान महाविद्यालय के सेमिनार हॉल , कांफ्रेंस हॉल , ऑडिटोरियम , लैब आदि का अवलोकन किया। साथ ही शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक गतिविधियों का जायजा लिया। उन्होंने उपलब्ध सुविधाओं पर संतोष जताते हुए कहा कि इन सबका जरूरत के मुताबिक विस्तार करें। उधर महाविद्यालय के प्राचार्य विमल कुमार ने जिलाधिकारी को कॉलेज से जुड़े विषयों की विस्तार से जानकारी दी और उनसे यहां के कार्यक्रमों में शामिल होने का आग्रह किया। डीडीसी सुमित कुमार , एसडीएम अभय कुमार तिवारी , अभय कुमार तिवारी , बीडीओ अभिनव मिश्रा समेत कई पदाधिकारी , कॉलेज के शिक्षक और कर्मचारीगण मौके पर उपस्थित थे।

डीजीएमएस ने कोयला उत्खनन में सुरक्षा के साथ ब्लास्टिंग करने की जागरूकता फैलाई।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मनोज साहू और डिप्टी डायरेक्टर माइंड सेफ्टी रीजन टू ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ब्लास्टिंग से संबंधित खतरों के बारे में जागरूकता फैलाना था। इसके अलावा, ट्रांसपोर्ट मैगज़ीन में सावधानियाँ और उपयोग के तरीकों पर भी चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में ईजी एरिया के ब्लास्टिंग ऑफिसर, ब्लास्टिंग क्रू मैनेजर एजेंट और क्षेत्र के तीनों जयरामपुर, कुजामा और एनटीएसटी के सभी लोगों ने भाग लिया। लगभग पचास लोगों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया और डीजीएमएस द्वारा दिए गए सुझावों से लाभान्वित हुए। और सभी ने भविष्य में सुरक्षा के साथ उत्खनन कर कोयला उत्पादन करने की ठानी।

विधायक अरूप चटर्जी को सहिया साथी ने किया शम्मानित।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

तिसरा/धनबाद। सहिया साथी एवं प्रशिक्षक संघ के नेतृत्व में जिले के सहिया, सहिया साथी एवं बि टि टि निरसा के माले विधायक अरूप चटर्जी के कार्यालय में जाकर उनको सम्मानित किया एवं विधायक जी से मांग किया कि राज्य सरकार की ओर से जो राशि बढ़ाई गई है उनको जल्द से जल्द भुगतान कराने की मांग किया गया, विधायक अरूप चटर्जी ने जल्द से जल्द एम डी से वार्ता कर दिलाने का आश्वासन दिया। मुख्य रूप से नेतृत्व कर रहे बि टि टि मनोहर आलम संगीता देवी बिपाशा महतो आदि की ओर से बताया गया कि पिछले दिनों सभी का प्रोत्साहन राशि एवं मानदेय में बढ़ोतरी हुई है रांची में लेटर भी आ गया है लेकिन जिला में नहीं आया है इसलिए जल्द से जल्द उस पत्र को मंगाया जाए। विधायक ने रांची जाकर जल्द से जल्द दिलाने की बात कही। सभी लोगों ने मिठाई खिलाई एवं जीत की बधाई दी ।मौके पर नीलेमा पंडित, मधुमति सिंह , रूपा सिंह्रा, रेखा भट्ट , सुनीता देवी, कुर्मी देवी , गुणधार कुंभकार, ममता कुमारी दास, प्रीति कुमारी, सविता कुमारी, रुक्मणी, यमुना मेहता, राखी देवी, बबीता देवी , आशाकेसरी, ममता देवी, प्रियंका सिंह, छवि देवी, गुड़िया देवी , शांति देवी आदि लोग मौजूद थे ।

वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित तेइसवां सामूहिक विवाह आगामी 14 दिसंबर को: अतुल कांत द्विवेदी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित तेइसवां सामूहिक विवाह आगामी14 दिसंबर 2024 दिन शनिवार को स्थानीय घंटाघर(विक्टोरिया भवन) में सम्पन्न होगा। यह जानकारी ट्रस्ट के सचिव अतुलकान्त द्विवेदी ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 51 सामूहिक विवाह व निकाह संम्पन्न होंगे।चूंकिपिछले 3 वर्षो से ट्रस्ट की ट्रस्टी श्रीमती पल्लवी ने नक्सल प्रभावित क्षेत्र में सामूहिक विवाह कराती आ रही है इसलिए इस वर्ष 35 विवाह व निकाह संम्पन्न कराये जाएंगे शेष विवाह पल्लवी द्वारा करवाये जाएंगे।ट्रस्ट के वरिष्ठ ट्रस्टी अरुणेश बाजपेई के द्वारा प्राप्त हुए सभी आवेदन पत्रों का गहनता से परिशीलन करते हुये 35 आवेदन पत्रों को पात्र बताया।कुल आज कुल 25 लोगो को टोकन जारी किये गये। जिन आवेदन पत्रों में आंशिक कमी पाई गई उन लोगो को 5 दिन का समय दिया गया है ताकि वह लोग आवेदन पत्रों की पाई गई कमियों को दूर कर सके। प्रबन्ध न्यासी भुवन चतुर्वेदी वर्चुयली रूप से उपस्थित होकर सभी सहयोगियों का उत्साह वर्धन किया।साक्षात्कार ट्रस्ट के सदस्य अशोक श्रीवास्तव ,श्रवण कुमार राही ,सरिता अग्रवाल आलोकिता श्रीवास्तव, गिरीश मिश्रा, श्रवण दीक्षित ,अनिल मिश्रा द्वारा लिया एवं व्यवस्था न्यासीकरुणा शंकर द्विवेदी व अविनाश चन्द्र गुप्ता द्वारा की गई ट्रस्टी अरुणेश बाजपेई व अतुल कांत द्विवेदी द्वारा जोड़ों व उनके परिजनों को सामूहिक विवाह के नियम एवं कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गई इस मौके पर प्रेम शुक्ला,अरुणा राठौर पवन, कमला शंकर एवं वर पक्ष और वधू पक्ष के परिजन उपस्थित रहे।

शार्ट शर्किट से दुकान में लगी आग से हुआ लाखों का नुकसान कडी मशक्कत के बाद आग पर पाया गया काबू

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की आदर्श नगर पंचायत हरगांव के मुख्य चौराहे पर एक जूता चप्पल की दुकान में देर रात अचानक आग लग गई दुकानदार दुकान बंद कर घर पड़ोस में स्थित घर पहुंचा ही था पड़ोसी दुकान दार ने दुकान मालिक को दुकान में आग लगने की दी। दुकान पर पहुंचे दुकानदार के साथ पड़ोस के लोग दुकान में आग बुझाने की कोशिश करने लगे। घटना मुख्य चौराहे की होने के कारण सूचना पाकर तत्काल मौके पर पहुंच कर फायर ब्रिगेड की गाडी व स्थानीय पुलिस ने कठिन परिश्रम कर आग पर काबू पाया। मिली जानकारी के अनुसार हरगांव थाना क्षेत्र अन्तर्गत हरगांव मुख्य चौराहे पर शनिवार की देर रात जब कमल शू सेंटर के मालिक कमलकांत कटियार रात के लगभग 9-20 पर अपनी दुकान बंदकर पड़ोस में स्थित अपने घर पहुंचे ही थे।तभी पड़ोस के लोगों को अचानक दुकान के अंदर से धुआं निकलता दिखाई दिया। पड़ोसियों ने सूचना दुकान मालिक को दी सूचना पाकर दुकान मालिक अपनी दुकान पर पहुंचे तत्पश्चात दुकानदार कमलकांत ने दुकान का शटर खोला।शटर खुलते ही आग भड़क गई और पूरी दुकान को अपनी चपेट में ले लिया और आग की लपटें तेज हो गई। सूचना पाकर तत्काल मौके पर पहुंची हरगांव पुलिस व फायर ब्रिगेड की टीम ने कडी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। दुकानदार कमलकांत कटियार ने बताया कि इस आग में मेरा लगभग दो लाख का नुकसान हो गया है।संदेह है कि आग शार्ट शर्किट से लगी है।

अमावस्या पर प्राचीन सूर्य कुण्ड तीर्थ में भक्तों ने लगाई डुबकी।

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले के लहरपुर कस्बे के प्रसिद्ध सूर्य कुण्ड मंदिर पर अमावस्या के पावन अवसर पर भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने पवित्र सरोवर में स्नान कर भगवान भोलेनाथ की पूजा अर्चना कर सुख समृद्धि की कामना की। रविवार को अमावस्या के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ मंदिर प्रांगण में उमड़ी और जगह-जगह हवन पूजन कर भण्डारों का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रतिभाग कर प्रसाद ग्रहण किया। मान्यता है कि इस पवित्र सरोवर में रविवार को स्नान करने से मनुष्य सभी रोगों से मुक्त हो जाता है,रविवार को अमावस्या होने पर रोगों से मुक्त होने के लिए भारी संख्या में लोगों ने पवित्र सरोवर में स्नान किया और यथा संभव जरूरतमंदों को दान पुण्य किया। इस अवसर पर मन्दिर प्रांगण में लगाये गए मेले में आए हुए श्रद्धालुओं ने अपनी आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी की और बच्चों ने मेले का आनंद उठाया। सुरक्षा की दृष्टि से मन्दिर परिसर में भारी पुलिस बल तैनात रहा।

हमारी रसोई हमारी जिम्मेदारी थीम के तहत खाना पकाने की प्रतियोगिता आयोजित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। तेल विपणन कंपनियों द्वारा चलाए जा रहे सेंस ऑफ ड्यूटी अभियान के तहत रविवार को सरोजनीनगर के कानपुर रोड स्थित कृष्णा लोक कॉलोनी में %हमारी रसोई हमारी जिम्मेदारी% थीम के तहत खाना पकाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों ने सुरक्षित एलपीजी हैंडलिंग प्रथाओं का पालन करते हुए अपनी पाक कला प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता की प्रथम विजेता ज्योति सिंह, द्वितीय स्थान पर मोनिका सक्सेना व अर्चना सिंह और तीसरे स्थान पर दलजीत कौर रही। इस दौरान एसटीएफ के एएसपी लखनऊ अमित कुमार नागर, एचपीसीएल के नॉर्थ-सेंट्रल जोन जीएम राजकुमार और सेफ यश होटल ओनेंट के पैनल ने एलपीजी सुरक्षा, डिश की गुणवत्ता व प्रस्तुति और स्वच्छता जैसे मानदंडों पर प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया। कार्यक्रम में कीर्ति गैस के प्रबंधक राकेश कुमार सिंह ने बताया कि तेल विपणन कंपनियों द्वारा 5 मार्च 2024 को शुरू किए गए बुनियादी सुरक्षा जांच अभियान का उद्देश्य प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा किए गए घर-घर निरीक्षण के माध्यम से 12 करोड़ से अधिक घरों को कवर करना है। उन्होंने बताया कि एलपीजी प्रतिष्ठानों में किसी भी सुरक्षा खतरे के लिए ग्राहकों के लिए निरीक्षण निशुल्क है और पुरानी रबर ट्यूब या गैर मानक रबर ट्यूब को रियायती मूल्य पर बदला जा रहा है। उन्होंने बताया कि अब तक आठ करोड़ से अधिक घरों का निरीक्षण किया जा चुका है। जिसके परिणाम स्वरुप लगभग 3.5 करोड़ रबर ट्यूब बदली गई है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य पाक कौशल का जश्न मनाते हुए एलजी हैंडलिंग और खाना पकाने में सुरक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। कार्यक्रम के इस मौके पर इंडियन ऑयल के अमित कुमार सिंह, भारत पेट्रोलियम के दिग्विजय, एचपीसीएल के वैभव कुमार सिंह, सुनील पालीवाल और कीर्ति गैस के राजेंद्र सिंह सहित तमाम अन्य लोग मौजूद रहे।

पूर्वजों की पुण्यतिथि पर कम्बल वितरण कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले के रेउसा क्षेत्र के चंद्रसेनी में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्मृतिशेष शंकर बक्स सिंह व कमला देवी के प्रपौत्र कुँवर रुद्रप्रताप सिंह पुत्र शरद सिंह (मोनू भैय्या) व देवेंद्र प्रताप सिंह के अथक प्रयासों से बुजुर्ग पुरुष व महिलाओं को करीब तीन सौ छियानबे कम्बलों का वितरण कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर देवेन्द्र प्रताप सिंह,सुरेश प्रताप सिंह,नवनीत सिंह(तानू), राजीव प्रताप सिंह,सोनूसिंह ज्ञानू सिंह,अभय प्रताप सिंह अखिल प्रताप सिंह,पत्रकार राकेश कुमार नंद,पंकज अवस्थी,अजीत मौर्य, शिव कुमार सिंह,आदि सैकड़ो लोग मौजूद रहे। कम्बल वितरण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर आर एस एस के सह जिला प्रचारक बिसवां अजय भाई,विभाग सेवा प्रमुख मिथलेश भाई,वरिष्ठ समाज सेवी दीपक शुक्ला,नगर सम्पर्क प्रमुख बिसवां विशाल गुप्ता,खण्ड संपर्क प्रमुख बिसवां अभिषेक मिश्रा,रेउसा ब्लाक सद्भावना प्रमुख राज प्रताप सिंह,आदि लोगों की उपस्थिति रही।

कामरूप जिले में 3 दिसंबर से 5 स्वास्थ्य सेवा महोत्सव

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

असम। स्वास्थ्य क्षेत्र को और बेहतर बनाने और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में और सुधार करने के लिए, स्वास्थ्य सेवा महोत्सव 3.0 पूरे राज्य के साथ-साथ कामरूप जिले में 3 दिसंबर से 5 दिसंबर तक मनाया जाएगा। स्वास्थ्य सेवा महोत्सव असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की विशेष पहल है। जिसको सुचारू अनुपालन किया जा रहा है या नहीं, इसकी निगरानी के लिए राज्य और जिला स्तर पर विभिन्न समितियों का गठन किया गया है। राज्य के अन्य हिस्सों की तरह कामरूप जिले के कुल 82 अस्पतालों में यह उत्सव मनाया जाएगा। कामरूप में इस वर्ष के स्वास्थ्य सेवा महोत्सव में 1 राज्य अस्पताल (तोलाराम बाफना कामरूप जिला नागरिक अस्पताल), 1 उप-मंडल राज्य अस्पताल, एफआरयू सहित 14 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, 61 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और 5 आयुष्मान आरोग्य मंदिर शामिल किए गए हैं। प्रत्येक अस्पताल या केंद्र की निगरानी दो पर्यवेक्षकों द्वारा की जाएगी। इनमें से एक दूसरे विभाग का अधिकारी होगा और दूसरा उसके साथ गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज का पीजीटी छात्र होगा। इसके अलावा, राज्य सरकार द्वारा नियुक्त उच्च पदस्थ प्रशासनिक अधिकारी भी स्वास्थ्य सेवा महोत्सव का आकलन करेंगे। इसके अलावा राज्य सरकार के मंत्री और विधायक भी स्वास्थ्य सेवा महोत्सव में पर्यवेक्षक के रूप में भाग लेंगे। स्वास्थ्य सेवा महोत्सव 3.0 के तहत निगरानी डेटा पोर्टल के माध्यम से अपलोड की जाएगी। कामरूप जिले के संयुक्त स्वास्थ्य निदेशक डॉ. महितोष बनर्जी ने लोगों की स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के लिए सरकार द्वारा शुरू किए गए स्वास्थ्य सेवा महोत्सव 3.0 के कार्यक्रम में सभी लोगों और पत्रकार मित्रों का सहयोग मांगा है ।

लखनऊ हीरोज ने जीता कृष्ण साईं 100 बॉल दिव्यांग प्रीमियर लीग का पहला मैच

● मैन ऑफ द मैच अक्षांश चौधरी का शानदार प्रदर्शन 5 विकेट उखाड़े

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सीएसडी सहारा क्रिकेट अकादमी लखनऊ के मैदान पर आयोजित कृष्णा साईं हंड्रेड बॉल दिव्यांग क्रिकेट प्रीमियर लीग का आज पहला मैच लखनऊ हीरोज एवं मेरठ फाइटर के बीच खेला गया जिसमें लखनऊ हैरिस ने मेरठ फाइटर को 10 विकेट से एक तरफा हराकर शानदार जीत हासिल की। इससे पूर्व लखनऊ हीरोज के कप्तान नफीस सिद्दीकी ने टॉस जीता और पहले क्षेत्ररक्षण करने का फैसला लिया नफीस का फैसला शानदार रहा। गेंदबाजों ने नफीस के फैसले को भरपूर सहयोग दिया और मेरठ फाइटर की पूरी टीम 61 रन पर आउट हो गई। इसमें कैलाश प्रसाद ने 12 और कपिल कुमार ने 11 रन का योगदान दिया। लखनऊ हीरोज की ओर से अक्षांश चौधरी ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 5 विकेट अक्षांश के अलावा महताब अली भी चार विकेट लेने में सफल रहे एक विकेट तनवीर को मिला जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी लखनऊ की टीम के बल्लेबाजों ने अपने खतरनाक इरादे पहली गेंद से ही बता दिए और मैच को पांच ओवर में ही जीत लिया। इसमें पिंटू यादव के चार छक्के और पांच चौकों की मदद से नॉट आउट 48 रन का शानदार योगदान रहा। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार सीएसडी सहारा क्रिकेट अकादमी के सीओओ फैसल अल्वी द्वारा अक्षांश चौधरी को दिया गया। इसके अतिरिक्त कैलाश क्रिकेट अकादमी द्वारा मैन ऑफ़ द मैच पुरस्कार की राशि प्रदान करी गई। इससे पूर्व टूर्नामेंट का उद्घाटन रिटायर्ड आईएएस अधिकारी अनीश अंसारी द्वारा गेंद खेलकर किया गया। कल पहला मैच मेरठ फाइटर और गोरखपुर टाइगर्स के बीच प्रातः 9-00 बजे से प्रारंभ होगा, दूसरा मैच दोपहर 1-00 बजे से लखनऊ हीरोज एवं गोरखपुर टाइगर्स के बीच खेला जाएगा। इस अवसर पर दिव्यांग क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड आफ इंडिया के जनरल सेक्रेटरी हारून रशीद मुख चयनकर्ता आशीष कुमार श्रीवास्तव मलखान यादव की आदि उपस्थित थे।

कार्तिक मेला महोत्सव में हुए मुशायरे में शायरों ने बांधा समां

➢ मेंहदी से नाम लिखती थी हाथ पे जिसका,वो नाम मिट गया है मेरी बेखुदी के साथ शामली सफीक

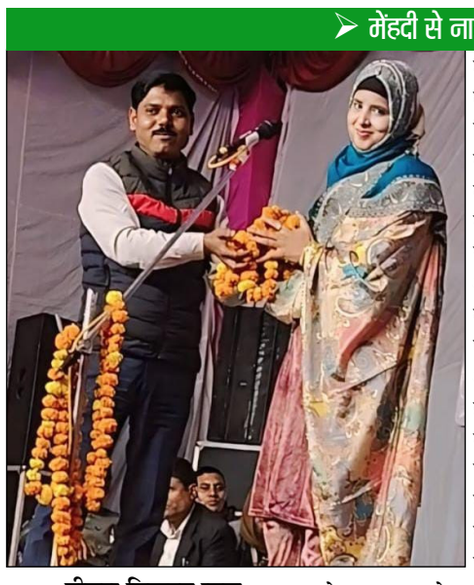

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की आदर्श नगर पंचायत हरगांव के प्राचीन सूर्य कुण्ड तीर्थ पर विराजमान भगवान गौरी शंकर भोलेनाथ के सानिध्य में चल रहे कार्तिक मेला महोत्सव में रंगमंच पर हुए मुशायरे में नामचीन शायरों ने भाग लेकर समां बांध दिया।श्रोतागण रात भर मुशायरे का आनंद लेते रहे। मिली जानकारी के अनुसार जिले की हरगांव नगर पंचायत क्षेत्र अन्तर्गत कस्बा हरगांव में चल रहे कार्तिक पूर्णिमा मेला महोत्सव के रामलीला रंगमंच पर शुक्रवार की देर रात मुशायरे का आयोजन किया गया।जिसमें नामचीन शायरों के साथ क्षेत्रीय शायरों ने भाग लिया।शायरे की निजामत शायर इलियास चिश्ती लखीमपुरी ने की। मुशायरे में पधारी सायरा शामली सफीक महमूदा बादी का इस्तकबाल नगर पंचायत हरगांव के सभासद शोएब खां अनीश असलम खां अजमुद्दीन व हारून ने पुष्पगुच्छ देकर किया।अपने शायरी में शामली सफीक ने पढा कि आना अगर दिल में तो आओ खुशी के साथ, करते हो क्या मजाक मेरी जिंदगी के साथ। जो करना मोहब्बत तो कदम रोकना नहीं, दुनिया ठहर गई है दिले आशिकी के साथ मेंहदी से नाम लिखती थी मै हाथ पे जिसका,वो नाम मिट गया मेरी बेखुदी के साथ । डॉक्टर बिलाल फैजान जो नफरतों के अंधेरों को दफन कर देगा चिराग ऐसा मोहब्बत का जलने वाला है मुशायरा देररात तक चलता रहा।शायरों ने अपनी शायरी के द्वारा काफी देर रात तक श्रोतागणों को गुदगुदाया। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष गफ्फार खां,सभासद शोएब खां, मंसूर अली,मो.सलीम,मो. अनीस,पूर्व सभासद लतीफ कुरैशी,दानिश नकवी, शहादत अली,लालू शेख, वहाब खां,डा आरिफ मुकेश राय,अहिबरन लाल, दीपक कुमार,मोनू गुप्ता, श्रेयांस श्रीवास्तव सहित भारी संख्या में श्रोतागण मौजूद रहे।

पेड़ से टकराया बाईक, बाईक सवार गंभीर रूप से घायल

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। भेलाताड़ हिंदुस्तान प्रेस के पास एक बाईक अनियत्रित होकर के पेड़ से टकराया बाईक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया, घटना स्थल के निकट काफ़ी भीड़ रहने का बाद भी किसी ने भी घायल युवक को नहीं उठाया, फिर ह्यूमैनिटी हेल्पिंग हैंड्स टीम के संस्थापक सह अध्यक्ष गौतम कुमार मंडल को टेलीफ़ोनिक सूचना मिलने पर तत्काल पहुँचे और अपने निजी कार से घायल युवक को snmmch के आपातकालीन वार्ड में ले जाकर भर्ती कराया। युवक का हालत बहुत नाजुक है। मोकें पर रणजीत मंडल ने साथ दिया घायल को ले जाने में। 22 वर्षीय युवक बलराम हाजरा पिता घोलटू हाजरा बोकारो जिले के चंदन कियारी, रतनपुरा गाँव का रहने वाला है , वो भेलाताड़ अपने ससुराल में आया हुआ था। झारखंड राज्य सरकार के स्वास्थ्य॥ अस्पताल में दवा और इंजेक्शन भी नहीं है और नाही किसी तरह का कोई इमरजेंसी दवा उपलब्ध है , और नहीं यहां के कर्मचारी मरीज पर उचित ध्यान दे रहे है । अस्पताल का पूरा सिस्टम लचर हो गया है। भगवान भरोसे चल रहा है जिले सबसे सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल।

नारायण सेवा संस्थान के नि:शुल्क शिविर में 690 दिव्यांगों का जीवन हुआ सार्थक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। नारायण सेवा संस्थान का नारायण लिम्ब एवं कैलिपर्स फिटमेंट शिविर दयाल गेटवे होटल, किसान बाज़ार में आयोजित हुआ। शिविर में लखनऊ के 690 से ज्यादा दिव्यांगों को अपर-लोवर व मल्टीपल कृत्रिम अंग और केलिपर्स लगाए गए। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह और महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने शिरकत की। मुख्य अतिथि परिवहन मंत्री ने कहा नारायण सेवा संस्थान दिव्यांगों को सशक्त ही नहीं कर रहा बल्कि उनके जीवन को सुगम और सार्थक बना रहा है। यह समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान है। यह देश- दुनिया को सुखी और स्वस्थ बनाने के लिए विश्व एक परिवार के भाव को मजबूत करने वाला है। ऐसे ईश्वरीय कार्य को देख उन्होंने बलिया जनपद में शिविर की घोषणा की तथा संस्थान को हर तरह से मदद का भरोसा दिया। साथ ही संस्थान के संस्थापक कैलाश मानव व अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल के सेवा भावना और वर्षों की सेवा साधना की प्रशंसा की। वहीं शिविर की अध्यक्षता कर रही उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने दिव्यांगों को संबोधित करते हुए उन्होंने शिविर से लाभावित होकर अपने पैरों पर चलते हुए नई जिंदगी शुरू करने वाले भाई बहिनों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने दिव्यांगों के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता की प्रशंसा करते हुए दिव्यांगों के लिए लखनऊ में पुनर्भव्य शिविर करने का आग्रह करते हुए व्यक्तिगत योगदान देने का आश्वासन दिया। शिविर दीप प्रवलन के साथ शुरू हुआ। विशिष्ट अतिथि प्रतिभा श्रीवास्तव, ओमप्रकाश गुप्ता व मीरा देवी ने भी संस्थान के भव्य मानव यज्ञ के लिए आभार प्रकट कप्रारं अनुदान दिया। प्रारंभ में नारायण सेवा संस्थान के ट्रस्टी एवं निदेशक देवेंद्र चौबीसा और निदेशक मीडिया व जनसंपर्क भगवान प्रसाद गौड़ ने मंचासीन अतिथियों का मेवाड़ी परम्परा से स्वागत किया। ट्रस्टी चौबीसा ने संस्थान की सेवाओं से रूबरू कराया। संस्थान का 2025 का संकल्प पत्र भी प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा दिव्यांगजनों को उनके घरों के पास ही मदद पहुँचाने के लिए 28 जुलाई को लखनऊ में कैंप लगाया था। जिसमें 1250 से ज्यादा रोगी आये उनमें से 690 दिव्यांगों को नारायण लिंब व केलिपर्स के लिए चयनित किया। जिन्हें आज आप सब के सामने नई जिंदगी का उपहार मिल रहा है। समारोह में कृत्रिम अंग पहनकर दिव्यांगों ने परेड की और फुटबॉल और बेडमिंटन भी खेला। इन दिव्यांगों को संस्थान डॉक्टर्स ने चलने की ट्रेनिंग देने के साथ लिम्ब के रखरखाव की जानकारी भी दी। संस्थान ट्रस्टी चौबीसा ने शिविर की रिपोर्ट बताते हुए कहा आज एक ही दिन में एक ही छत के नीचे 690 से ज्यादा दिव्यांग नारायण लिम्ब पहनकर घरों को विदा हुए। जो वर्षों पहले किसी दुर्घटना में ये सभी अपने हाथ -पैर गंवाने से चलने -फिरने में असमर्थ हो चुके थे। जिसके चलते इनकी जिंदगी रुक सी गई थी। आज 171 लोवर लिंब, 131 अपर लिंब, 90 मल्टिपल लिंब और 270 केलिपर्स लगाए गए। संस्थान की 80 जन टीम ने सेवाएं दी। शिविर प्रभारी एवं संयोजक हरिप्रसाद लड्ढा और बद्री लाल शर्मा ने अतिथियों का धन्यवाद अर्पित किया। नारायण सेवा संस्थान 1985 से नर सेवा-नारायण सेवा की भावना से काम कर रहा है। संस्थापक कैलाश मानव को राष्ट्रपति महोदय ने मानव सेवा के लिए पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा है। संस्थान के अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल दिव्यांगों के लिए मेडिकल, शिक्षा, कौशल विकास और खेल अकादमी के माध्यम से मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक दृष्टि से मजबूत कर लाखों दिव्यांगों को समाज की मुख्यधारा में ला चुके है। वर्ष 2023 में अग्रवाल को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। संस्थान अब तक 48722 से अधिक नारायण लिम्ब लगा चुका है। संस्थान अब उत्तर प्रदेश के दिव्यांगों को निःशुल्क नारायण लिम्ब प्रदान कर उनकी रुकी जिन्दगी को फिर से शुरू करने के लिए बड़े स्तर पर काम करेगा।

पैग़ाम 2024 नुक्कड़ नाटक श्रृंखला का सफलतापूर्वक समापन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लोहिया पार्क एमपी थिएटर में हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य समाज में आत्महत्या जैसे गंभीर मुद्दों पर जागरूकता फैलाना और जिंदगी की अहमियत को रेखांकित करना था। इस वर्ष की थीम थी जिंदगी में जिंदगी से ज्यादा जरूरी कुछ भी नहीं है। युवाओं ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आत्महत्या के कारणों और रोकथाम पर गहराई से प्रकाश डाला। प्रतिभागी संस्थान-प्रतियोगिता में लखनऊ के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के 400 से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया। प्री-राउंड में चुनी गई 10 टीमों को प्रसिद्ध बॉलीवुड कलाकार वरुण टमटा और आनंद अस्वाल ने प्रशिक्षण दिया।पहला स्थान- एलपीसीपीएस दूसरा स्थान- सिटी लॉ कॉलेजतीसरा स्थान- आईटी गर्ल्स कॉलेज1090 महिला हेल्पलाइन की महिलाओं और नेशनल एसोसिएशन ऑफ ब्लाइंड (एनएबी) के दृष्टिबाधित बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को विशेष बनाया। डायल 112 की टीम को आत्महत्या रोकथाम के प्रयासों के लिए कमल मिश्रा सम्मान से सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में न्यायमूर्ति राजेश सिंह चौहान, जसप्रीत सिंह और ब्रिजराज सिंह समेत कई अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। विकास बाबू फोटोग्राफी, अस्तित्व फाउंडेशन, मोटिवेजर्स क्लब, शिरोज़ हैंगआउट, और गो ग्रीन सेव अर्थ फाउंडेशन जैसे संगठनों ने कार्यक्रम को समर्थन दिया। वी यंगस्टर्स फाउंडेशन पिछले 10 वर्षों से सामाजिक कुरीतियों पर जागरूकता फैलाने और युवाओं को मंच प्रदान करने का काम कर रही है। पैग़ाम जैसी श्रृंखलाओं के माध्यम से यह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास जारी रखे हुए है।

एसकेडी एकेडमी ने धूमधाम से मनाया वार्षिक खेल और सांस्कृतिक उत्सव 2024

➪ खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 55 छात्रों को किया गया सम्मानित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। एसकेडी एकेडमी ने रविवार को इकाना स्टेडियम के फुटबाल ग्राउंड में अपना वार्षिक खेल और सांस्कृतिक उत्सव 2024 धूमधाम से मनाया। इस दौरान एकेडमी की सभी शाखाओं के बच्चों ने तरह-तरह के कार्यक्रम पेश किए। इसके अलावा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ। इस मौके पर संस्थान के निदेशक मनीष सिंह ने इसे छात्रों के लिए अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण मंच बताया। उन्होंने देश को गौरवान्वित करने वाले प्रसिद्ध एथलीटों की उपस्थिति को छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। निदेशक ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम भविष्य के चैंपियंस बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना और दीप प्रज्जवलन के साथ हुई। समारोह में मुख्य अतिथि जल शक्ति और बाढ़ नियंत्रण मंत्री स्वतंत्र देव सिंह शामिल हुए। इसके अलावा विधायक, सरोजनी नगर डॉ. राजेश्वर सिंह, एमएलसी और पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह सहित खेल हस्तियों में अर्जुन पुरस्कार विजेता रणवीर सिंह, तनूश्री पांडेय, रजत पदक विजेता, विश्व सॉफ्ट टेनिस चैंपियनशिप, राम सिंह यादव, ओलंपियन, डॉ. नीरज जैन, सॉफ्टबॉल अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी और सुमित सांगवान, बॉक्सिंग ओलंपियन शामिल हुए। समारोह के दौरान खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 55 छात्रों को सम्मानित किया गया। वहीं विक्रांत खड शाखा की छात्राओं द्वारा बटर प्लाई रेस का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नंदिनी यादव ने पहला, शिवानी झा ने दूसरा और प्रिया वर्मा ने शीर्ष तीन में जगह बनाई।

इफको के एमडी डॉ. उदय शंकर अवस्थी को रोशडेल पायनियर्स अवार्ड

➲ सहकारिता के क्षेत्र में भारत का गौरव बढ़ा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइज़र कोऑपरेटिव लिमिटेड (इफको) के प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी को प्रतिष्ठित रोशडेल पायनियर्स अवार्ड 2024 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है और सहकारी क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है। किसानों के लिए नई क्रांति डॉ. अवस्थी के नेतृत्व में इफको ने नैनो उर्वरकों जैसे नवाचारों के माध्यम से भारतीय कृषि में क्रांति लाने का काम किया है। इन नैनो उर्वरकों ने न केवल फसलों की उपज बढ़ाई है बल्कि मिट्टी की सेहत को भी बेहतर बनाया है। भारत का गौरव बढ़ा यह पुरस्कार भारत के सहकारी आंदोलन के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। डॉ. अवस्थी के नेतृत्व में इफको ने न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में किसानों के जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उ-प्र सीमेंट व्यापार संघ के पदाधिकारियों की अहम बैठक संपन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। उ प्र सीमेंट व्यापार संघ के पदाधिकारियों की बैठक अयोध्या रोड स्थित इंदिरा नगर निकट भूतनाथ पर संरक्षक नरेश जैन के कार्यालय पर शनिवार के साथ रविवार तक हुई और लखनऊ ईकाई के पुनर्गठन पर चुनाव अधिकारी एवं वर्तमान अध्यक्ष दीपक सिंहल जी द्वारा विभिन्न पदों पर प्राप्त नाम रखे गए तथा किसी भी पद पर कोई दूसरा नाम नहीं होने से सभी की सहमति से निर्विरोध घोषणा के लिए प्रदेश अध्यक्ष श्याममूर्ति गुप्ता से आग्रह किया जिस पर लखनऊ ईकाई के अध्यक्ष पद पर अभिषेक मंसानी (गुड्डू भैया), वरिष्ठ महामंत्री पद पर जिम्मी अग्रवाल, कोषाध्यक्ष पद पर निर्मल कुमार गुप्ता जी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर अर्पित जैन एवं अन्य पदों के लिए सक्रिय सदस्यों में आकाश हूजा, अंकुर जैन, आयुष मूर्ति गुप्ता, महेंद्र गोयल, अमित गुप्ता, मनीष अग्रवाल, भास्कर गुप्ता, शशि प्रताप जायसवाल, सुयश मोदी, शैलेन्द्र सिंह, धन्नजय गिरी, कमल अग्रवाल, सार्थक जैन, मुदद्सर नजर निर्विरोध निर्वाचित घोषित हुए। रविवार को बैठक में कुछ और नाम आने की संभावना चलते प्रदेश कार्य वाहक अध्यक्ष अनिल जैन ने इस पर पुन: रविवार को बैठक जारी रखने का प्रस्ताव रखा जिसे सभी ने माना। प्रदेश अध्यक्ष श्याममूर्ति गुप्ता सहित सभी ने लखनऊ ईकाई के सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी। नयी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का दीपक सिंहल जी ने माला पहनाकर अभिनन्दन किया और आगे हमेशा साथ रहने का विश्वास दिलाया तथा अपना त्यागपत्र प्रदेश वरिष्ठ महामंत्री मनीष मोदी जी को दिया। प्रदेश वरिष्ठ महामंत्री मनीष मोदी जी ने इसी दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में शपथग्रहण समारोह आयोजित करके विधिवत नयी कार्यकारिणी को दायित्व प्रदान करने की घोषणा करी जिससे नये कलेंडर वर्ष के साथ ईकाई अपना संगठन विस्तार के साथ सीमेंट व्यापार की समस्याओं पर ध्यान दे सकेगी और जब तक दीपक सिंहल जी से अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालते रहने का आग्रह किया। नव निर्वाचित अध्यक्ष गुड्डू भैया ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए सभी को विश्वास दिलाया कि पूरी जिम्मेदारी से अपना दायित्व निभायेंगे और पूर्व अध्यक्ष दीपक सिंहल जी को और प्रदेश अध्यक्ष जी को धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त जानकारी आज उत्तर प्रदेश सीमेंट व्यापार संघ के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनोज सिंह एवं प्रवीण खंडेलवाल ने उपलब्ध कराई ।

समाचार

सुरक्षा के साथ कोयला उत्पादन बढ़ाने हेतु हुई बैठक।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

तिसरा/धनबाद। रविवार को कुइया विभागीय पैच में सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए विभागीय कोयला उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में क्षेत्रीय महाप्रबंधक ए. के. सिन्हा, परियोजना पदाधिकारी डी. के. सिंह, प्रबंधक सी. एस. सिंह, अन्य अधिकारी , जनरल शिफ्ट के सभी ओवरमैन और माइनिंग सरदार उपस्थित थे। बैठक के दौरान सभी ने विभागीय उत्पादन बढ़ाने के विभिन्न उपायों पर अपने विचार साझा किए। क्षेत्रीय महाप्रबंधक ए. के. सिन्हा ने आश्वस्त किया कि उत्पादन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक संसाधन और हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने सभी को बीसीसीएल की समग्र प्रगति के लिए हमारे सीएमडी और अन्य निदेशकों द्वारा उठाए गए दूरदर्शी कदमों के बारे में भी जानकारी दी एवं सभी को कोयला उत्पादन के निर्धारित टारगेट को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया ह

क्रिएटिव कॉन्वेंट कॉलेज में वार्षिक उत्सव (कारवां) कार्यक्रम का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजिनीनगर। शान्ति नगर स्थित क्रिएटिव कॉन्वेंट कॉलेज में वार्षिक उत्सव कारवां एवं मेधावियों के बीच पुरस्कार वितरण समारोह बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर चेयर मैन इ. योगेंद्र सचान एवं उनकी माता जी और आये हुए अथितियों अरुण कुमार सिन्हा सेवानिवृत्त आईएएस, डॉ. राजेश प्रजापति (आईएएस), डॉ. श्रेया प्रजापति, बी.आर. वर्मा सेवानिवृत्त डी.आई.जी., आर एल निरंजन सेवानिवृत्त डिप्टी एस.पी., मुनीश गंगवार (सेवानिवृत्त सी जी एम् नाबार्ड) ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया उन्होंने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया और स्वयं के भविष्य को बदलने के लिए कर सकते हैं। छात्र छात्राएं अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करें। यदि अपने चुने हुए लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पण, अनुशासन और पूरे दिल से करेंगे तो निश्चित ही लक्ष्य में सफलता जरूर मिलेगी। इस अवसर पर डॉ. राजेश प्रजापति (आईएएस) ने छात्रों का उत्साह वर्धन करते हुए बताया कि शिक्षा जीवन को कई तरीकों से बदल देती है यह व्यक्ति के ज्ञान, समझ और अनुभव को विस्तारित करती है। कॉलेज के चेयर मैन इ. योगेंद्र सचान मेधावियों को प्रेरित करते हुए कहा कि छात्रों के लिए अपने गहन और सफल करियर बनाने के समय अर्जित ज्ञान, कौशल और योग्यता का पूरा उपयोग करना आवश्यक है। विपरीत परिस्थितियों में भी छात्रों को कभी निराश नहीं होना चाहिए। इस मौके पर बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियां दी। कॉलेज की निर्देशिका ऋषिका सचान आए हुए अतिथियों को धन्यवाद दिया। विद्यालय परिवार के अध्यापक एवं उनके अभिभावकों ने कार्यक्रम के दौरान बच्चों का उत्साह वर्धन किया।

दबंगों द्वारा पीट पीट कर लहूलुहान किया रिर्पोट दर्ज

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता लखनऊ

बंथरा। बंथरा थाना क्षेत्र के बीबीपुर में रहने वाली मनोलक्ष्मी चौरसिया ने खटोला गांव के विशाल गौतम, विवेक लोधी, मंगल लोधी, जतिन लोधी, उदयवीर गौतम और कल्लू लोधी व 10 अज्ञात लोगों के खिलाफ बेटे को मारपीट कर लहूलुहान करने की रिर्पोट दर्ज कराई है। मनोलक्ष्मी के मुताबिक उसका बेटा हर्ष चौरसिया अपने रिश्तेदार के बेटे और दोस्त दीपक चौरसिया के साथ बंथरा के ही खटोला गांव में शुक्रवार शाम शांति पूजा में शामिल होने गया था। आरोप है कि वहां से शाम करीब 4:30 बजे वापस घर आते समय खटोला गांव के विशाल गौतम, विवेक लोधी, मंगल लोधी, जतिन लोधी, उदयवीर गौतम और कल्लू लोधी ने अपने करीब 10 अज्ञात साथियों के साथ भागू खेड़ा चौराहे के पास उसे रोककर गाली गलौज करने लगा। पूछने पर आरोपियों ने हर्ष को घेर कर उसके ऊपर लोहे की रॉड से हमला कर दिया। जिससे हर्ष की नाक की हड्डी और दांत टूटने के साथ सिर फट गया। इसके अलावा शरीर के अन्य हिस्सों में भी कई जगह चोटें आई हैं। वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। लेकिन इसके बावजूद सभी आरोपी उसे मारते रहे। हर्ष के साथी सौरभ, अमन और अंशुल ने किसी तरह बीच बचाव करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें भी आरोपियों ने पीट दिया। बाद में स्थानीय लोगों और राहगीरों के इकट्ठा होने पर आरोपी उसे मरणासन अवस्था में छोड़कर वहां से भाग निकले। दोस्तों और राहगीरों की मदद से उसे पास के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उसका इलाज जारी है। वहीं बंथरा पुलिस मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई कर रही है।

फैक्ट्री के अंदर खड़ा ट्रक हुआ चोरी

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता लखनऊ

बंथरा। बीते दिनों फैक्ट्री के अंदर खड़ी ट्रक संदिग्ध परिस्थितियों में चोरी हो गई। ट्रक मालिक ने बंथरा थाने में मामला दर्ज कराया है। एलडीए कॉलोनी, कानपुर रोड स्थित रॉयल ट्रेडर्स के बीरू प्रसाद चौरसिया के मुताबिक 21 नवंबर को उनकी गाड़ी का ड्राइवर छुट्टी लेकर बंथरा के खसरवारा स्थित नारायण पाईप फैक्ट्री में उनकी ट्रक (यूपी 32 एचएन 8821) खड़ी कर अपने घर चला गया। बीरू का कहना है कि 25 नवंबर को सुबह उन्हें फैक्ट्री कर्मी द्वारा सूचना मिली कि फैक्ट्री के गेट का ताला तोड़कर उनकी ट्रक चोरी हो गई। सूचना मिलने के बाद बीरू फैक्टरी पहुंचे और पुलिस कंट्रोल रूम 112 पर इसकी सूचना दी। इसके बाद काफी खोजबीन करने पर भी गाड़ी नहीं मिली। फिलहाल बंथरा पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आसपास सीसीटीवी कैमरों के जरिए चोरों का सुराग लगा रही है।

महिला ने एसी मैकेनिक सहित दो अन्य साथियों पर गुमटी में आग लगाने का लगाया आरोप

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। 4 दिनों पहले लोहे की गुमटी में लगी आग मामले में पीड़ित दुकान मालिक महिला ने एक एसी मैकेनिक सहित उसके दो अन्य साथियों के ऊपर आग लगाने का आरोप लगाया है। पुलिस तहरीर लेकर मामले की जांच कर रही है। मालूम हो कि बीती 27 नवंबर की रात करीब 1 बजे सरोजनीनगर के न्यू गुड़ैरा चौराहा, मानसरोवर योजना स्थित एक लोहे की गुमटी में संदिग्ध परिस्थितियों में आग लग गई थी। इस मामले में थाना क्षेत्र के चिल्लावां निवासी दलित महिला कंचन गौतम ने कहा है कि उसकी पान की गुमटी में बर्तन, सिलाई का सामान, पूजा भंडार का सामान, मोबाइल रिपेयरिंग का सामान, लैपटॉप, सीसीटीवी कैमरा और इनवर्टर आदि रखा था। कहना है कि 26 नवंबर को एक एसी मैकेनिक और उसके दो अन्य साथी अपराह्न करीब 2 बजे उसके पास आए।

इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी ने दिया मददगार का मंच संकल्प से बदलाव ब्रज की रसोई ने समाज को किया प्रेरित

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी द्वारा शुरू की गई ब्रज की रसोई जरूरतमंदों को निःशुल्क पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर समाज में नई उम्मीद जगा रही है। यह पहल बेसहारा, अकिंचन, निराश्रित बच्चों, बुजुर्गों और असहाय लोगों को राहत पहुंचाने के साथ ही उनकी जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला रही है। संस्था के संस्थापक विपिन शर्मा ने बताया कि हम सैकड़ों लोगों तक भोजन पहुंचा रहे हैं। हमारा लक्ष्य इस पहल को और अधिक विस्तारित करना है। ब्रज की रसोई में चावल, दाल, पूड़ी, सब्जी जैसे पौष्टिक और संतुलित भोजन तैयार किए जाते हैं। संस्था के वरिष्ठ सदस्य पंकज राय ने कहा भोजन वितरण के लिए आशियाना के चिन्हित इलाकों में कैंप लगाए जाते हैं, ताकि वास्तविक जरूरतमंदों तक भोजन पहुंच सके। वहीं देवांश रस्तोगी ने बताया इस पहल में धन, अनाज और संसाधनों का दान देकर दानदाता सहयोग कर रहे हैं। इसके अलावा, स्वयंसेवक भोजन पकाने और वितरण में भी अपना समय दे रहे हैं। संस्था के सदस्य अश्वनी मिश्रा ने कहा लखनऊ के स्थानीय लोगों का मानना है कि यह पहल समाज में करुणा और सहयोग की भावना को मजबूत कर रही है। संस्था की राष्ट्रीय महिलाध्यक्ष रजनी शुक्ला ने कहा, हमारी कोशिश है कि कोई भी भूखा न सोए। इसके लिए हम संसाधन जुटाने और इसे बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। सामाजिक कार्यकर्ता भूपेंद्र कौल ने बताया जो लोग इस पहल से जुड़ना चाहते हैं, वे धन, खाद्य सामग्री या श्रम के रूप में योगदान कर सकते हैं। इस पहल का उद्देश्य सिर्फ भोजन उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि समाज में सेवा और सद्भाव की भावना को बढ़ावा देना है। संस्था के सक्रिय सदस्य संजय सिंह ने कहा ब्रज की रसोई यह संदेश देती है कि छोटे-छोटे प्रयास भी समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। यह पहल न केवल जरूरतमंदों की भूख मिटा रही है, बल्कि करुणा और सहयोग की मिसाल भी पेश कर रही है। सक्रिय सदस्य संजय श्रीवास्तव ने बताया कि भोजन का वितरण रतन खण्ड पानी टंकी के पास की झुग्गियों और निर्माणाधीन विद्यालय के मजदूरों और उनके परिवारों व जोन 8 के सामने जुग्गी झोपड़ियो में किया गया, जिसमें लगभग 870 लोगों को निःशुल्क पौष्टिक भोजन वितरित किया गया। आज के कार्यक्रम में शामिल पंकज राय, देवांश रस्तोगी, संजय श्रीवास्तव, मुकेश कनौजिया, संजय सिंह, भूपेंद्र कौल, अश्वनी मिश्रा, मनोहर सिंह, दिव्यांशु, निशांक, रंजीत कश्यप, रजनी शुक्ला सहित सभी समाजसेवियों का विपिन शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

रंगारंग सांस्कृतिक संध्या में डूबा लोटस वर्ल्ड पब्लिक स्कूल

➲ छोटे-छोटे कलाकारों ने बिखेरा रंगों का जादू

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सेक्टर ए-3 सुशांत गोल्फ सिटी स्थित लोटस वर्ल्ड पब्लिक स्कूल में हाल ही में आयोजित वार्षिकोत्सव ने इन्क्रेडिबल इंडिया थीम के साथ सभी का मन मोह लिया। इस रंगारंग कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सचिवालय संघ के अध्यक्ष अर्जुन देव भारती, स्कूल के संस्थापक श्रीमती एन के मोहन, चेयरमैन डॉक्टर ऋषि मोहन और प्राचार्य श्रीमती ज्योति मोहन द्वारा दीप प्रवलित कर किया गया। इसके बाद बच्चों ने सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। प्ले ग्रुप और नर्सरी के छात्रों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों से कार्यक्रम की शुरुआत की। एलकेजी और यूकेजी के बच्चों ने रामलीला और कृष्णलीला की मंचन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कक्षा 3 और 4 के छात्रों ने धुंधुची नृत्य और कक्षा 5 के छात्रों ने भांगड़ा प्रस्तुत कर समां बांध दिया। कक्षा 8 के छात्रों का नुक्कड़ नाटक महिला सुरक्षा पर केंद्रित था, जिसने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि और स्कूल के अधिकारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार वितरित किए। इन प्रतियोगिताओं में पोस्टर मेकिंग, फ्लावर डेकोरेशन, राखी मेकिंग, निबंध लेखन और स्पेल बी आदि शामिल थे।

एयरपोर्ट पर दो यात्रियों के पास से लाखों रुपए की विदेशी सिगरेट बरामद

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। दुबई से एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान के जरिए लखनऊ पहुंचे 2 यात्रियों के पास लाखों रुपए की विदेशी सिगरेट पकड़ी गई। कस्टम अधिकारियों ने बरामद सिगरेट को जप्त कर यात्रियों से पूछताछ शुरू कर दी है। दुबई से रविवार सुबह करीब 11 बजे लखनऊ के चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पहुंची एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान आईएक्स 194 के यात्रियों की एयरपोर्ट पर जांच की जा रही थी। तभी कस्टम अधिकारियों की नियमित जांच के दौरान दो यात्रियों पर संदेह हुआ। कस्टम अधिकारियों ने दोनों यात्रियों को रोक कर उनके बैग की गहनता से जांच पड़ताल की तो चेक इन बैग की स्कैनिंग के दौरान एक्सरे मशीन पर उनकी बैग में संदिग्ध वस्तु नजर आई। इसके बाद कस्टम अधिकारियों ने दोनों यात्रियों के बैग चेक किये तो उनके पास से करीब 3 लाख 40 हजार रुपये की विदेशी सिगरेट बरामद हुई। बताते हैं कि बरामद सिगरेट को यह यात्री विदेश से बिना सीमा शुल्क चुकाए ही चोरी छुपे लेकर लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचे थे। फिलहाल कस्टम अधिकारियों ने बरामद सिगरेट को जप्त करते हुए यात्रियों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ शुरू कर दी है।

नगर निगम की साफ सफाई पर ग्रहण लगाता सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी

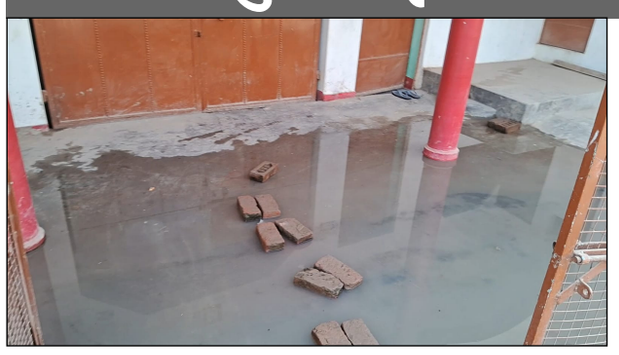

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। कन्हैया माधवपुर द्वितीय के लाला बाग इलाके में सीवर ब्लॉक की गंभीर समस्या को उजागर करता है, जो न केवल स्थानीय लोगों की दिनचर्या को बाधित कर रही है, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी गंभीर खतरे भी पैदा कर रही है। सीवर ब्लॉक और जलभराव- सीवर ब्लॉक के कारण सड़कों, प्लॉट्स और घरों में पानी भर रहा है। इससे सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई हैं और गड्ढे बन गए हैं।जलभराव और गंदगी के कारण मच्छरों की संख्या बढ़ गई है, जिससे डेंगू, मलेरिया, और अन्य जलजनित बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ गया है।स्थानीय लोगों का आरोप है कि सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा सीवर सफाई के नाम पर केवल पैसे लेकर अस्थायी समाधान किया जाता है। सीएम हेल्पलाइन 1076 पर की गई शिकायतों का भी समाधान किए बिना निस्तारण की फर्जी रिपोर्ट दर्ज की गई। जिम्मेदारी का अभाव- जलकल विभाग के संबंधित अधिकारियों और ज़ोन 6 के अभियंताओं पर सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के कर्मचारियों को नियंत्रण में रखने में विफल होने का आरोप है। स्थाई समाधान- सीवर समस्या का स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए, ताकि बार-बार जलभराव न हो। प्रशासनिक कार्रवाई की अगर बात करे तो सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की कार्यप्रणाली और फर्जी रिपोर्ट दर्ज करने की शिकायत की जांच हो। जलकल विभाग और संबंधित अधिकारियों की निगरानी के लिए एक स्वतंत्र समिति गठित की जाए। सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान- इलाके में सफाई और मच्छर नियंत्रण अभियान चलाया जाए। इस प्रकार की समस्याएं न केवल स्थानीय निवासियों की असुविधा बढ़ाती हैं, बल्कि प्रशासन की कार्यकुशलता पर भी सवाल खड़े करती हैं। अधिकारियों को इसे प्राथमिकता के आधार पर हल करना चाहिए।

लखनऊ नगर निगम द्वारा अनाधिकृत अपशिष्ट ठेलों पर सघन अभियान

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह के निर्देशन में लखनऊ नगर निगम ने अनाधिकृत अपशिष्ट ठेला/ठेलियों के विरुद्ध सघन अभियान चलाया। यह अभियान ज़ोन-03 और ज़ोन-07 में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कुल जब्त ठेले/ठेलियाँ- 09 ज़ब्त किया गया सामान- आरआर विभाग में जमा कराया गया। शहर में साफ-सफाई सुनिश्चित करना।अनाधिकृत अपशिष्ट प्रबंधन गतिविधियों पर रोक लगाना। नगर आयुक्त ने निर्देश दिया है कि ऐसी अनियमितताओं को रोकने के लिए नियमित निरीक्षण और कड़े कदम उठाए जाएं। साथ ही, नागरिकों से अपील की गई है कि- अपशिष्ट प्रबंधन के लिए केवल अधिकृत साधनों का उपयोग करें।किसी भी अनाधिकृत गतिविधि की सूचना तुरंत नगर निगम को दें। यह अभियान स्वच्छ और व्यवस्थित लखनऊ की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संपादकीय

रोगमुक्त जीवन के लिए योग अद्भुत विधा

योग स्वयं के माध्यम से स्वयं की यात्रा हैस अर्वाचीन भारतीय दर्शन शास्त्र की पाठशाला में एक महत्वपूर्ण एवं अद्भुत पाठशाला योग भी हैस योग शब्द मूलतः संस्कृत की भाषा से उपजा शब्द है। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द श्युज,से हुई है इसके दो अर्थ है पहला अर्थ जोड़ना तथा दूसरा बहुत ही वृहद व्यापक शब्द अनुशासन है। योग से उसके अभ्यास के कारण शरीर तथा मस्तिष्क में एक सामंजस्य और संबंध बन जाता है, जिससे मस्तिष्क शांत तथा अनुशासित रहता हैं। यह व्यायाम का ही एक अंग है,जिससे शरीर तथा मन नियंत्रित रह कर जीवन को परिस्थितियों के अनुकूल एवं सफल बनाता है। योग स्वस्थ जीवन जीने का एक विज्ञान है। यह एक प्रकार की यौगिक औषधि है, वह हमारे शरीर के काम करने के तरीकों को धीरे-धीरे बेहतर कर शिथिल अंगों को स्वयं हल्के हल्के ठीक कर देता है। निरोगी काया श्रेष्ठ जीवन का वरदान होती है। यदि आप निरोगी और स्वस्थ हैं तो आप सफलतम व्यक्ति बन सकते हैं धन लिप्सा आकांक्षा लालच से योग मुक्त कर एक खुशनुमा जीवन जीने की जीजिविषा तथा जुजुस्ता पैदा करता है। योग जीवन की एक कला है जो वर्तमान परिवेश में और भौतिक जगत में अत्यंत प्रासंगिक भी है। योग हमें शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रखने का एक सशक्त माध्यम है हम सबको, आपको लगता है कि आज के आधुनिक जीवन में हमें एक बहुत अस्त व्यस्त तथा मानसिक असंतुलन वाली जीवन शैली मिली है। यह सभी अनियमित भोजन की आदतों, अभाव या अनुचित नींद या लंबे समय तक कठोर श्रम करने के कारण प्राप्त हुई है। नई पीढ़ी के बच्चे, युवा स्वस्थ जीवन शक्ति सार्वजनिक लचीलापन ऊर्जा और रोगों के लिए प्रतिरोधात्मक क्षमता की खोज में लगे हुए है,और सही सहीं माना जाए तो इन सब का जवाब योग अभ्यास में ही है। योग के आसन प्राणायाम और ध्यान से संयमित शरीर और आत्मा के साथ संतुलित जीवन शैली को प्राप्त किया जा सकता है। और इस जीवन में हम अपने को शक्तिवान,ऊर्जावान महसूस करने लगते हैं। योगाभ्यास के जरिए न केवल बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है बल्कि स्वयं के अंदर एक नई ऊर्जा का संचार भी किया जा सकता है। अपने बेडौल शरीर को भी योग अभ्यास के जरिए सही आकार में लाने का यह सर्वाधिक सुरक्षित आसान और कारगर तथा लागत विहीन जरिया है। योग्य के वैसे तो कर्म योग, भक्ति योग,ज्ञान योग, राजयोग और हठयोग भी अलग-अलग विभेद हैं, पर सभी पांचों योगों के अलग-अलग तरीके तथा अलग-अलग फायदे हैं। कर्म योग सदैव दूसरों की सेवा के लिए प्रेरित करता है। और इसका मूल्य देश सामाजिक कल्याण यह समाज सेवा ही है। भक्ति योग हमें ईश्वर की साधना कैसे की जाए, यह पाठ पढ़ाता है ।भक्ति योग मनुष्य के अंदर हृदय तथा मस्तिष्क को संतुलित कर एक सकारात्मक ऊर्जा की ओर प्रेरित करता है।भक्ति योग एक प्रकार का मानसिक योग है जिससे मन शांत रहकर सहिष्णुता की उत्पत्ति होती है, यह अहिंसक मार्ग की ओर प्रेरित करता है। ज्ञान योग बुद्धि के विकास एकाग्रता बढ़ाने तथा समाजिक ज्ञान विज्ञान की प्रेरणा देते एवं अध्ययन मनन में मनुष्य की सहायता करता है। राजयोग सर्वाधिक प्रचलित कथा लोकप्रिय योग है। यह योग की सबसे महत्वपूर्ण विधा है इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम,प्रत्याहार धारणा और ध्यान या समाधि इसमें परम आनंद की प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति की विधाओं के बारे में विस्तृत वर्णन है। योग का इतिहास पांच सौ साल पुराना है। पश्चिमी देशों के लोगों का परिचय योग से तब हुआ जब स्वामी विवेकानंद ने अपने शिकागो की यात्रा के समय लोगों को योग के महत्व के बारे में व्यापक रूप से बताया था। इसके बाद पूरे विश्व में योग के प्रचार प्रसार के लिए कई योग गुरु ने अनथक प्रयास कर योग को विश्वव्यापी फलक पर विराजमान किया। पहली बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इसकी पहल कर 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में अपने भाषण में उल्लेख कर इसे प्रतिपादित किया। उन्होंने अपने भाषण में कहा था कि योग शारीरिक तथा मानसिक सामंजस्य का अद्भुत सहयोग तथा तरीका है। यह मनुष्य तथा प्रकृति के बीच का एक सामंजस्य स्थापित करने वाला अद्भुत से सेतु है। और तब 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ में उसके 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की सहमति देकर इस प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की थी। इस प्रस्ताव को बहुत ही कम समय में मंजूरी प्रदान कर दी गई, जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ के इतिहास की सबसे कम समय में दी गई मंजूरी थी। योग के वैसे तो अनगिनत फायदे हैं। और हम यह कह सकते हैं कि योगाभ्यास ईश्वर द्वारा मानव सभ्यता को दिया गया अप्रतिम उपहार है। योग किसी चमत्कार से कम नहीं।जिन असाध्य बीमारियों का वर्तमान चिकित्सा पद्धति से इलाज नहीं हो पाता,योग उन बीमारियों को शनै शनै उपचार कर ठीक कर देता है। यह शारीरिक मानसिक शांति ऊर्जा शक्ति तो देता ही है, साथ में हमें आत्म संयम, आत्मबल तथा आत्मज्ञान से भी रूबरू कराता है। योग बहुत ही आसान व्यायाम है,यह दैनिक क्रियाओं के साथ स्वस्थ शरीर और मन की क्रिया है। नाड़ी शोधन, कपालभाति, शीतली, अनुलोम विलोम जैसी क्रियाओं से शरीर में प्राण वायु की संतुलित मात्रा बढ़ती है, एवं स्नायु तंत्र मजबूत होता है। कोरोना संक्रमण काल मे कपालभाति,अनुलोम विलोम, नाड़ी शोधन शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के कारगर उपायों में गिना जाता रहा है।

सत्र में हंगामे : तय हो जबाबदेही

> "करोड़ रूपये खर्च होने के उपरान्त जिस सदन से जनता देश को कुछ हासिल होना है वह हंगामे की भेट चढ़ जाता है। इससे किसी को कुछ हासिल नहीं होता।"

प्रेम शर्मा

लोकसभा हो या फिर राज्य सभा, विधान सभा हो या फिर विधान परिषद इनमें समय समय पर होने वाले सत्र सीधे आम जनता और देश की समृद्धि और विकास से जुड़े माने जाते है लेकिन संसद और विधानसभा का कोई भी सत्र हो, उसकी शुरुआत हंगामे से होना एक परंपरा का रूप ले चुका है। यह एक दुष्प्रभावी परंपरा है। फिर भी यह परम्परा दिन पर दिन बड़ी होती जा रही है। करोड़ रूपये खर्च होने के उपरान्त जिस सदन से जनता देश को कुछ हासिल होना है वह हंगामे की भेट चढ़ जाता है। इससे किसी को कुछ हासिल नहीं होता। विडंबना यह है कि वह हंगामे को अपनी जीत की तरह प्रस्तुत करता है।लोकसभा हो या फिर राज्य सभा, विधान सभा हो या फिर विधान परिषद में सत्र के दौरान इस या उस मुद्दे के बहाने हंगामा करना एक राजनीतिक स्वभाव बन गया है। जब जो दल विपक्ष में होता है, वह हंगामा करना पसंद करता है और वह भी तब, जब वह सत्ता में रहते समय हंगामे से त्रस्त हो चुका होता है। ऐसे में सदन के दौरान जो भी हंगामें होते आ रहे है उसके लिए पक्ष और विपक्ष की जबाबदेही तय होनी चाहिए। क्योकि सत्र और सत्र में भाग लेने वाले जनप्रतिनिधियों का खर्च करदाताओं की जेब से निकलता है। कई बार देखा गया कि विपक्ष यदा-कदा अपने हिसाब से ज्वलंत मुद्दों को उठाता है। लेकिन उन पर सार्थक बहस करने और सरकार से जवाब मांगने के बजाय उसकी दिलचस्पी इसमें अधिक होती है कि संसद चलने न पाए। आम तौर पर विपक्ष संसद में सरकार को घेरने के लिए मुद्दों का चयन खुद नहीं करता। वह उन मुद्दों को लेकर आगे आ जाता है, जो संसद सत्र के पहले से ही चर्चा में आ गए होते हैं। हालियॉ सत्र में यह पहले से तय था कि मणिपुर और अदाणी प्रकरण के साथ संभल का मामला भी विपक्ष की कार्यसूची में आ जाएगा।

ऐसे मामले उसकी कार्यसूची में होने ही चाहिए, लेकिन क्या उसके लिए यह भी आवश्यक नहीं कि वह अपने स्तर पर जनता से जुड़े कुछ मुद्दों का चयन करे और इसके लिए प्रयत्न करे कि सरकार उन पर जवाब दे ?देश और राज्यों में बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, शहरीकरण समेत न जाने कितने ऐसे विषय हैं, जिन पर संसद में व्यापक विचार-विमर्श होना चाहिए। पता नहीं क्यों विपक्ष इन विषयों पर संसद में चर्चा के लिए गंभीर नहीं दिखता ? विपक्ष हंगामा कर संसद को बाधित करते रह सकता है, लेकिन वह ऐसा करके जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। यह सभी दल और जनप्रतिनिधि जानते है कि जनता हंगामा नहीं, राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सरकार का जवाब चाहती है। संसद में हंगामा करते रहने की अपनी आदत पर विपक्ष को तो विचार करना ही चाहिए, सत्तापक्ष को भी यह देखना चाहिए कि संसद सही ढंग से कैसे चले? इसके लिए उसे विपक्ष को भरोसे में लेने के साथ ही महत्वपूर्ण मुद्दों पर गंभीर विचार-विमर्श के लिए माहौल बनाने के लिए आगे आना चाहिए। सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच कटुता दूर होनी चाहिए। यह तभी संभव है, जब दोनों पक्ष एक-दूसरे को आदर देंगे। संसद के शीतकालीन सत्र का पहला सप्ताह हंगामे की भेंट चढ़ गया। इसका अंदेशा पहले से था, क्योंकि कांग्रेस और कुछ अन्य दलों ने अदाणी प्रकरण, मणिपुर की हिंसा के साथ कुछ अन्य मामलों पर जोर देने का एलान कर दिया था। इनमें से एक मामला संभल की हिंसा का भी जुड़ गया, जो संसद सत्र शुरू होने के पहले ही सामने आया। अदाणी प्रकरण भी कुछ दिनों पहले चर्चा में आया था। क्या यह महज एक दुर्योग है कि पिछले कुछ समय से संसद सत्र के पहले कोई न कोई सनसनीखेज मामला सामने आ जाता है ? यह प्रश्न इसलिए, क्योंकि अतीत में पेगासस जासूसी और अदाणी समूह पर हिंडनबर्ग की रपटें संसद का सत्र शुरू होने के पहले ही आईं। कांग्रेस और

अन्य विपक्षी दल अचानक आए ऐसे मुद्दों को लपक लेते हैं। निश्चित तौर पर 25 नवम्बर से शुरू हुए शीत कालीन सत्र में जनता और देश को क्या हासिल हुआ इसका जबाब न तो सत्ता पक्ष के पास है न ही विपक्ष के पास होगा। आखिर हंगामा बेहतर है या मणिपुर या फिर अन्य किसी मसले पर गंभीर चर्चा ? आम तौर पर कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल संसद सत्र शुरू होने के पहले जो मसला खबरों में आ गया होता है, उसे ही तूल देने लगते हैं। इसमें हर्ज नहीं, लेकिन आखिर वे शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण समेत राष्ट्रीय महत्व के अन्य मुद्दों पर भी कोई ध्यान क्यों नहीं देते ? ऐसा तो है नहीं कि ये मुद्दे जनता को प्रभावित न करते हों। यह ठीक नहीं कि विपक्ष संसद में जनता के जीवन से जुड़े वास्तविक मुद्दे उठाने के लिए न तो कोई प्रयत्न करता दिखता है और न ही उनकी कोई तैयारी दिखती है। संसद में एक दिन सत्र को कराने में कितनी मोटी रकम खर्च होती है ? हमारे और आपके द्वारा चुने गए नेताओं के संसद में शोर और हल्ला करने से देश की इकोनॉमी पर काफी असर पड़ रहा है। आप जान कर हैरान होंगे कि देश में रहने वाले टैक्सपेयर्स का पैसों का नुकसान हर घंटे केवल संसद में नेताओं के हो-हल्ले के कारण हो रहा हैसंसद की प्रत्येक कार्यवाही पर हर एक मिनट में ढाई लाख (2.5) रुपये खर्च होते हैं।संसद में हंगामा होने के कारण आम आदमी का ढाई लाख रुपए हर मिनट बर्बाद होता है। आसान भाषा में समझें तो एक घंटे में डेढ़ करोड़ रुपये (1.5) खर्च हो जाता है। कुल मिलाकर इन हंगामों पर सत्ता पक्ष और विपक्ष को अपनी जबाबदेही तय करने का अब समय आ चुका है।

विशाल स्वरूपा नारी सर्वत्र पूजनीय

संजीव ठाकुर

स्त्रीयां सदैव विराट स्वरूपा होती हैं हर काल, हर युग मे नारी पूजनीय रहीं हैं।महान शासक नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महत्ता को बताते हुए कहा था कि मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं का महत्व इसलिए भी सर्वोपरि है कि महिलाएं बच्चों को जन्म देकर उनका पालन पोषण करते हुए उनमें संस्कार एवं सद्गुणों का सर्वोत्तम विकास करती हैं,और राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारी को सुनिश्चित करती है। जिससे राष्ट्र निर्माण और विकास निर्बाध गति से होता रहे और वही पुरुष समाज स्त्रियों का अनादर कर सरे आम घर में, समाज और देश कोने कोने में स्त्री अस्मिता से खिलवाड़ कर अपने पुरुष होने का अति अशोभनीय दम्भ भरता है। नारियां कब तक पुरुषों द्वारा किए गए इन अनाचारों को झेलती रहेगी। भारतीय ऋषियों ने अथर्व वेद में माताओं को ष्माता भूमिह पुत्र अहं पृथ्व्याष् अर्थात भूमि मेरी माता है और हम इस धरा के पुत्र हैं, कहकर प्रतिष्ठित किया है,तभी से विश्व में नारी महिमा का उद्घोष हो गया था। मानव कल्याण की भावना, कर्तव्य, सृजनशीलता और ममता को सर्वोपरि मानते हुए महिलाओं ने इस जगत में मां के रूप में अपनी सर्वोपरि भूमिका को निभाते हुए राष्ट्र निर्माण और विकास में अपने विशेष दायित्वों का निर्वहन किया है। वीर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, विवेकानंद जैसी विभूतियों का देश हित में अवतार माँ के लालन-पालन की ही देन है। जीजाबाई,जयंताबाई, पन्ना धाय जैसी अनेक माताओं को त्याग समर्पण और त्याग को भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित किया गया है। माताएं ही हैं जो बहुआयामी व्यक्तित्व का निर्माण और विकास करती है। मूलतः माताएं, स्त्रियां की राष्ट्र निर्माण की सशक्त सूत्रधार होती है। राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में नारी विधाता की सर्वोत्तम और उत्कृष्ट कृति है। जो जीवन की बगिया को महकाती है और न केवल व्यक्तिगत बल्कि राष्ट्र निर्माण एवं विकास में अपनी महती भूमिका निभाती है। नारी के लिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनमें विविधता में एकता होती है। महिलाओं के बाह्य रूप और सौंदर्य तथा पहनावे में विस्तृत विविधता तो होती ही है, लेकिन उनके मानस में एक आकार और केंद्रीय शक्ति ईश्वर की तरह एक ही होती है। नारी का स्वरूप न केवल बाहर अपितु अंतर्मन के ममत्व भाव का वृहद स्वरूप का भी रहस्योद्घाटन करती हैं, नारी प्रकृति एवं ईश्वरिय जगत का अद्भुत पवित्र साध्य है, जिसे अनुभव करने के लिए पवित्र साधन एवं दृष्टि का होना आवश्यक है, नारी का स्वरूप विराट होता है जिसके समक्ष स्वयं विधाता भी नतमस्तक हो जाते हैं, नारी अमृत वरदान होने के साथ-साथ दिव्य औषधि भी है। समाज के सांस्कृतिक धार्मिक भौगोलिक ऐतिहासिक और साहित्यिक जगत में नारी यानी स्त्री का दिव्य स्वरूप प्रस्फुटित हुआ है और जिसके फलस्वरूप राष्ट्र ने नई नई ऊंचाइयों को भी शिरोधार्य किया है। सभ्यता, संस्कृति ,संस्कार और परंपराएं महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती हैं ।अतः महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक कार्य शक्ति ही परिवार तथा समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाते हैं। नारियों के संदर्भ में यह भी कहा गया है कि सशक्त महिला सशक्त समाज की आधारशिला होती है। माताएं शिशु की प्रथम शिक्षिका होती है। माता के बाद बहन,पत्नी का अवतार राष्ट्र निर्माण और विकास के साथ-साथ पथ प्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, पत्नी चाहे तो पति को गुणवान और सद्गुणी बना सकती है। इतिहास गवाह है कि जब भी कभी देश में संकट आया है तो पत्नियों ने अपने पतियों के माथे पर तिलक लगाकर जोश, जुनून और विश्वास के साथ रणभूमि भेजा है और विजयश्री प्राप्त की है। तुलसीदास जी के जीवन में आध्यात्मिक चेतना प्रदान करने के लिए उनकी पत्नी रत्नावली का ही हाथ था।विद्योत्मा ने कालिदास को संस्कृत का प्रकांड महाकवि बनाया था, इसके अतिरिक्त यह कहना भी गलत नहीं होगा कि पति को भ्रष्टाचार, बेईमानी, लूट,गबन आदि जो कि राष्ट्र को खोखला बनाते हैं जैसी बुराइयों से पत्नी ही दूर रख सकती है और उन्हें इन विसंगतियों से अपनी सलाह के अनुसार बचाती है। सही मायनों में महिलाएं ही संस्कृति, संस्कार और परंपराओं की संरक्षिका होती है। वे पीढ़ी दर पीढ़ी इसका संचालन आरक्षण करती आ रही है। पूरे विश्व में भारत को विश्व गुरु का दर्जा दिलाने में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं महती रही है। स्वतंत्रता के आंदोलन की चर्चा ना करना इस आलेख को पूर्ण बनाता है, अतः स्वाधीनता के आंदोलन में महिलाओं ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर भारत के नवनिर्माण में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, अरूणा आसफ अली, मैडम भीकाजी कामा,सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, दुर्गा भाभी और न जाने कितनी महिलाओं ने राष्ट्र निर्माण और विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया है। राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, विजयलक्ष्मी पंडित विश्व की प्रथम महिला जो संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष बनी, सरोजनी नायडू, सुचेता कृपलानी, इंदिरा गांधी जैसे महिलाओं ने राजनीतिक प्रतिभा का प्रयोग राष्ट्र निर्माण और विकास में किया है जो अपने समय के महत्वपूर्ण सशक्त हस्ताक्षर थी। वर्तमान में भी वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, ममता बनर्जी, मायावती, स्मृति ईरानी, सोनिया गांधी,प्रियंका गांधी, हरसिमरन, कौर वसुंधरा राजे सिंधिया, प्रतिभा पाटिल, मृदुला सिन्हा आदि ने राजनीति मैं अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर अपने कार्यों से महिलाओं का सम्मान बढ़ाया एवं देश की अर्थव्यवस्था सुधारने में अपना योगदान दिया है। यह कहने में कतई गुरेज नहीं है कि महिलाएं राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक, चिकित्सकीय, और विज्ञान में देश के हित के लिए अग्रणी रही हैं। सशक्त राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की सशक्त भूमिका को नमन करते हुए कृतज्ञ राष्ट्र उन्हें साधुवाद प्रदान कर उनकी इस भूमिका को प्रणाम करता है।

मेष :- परंपराओं एवं संस्कारों के प्रति आस्था बढ़ेगी। निर्थक हीनभाव रखना एवं प्रगतिशील लोगों से ईष्याभाव रखना ठीक नहीं है। किसी अचल सम्पत्ति के क्रय हेतु प्रयत्न तीव्र होगा।

बृषभ :- मनोवांछित सफलता न मिलने से उत्साह में कमी आएगी। भौतिकता से प्रभावित मन अभाव की अनुभूति से दुखित होगा। धैर्यहीनता व परिवर्तनशीलता लक्ष्य से दिग्भ्रमित करेगी।

मिथुन :- परिजनों एवं मित्रों का सनिध्य मन को प्रसन्न रहेगा। कार्य-पेशे में अवरोधित कार्य सार्थक होने के आसार हैं। मांगलिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में सम्मलित होंगे। महत्वपूर्ण कायरे में आलस्य न करें।

कर्क :- कुछ नये संबंध बनेंगे। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद संभव। कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारियों से घिरा मन काल्पनिक आकांक्षाओं से समझौता करने में सक्षम होगा। रोजगार में व्यस्तता रहेगी।

सिंह :- मन खराब विचारों से प्रभावित रहेगा। अतरू उपरोक्त स्वभाव को सुधारें। नई स्थितियों से प्रतिभा का संचार होगा। रोजगार में अपनी कार्यकुशलता व प्रतिभा का जौहर बिखेरेंगे।

कन्या :- वाणी पर नियंतणरखते हुए संबंधों को मधुर बनाने की चेष्ठा करें। आत्मबल कुछ महत्वपूर्ण सफलताओं के प्रति आशान्वित करेगा। पूर्वत् स्थिति में सुधार एवं आर्थिक लाभ के आसार हैं।

तुला :- आपकी महत्वाकांक्षाए सफलता की राह पर संघर्ष हेतु प्रेरित करेंगी। अच्छी भावनाएं मकसद को सफल करेंगी। कार्यक्षेत्र में बौद्धिक क्षमता का लाभ उठाएंगे। परिजनों के दुख-सुख के प्रति चिंतित होंगे।

वृश्चिक :- परिश्रम द्वारा आर्थिक क्षेत्र में सफलता अर्जित करेंगे। समय का पूर्ण उपयोग करें। किसी नयी संवेदना का असर किसी नये रिश्ते को जन्म देगा। मन लक्ष्य के प्रति केंद्रित होने में असमर्थ होगा।

धनु :- किसी महत्वपूर्ण कार्य में कुछ कठिनाइयों का अभास होगा। संवेदनशील मन पुरानी मर्मस्पर्शी घटनाओं से ओतप्रोत होगा। पारिवारिक दायित्वों की समयानुकूल पूर्ति हेतु मन चिंतित होगा।

मकर :- किसी महत्वपूर्ण कार्यवश घर से दूर रहना अरुचिकर लगेगा। मिलनसारिता के कारण संबंधों का विस्तार होगा। कमजोर मनोबलवश लक्ष्य के प्रति दृढ़ता का अभाव रहेगा।

कुंभ :- परिवार में खुशीप्रद वातावरण रहेगा। पिछले दिनों उत्पन्न व्यवसायिक अवरोधों का हल ढूंढने हेतु मन केंद्रित होगा। कोई अच्छा अवसर मन को खुश रखेगा। जीवन साथी के साथ मधुरता कायम रखें।

मीन :- प्रयासरत क्षेत्रों में अवरोध तथा दाम्पत्य जीवन में कष्ट संभव। ईरीय आस्था हर स्थिति पर विजय प्राप्त करेंगे। स्वास्य में छोटी-मोटी परेशानियां संभव। धैर्यपूर्वक महत्वपूर्ण योजनाओं को क्रियान्वित करें।

पुचकारने से नहीं मानते भेड़िये

आलेख : बादल सरोज

देर आयद की कहावत के पहले दो शब्दों को व्यवहार में उतारते हुए आखिरकार देश की सबसे बड़ी अदालत ने बुलडोजर अन्याय पर अपना फैसला दे दिया। 13 नवंबर को सुनाए अपने निर्णय में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कार्यपालिका केवल इस आधार पर किसी व्यक्ति का घर नहीं गिरा सकती कि वह किसी अपराध में आरोपी या दोषी है। इसकी वजह बताते हुए इस फैसले में कहा गया है कि : कार्यपालिका किसी व्यक्ति को दोषी नहीं ठहरा सकती। केवल आरोप के आधार पर यदि कार्यपालिका व्यक्ति की संपत्ति को ध्वस्त करती है तो यह कानून के शासन पर प्रहार होगा। कार्यपालिका न्यायाधीश बनकर आरोपी व्यक्ति की संपत्ति को ध्वस्त नहीं कर सकती। बुलडोजर द्वारा इमारत को ध्वस्त करने का भयावह दृश्य अराजकता की याद दिलाता है, जहां ताकत ही सब कुछ मानी जाती थी। सवैधानिक लोकतंत्र में इस तरह की मनमानी कार्रवाई के लिए कोई जगह नहीं है। इस तरह की कार्रवाई कानून के सख्त हाथ से की जानी चाहिए। हमारे सवैधानिक लोकाचार इस तरह के कानून की अनुमति नहीं देते। इस फैसले की एक महत्त्वपूर्ण प्रस्थापना घर के अधिकार को नागरिक का मौलिक अधिकार बताया जाना है। कोर्ट ने कहा कि घर सिर्फ एक संपत्ति नहीं होता, यह परिवार की सामूहिक आशाओं का प्रतीक होता है। जीवन का अधिकार एक मौलिक अधिकार है और आश्रय का अधिकार इसका एक पहलू है। यह नई और अच्छी बात है, बशर्ते उसे इसी तरह से पढ़ा जाए और अमल में लाया जाए। सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यीय खण्डपीठ का यह निर्णय भारत के संविधान की धारा 142 के तहत हुई सुनवाई के तहत आया है ; यह वह धारा है, जो कोर्ट को इस बात की हैसियत देती है कि जिन मामलों में अभी तक कानून नहीं बन पाया है, उन मामलों में न्याय करने के लिए सुप्रीम कोर्ट अपना फैसला सुना सकता है और नीति निर्धारित कर सकता है, ऐसे निर्देश दे सकता है, जो भविष्य के लिए नियम विधान माने जायेंगे। यही वजह रही होगी कि अपने इस फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने वह प्रक्रिया भी तय की है, जिसे अपना कर अवैध निर्माणों को हटाया या गिराया जा सकता है। इस बारे में उसने 15 निर्देश दिए हैं। स्वाभाविक ही है कि जिन दिनों में बुलडोजर अन्याय का प्रतीक और वाहक दोनों बनकर निर्लज्ज निर्ममता से इस्तेमाल किया जा रहा हो, राजनीतिक प्रतिशोध और समाज के वंचित, उपेक्षित और लक्षित हिस्सों को कुचलने का जरिया बनाया जा रहा हो, ऐसे में सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का आमतौर से स्वागत ही हो सकता है ; हुआ भी। मगर इसे कितनी ही उदारता के साथ क्यों न पढ़ा जाये, इसके बारे में %देर आयद% की कहावत के अगले दो शब्द 'दुरुस्त आयद' कहना मुश्किल है। इस स्वागतेय निर्णय की सीमाए हैं। ये वे सीमाएं हैं, जो इन दिनों न्यायिक निर्णयों की, विशेषकर सुप्रीम कोर्ट के फैसलों की पहचान और प्रवृत्ति के रूप में सामने आयी है। इनमें अच्छे-अच्छे वाक्यों की तो भरमार होती है, मगर उसके अनुरूप कदम नहीं दिखाई देते। जैसे, महाराष्ट्र में हुआ दलबदल और उसके जरिये बनी सरकार तो गैरकानूनी है, मगर अब जो हो गया सो हो गया ; जैसे बाबरी मस्जिद को तोडा जाना कानूनों का उल्लंघन तो था ही, अपराध भी था, मगर किसी को इसके लिए दण्डित करना तो दूर वह पूरी जमीन ही छीनकर जबरिया आपराधिक तोड़-फोड़ करने वालों को ही सौंप दी जाना चाहिये। इस तरह के जैसे, और भी न जाने कैसे-कैसे और कई तो ऐसे वैसे फैसले भी हैं। ऐसे फैसलों की खासकर, अभी हाल ही में रिटायर हुए मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने इस तरह के कहीं न पहुँचने, कहीं न पहुँचाने वाले निर्णयों की झड़ी ही लगा दी थी। इसी तर्ज पर यह बुलडोजर वाला निर्णय भी यह मानता तो है कि यह जहाँ भी चला, घोर मनमानी से चला, गैरकानूनी चला, लोकतंत्र के मान्य सिद्धांतों के विपरीत नितांत असवैधानिक तरीके से चला, इसने आवास और आश्रय के मौलिक अधिकार का उल्लंघन किया, आदि-इत्यादि, मगर इसके बावजूद यह अभी तक हुए बुलडोजर ध्वंसों और विनाशों की जवाबदेही, अब तक की घटनाओं, वारदातों का उत्तरदायित्व तय

नहीं करता, ना ही उनकी समीक्षा कर जिम्मेदारी निर्धारित करने का कोई प्रबंध ही करता है। इसके पीडितों-प्रताडितों की क्षति को पूरे जाने का संकेत तक नहीं देता, उसे लोकतंत्र और संविधान के विपरीत बताने के बावजूद इसके जाहिर-उजागर असली इरादे को चिन्हांकित नहीं करता। बुलडोजर, जैसा कि दावा किया जाता रहा, सिर्फ कथित अवैध या बिना स्वीकृति के बने मकानों, आवासों, भवनों को गिराने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा रहा ; यह एक राजनीतिक प्रोजेक्ट है उस गिरोह का, जिसकी ओर से इसी सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाकर भारत के संविधान में से 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द को हटाये जाने की मांग की गयी थी और जिसे सुप्रीम कोर्ट ने ठीक ही खारिज किया था। इसी के साथ यह भी कहा था कि 'धर्मनिरपेक्षता' इस देश के संविधान का एक अविभाज्य और कभी न हटाया जा सकने वाला अंग है। यह गिरोह जिस मकसद को याचिका के जरिये हासिल नहीं कर सका, उसे बुलडोजर के जरिये लागू करना चाहता है। बुलडोजर प्रतीक है उस फासीवाद का, जिसे कभी हो हिंदुत्व, तो अभी सनातन के नाम पर छुपाया जा रहा है। अब तक चले बुलडोजर के तथ्य इस सत्य को उजागर करते हैं कि यह उस बर्बरता का ब्रांड है, जिसे भाजपा सरकारों द्वारा मुसलमानों और दलितों, आदिवासियों और आर्थिक रूप से वंचितों को सबक सिखाने और कार्पोरेट्स के हितो को आगे बढाने के लिए तैयारी के साथ सायास खड़ा किया गया है। यह वह यमदूत है, जो सिर्फ लोकतंत्र, संविधान, धर्मनिरपेक्षता को ही नहीं, सभ्य समाज की पहचान क़ानून के राज और क़ानून की निगाहों में सबकी बराबरी की अवधारणा को ही मौत के घाट उतार देना चाहता है। इसका जिस तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, वह इन इरादों को पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। उत्तरप्रदेश में मुख्यमंत्री बनने के साथ योगी आदित्यनाथ ने इसे ब्रांड बनाने की परियोजना शुरू की ; तुरंत ही इसे चुनावी आम सभाओं में लाइन लगाकर खड़ा किया जाने लगा ; अटल, दीनदयाल उपाध्याय, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, यहाँ तक कि खुद मोदी और योगी की तस्वीरों के कटआउट्स से भी ज्यादा प्राथमिकता पर बुलडोजर रखे जाने लगे ; कई आम सभाओं के लिए तो इन्हें ही मंच बनाया जाने लगा। यूपी से शुरू हुई बुलडोजर को नेता मानने की मुहिम बाकी प्रदेशों में भी पहुँच गयी और यह उन्माद का समानार्थी बन गया। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भी कुछ बदला-सुधरा नहीं है। झारखण्ड में योगी की सभाओं में विध्वंस की ये मशीनें कतारबद्ध प्रदर्शित की गयीं। महाराष्ट्र में विश्व की सबसे विशाल झुग्गी बस्ती धारावी और बाकी बस्तियों पर इसे चलाकर अडानी का कब्जा कराने की तो बाकायदा घोषणा ही की गयी। 13 नवम्बर के फैसले के बाद, उसमें निर्धारित प्रक्रिया के बावजूद यह यूपी में भी चल रहा है, एम पी में भी विचर रहा है। ये दीदादिलेरी सिर्फ हिमाकत नहीं है, एक संदेश है ; आधी-अधूरी बातें करने वाली न्यायपालिका के सदाशयी उपदेशों को अँगूठा दिखाते हुए पुलिस, प्रशासन सहित समूची कार्यपालिका को बुलडोजर की तरह काम में लग जाने का सन्देश। हाल में हुए उपचुनावों में उत्तर प्रदेश में मतदाताओं के नाम चीन्ह-चीन्ह कर उन्हें जिस तरह, लाठियां चलाकर, पिस्तौल तक दिखाकर वोट डालने से रोका गया, वह इसी की बानगी है। यूपी के ही संभल में जो हो रहा है, वह इसी का एक रूप है : जिस आधार पर संभल किया गया है, वह संकेत है कि यदि उनकी चली, तो अब बात सिर्फ संभल तक नहीं रुकने वाली, बाबरी ध्वंस के बाद बने कानून कि 15 अगस्त 1947 के पहले के धर्मस्थलों के विवाद अब नहीं उठाये जायेंगे, के अस्तित्व में होने के बावजूद हर शहर-गाँव तक पहुंचाई जायेगी ; महंगाई, बेरोजगारी, कुपोषण सहित सारे सर्वेक्षणों और उनकी रिपोर्ट्स पर रोक लगाने वाले हर मस्जिद का सर्वे करके उन्माद उकसाने में जुटे हैं। बाबरी मस्जिद के मलबे को सीढ़ी बनाकर सत्ता में आया गिरोह अब बाकी मस्जिदों को खंडहरों में बदलकर सरकार में बने रहने का रास्ता ढूंढ रहा है। विडम्बना की बात यह है कि यह सब उस समय हो रहा है, जब देश संविधान को अंगीकार करने की 75वीं वर्षगाँठ मना रहा है। वह संविधान, जिसने 562 रियासतों में टुकड़े-टुकड़े देश को संघीय गणराज्य बनाया, जिसने पृथ्वी के सभी धर्मों की मौजूदगी और दुनिया की तकरीबन हर नस्ल के कबीलों की कभी वापस न लौटने वाली आमद के समावेश से बने भूखण्ड को हिन्दुस्तान बनाया। अतीत से सबक लेकर और 1857 से शुरू राजनीतिक और उससे भी कही पहले से जारी सामाजिक न्याय की उथल-पुथल और जनता के संघर्षों के दम पर एक ऐसा संविधान बनाया, जिसमे एक धतूरे को छोड़कर बाकी सभी फलो का स्वाद और हर तरह के फूलों की सुगंध शामिल है। जिसने अपनी अनेक अन्तर्निहित सीमाओं के बावजूद इस देश को कमोबेश एकजुट और गतिमान बनाए रखा। जो लोग आज बुलडोजर पर बैठकर इस सबको रौंदने के लिए बढ़े आ रहे हैं, उनके निशाने पर सिर्फ मुसलमान नहीं है, उनके निशाने पर 5 हजार वर्ष का हासिल है, तीन चौथाई से ज्यादा अवाम है, इस देश का संविधान और इस तरह से पूरा इंडिया दैट इज भारत के रूप में पहचाने जाने वाला पूरा हिन्दुस्तान है। दोहराना जरूरी है कि न यह हिन्दुस्तान रातों रात अस्तित्व में आया है, न ही 75 वर्ष पूर्व 26 नवम्बर 1949 को मंजूर किया गया संविधान ही अचानक से बना है ; ये दोनों ब्रिटिश गुलामी के खिलाफ जनता के कठिन, किन्तु एकजुट, जुझारू और कुर्बानियों से भरे संघर्ष और जन उभारों की कोख से जन्मे है और अब जन आंदोलनों और संघर्षों से ही इसे बचाया और महफूज रखा जा सकता है। यह भी दोहराना जरूरी है कि भेड़िये मान-मनुहार करने या पुचकारने से नहीं मानते ; नीलकंठ बनके खुद विष पीने और अमृत उन्हें छका देने से इतिहास आगे नहीं बढ़ता। तीसरा नेत्र खोलना ही पड़ता है, जरूरत पड़ने पर तांडव भी दिखाना पड़ता है। लॉरेंस बिश्नोईयों की डराने की कोशिशों, अडानियों की तिजोरियों की कालिखों और उन्मादी साजिशों से जीते-हारे एक-दो चुनाव निर्णायक नहीं होते7। फैसलाकुन होती है जनता, अपनी मुश्किलों को देश की मुश्किलों से जोड़कर लडती-जूझती जनता । और यह जनता है, जो गोलमोल शब्दों में आधे-अधूरे फैसले नहीं सुनाती, इतिहास बनाती है। 26 नवम्बर को हुई किसान-मजदूरों की देशव्यापी विरोध कार्यवाहियां इसी तरह की जनकार्यवाही है। ऐतिहासिक किसान आंदोलन और उसी दिन हुई मजदूरों की शानदार राष्ट्रीय हड़ताल की चौथी वर्षगाँठ के मौके पर हुई यह कार्यवाही सिर्फ आश्वस्ति ही नहीं देती, रास्ता भी दिखाती है ; इसलिए कि ये जागरण और प्रतिरोध की जगमगाती मशालें हैं और भेड़िये मशाल जलाना नहीं जानते।

महाभ्रष्ट सचिव की नवीन सब्जी मण्डी में खुलेआम चल रहा है चाइनीज लहसुन का काला कारोबार

नये लाइसेंस निर्गत करने व नवीनीकरण में अवैध वसूली और खाली जमीनों पर अवैध कब्जे कराने का भी है आरोप

अम्बेडकरनगर। जिला मुख्यालय के मालीपुर रोड स्थित नवीन सब्जी मण्डी सिझौली में एक तरफ जहां दुकानों के नये लाइसेंस निर्गत करने व नवीनीकरण में निर्धारित शुल्क से अधिक की वसूली और खाली पड़ी जमीनों के आवंटन में मोटी रकम का खेल सालों से चला आ रहा है। वहीं अब चाइनीज लहसुन का काला कारोबार भी शुरू हो गया है जिसे लेकर लोगों का आरोप है कि ऐसे कार्यों में वर्तमान महाभ्रष्ट सचिव की पूरी तरह संलिप्तता है।

इन दिनों यह चर्चा का विषय बन गया है। ज्ञात हो कि 1995 में पूर्ववर्ती बसपा सरकार में यह जिला बना था। धीरे-धीरे जरूरी विभागों की स्थापना हुई। इसी क्रम में मालीपुर रोड पर नवीन सब्जी मण्डी

का निर्माण कराया गया ताकि इस जिले के किसानों के उत्पादन का उन्हें समुचित मूल्य मिल सके।

ये सब्जी मण्डी में फुटकर व थोक विक्रेताओं के लिए दुकानों के निर्माण कराये गये थे जिन्हें दुकानदारों को आवंटित किये गये और लाइसेंस जारी हुए। इन दुकानदारों ने अपने व्यापार शुरू किये। राजस्व अभिलेख के अनुरूप दुकानों व भवनों के सापेक्ष अधिक जमीन परिसर में पड़ी थी जहां अभी तक कोई निर्माण नहीं हो सका है।

जिन दुकानदारों के लाइसेंस निर्गत हुए थे उनके नवीनीकरण के वक्त आये। इसी दौरान से सरकार द्वारा जो शुल्क निर्धारित है उससे कई गुना अधिक दुकानदारों से वसूली की परम्परा चली आ रही है। इसका विरोध करने से समय-समय पर जो सचिव रहे उनके द्वारा दण्ड का भी खामियाजा दुकानदारों को भुगतना पड़ा है।

इधर कई सालों से जिस मण्डी सचिव की तैनाती है इनके कार्यकाल में परिसर की खाली जमीनों पर अवैध कब्जा बेखौफ टीन शेड रखवाकर नियम विरूद्ध कब्जा कराया जा रहा है। नये लाइसेंस और नवीनीकरण में भी अवैध वसूली में काफी बढ़ोत्तरी हो गयी है। इससे दुकानदार काफी आहत हैं यह तो रहा जमीनों पर अवैध कब्जे और लाइसेंस नवीनीकरण में भ्रष्टाचार का मामला। इसके अलावा चाइना के लहसुन विक्री पर कोर्ट और शासन का शख्त निर्देश है जिसमें कहा गया है कि यह आमजन के स्वास्थ्य के लिए घातक है। इसके बावजूद भी इस मण्डी में खुलेआम दुकानदारों द्वारा विक्री हो रही है जबकि वहीं मण्डी सचिव से लेकर इंस्पेक्टर आदि रहते है जिन्हें निगरानी की जिम्मेदारी भी है किन्तु इन्हे कोई परवाह नहीं है भले ही इसके सेवन करने वाले गंभीर बामारी का शिकार हो जाए कोई लेना-देना नहीं है।

पीछे लोगों का आरोप है कि वर्तमान सचिव महाभ्रष्ट है। इसी के चलते चाइनीज लहसुन के कारोबार में काफी इजाफा हो गया है उन्हें व्यापारियों से अवैध चाइनीज लहसुन के बिक्री के एवज में मोटी रकम मिल रही है। इसी कारण आंख पर पट्टी बांध लिये है। लोगों का यह भी कहना है कि अब तक जो भी सचिव रहे उनका रिकार्ड इन्होंने तोड़ दिया है।

हजरत फातिमा की शहादत के गम में शिया बाहुल्य इलाकों में मजलिस शुरू

अंबेडकरनगर। हजरत मुहम्मद साहब की इकलौती बेटी हजरत फातिमा की शहादत के गम में शिया बाहुल्य इलाकों में मजलिस-मातम का सिलसिला शुरू हो गया है। इमामबाड़ों व मस्जिदों में उलमा-ए-कराम की तकरीरों व मातमी अंजुमनों के नौहो-मातम से फिजा सौगवार हो गई।

जलालपुर के आसीपुर स्थित हौज-ए-इल्मिया में पांच दिवसीय मजलिस-ए-खमसा को रात्रि में मौलाना अशफाक हुसैन, मौलाना मोहम्मद जफर मारुफी, मौलाना मोहम्मद हसन जौनपुर, मौलाना काशिफ रजा व मौलाना मोहम्मद साहिल खिताब करेंगे। खातून-ए-जन्नत का मातम शीर्षक से नगपुर स्थित जुमा बाजार में पांच दिवसीय रात्रि में आयोजित मजलिस को मौलाना मुशीर अब्बास खान, मौलाना सैयद शारिब अब्बास, मौलाना हसन मेंहदी व मौलाना रईस हैदर खिताब करेंगे। 5 दिसम्बर तक चलने वाले कार्यक्रम में दर्जनों अंजुमन नौहे मातम करेगी। दो दिसम्बर को जाफराबाद स्थित हैदरी इमाम बाड़ा में रात की मजलिस को मौलाना निसार हुसैन खान जौनपुर खिताब करेंगे।

उस्मानपुर स्थित बारगाह हुसैनी में पहली जमादी उस्सान से पांच जमादीउस्सानी तक अजा-ए-फातमी में उलमा-ए-कराम मजलिस को खिताब करेंगे। अजा-ए फातमी की रात्रि में आयोजित मजलिस को मौलाना नय्यर जुलकरनैन, मौलाना र ईस हैदर, मौलाना जीशान रिजवी बिहार, मौलाना सैयद हैदर मेंहदी रिजवी व मौलाना समर हैदर जैदी लखनऊ खिताब करेंगे। जाफराबाद स्थित छोटी इमाम बारगाह में तीन दिसंबर की रात्रि को सोगनामा बुतूल शीर्षक से जुलूस का आयोजन होगा।

अंजुमन जाफरिया के बैनर तले आयोजित जुलूस में अंजुमन मासूमिया, अंजुमन पंजतनी, अंजुमन अजादार हुसैनी, अंजुमन गुंचा जाफरिया, अंजुमन जाफरिया रजिस्टर नौहे मातम पेश करेगी। बड़ी मस्जिद पर आयोजित मजलिस में अकीदत मंदों का हुजूम उमड़ेगा। बुतूल एकेडमी के तत्वाधान में 5 दिसम्बर को पूरे दिन कार्यक्रम का आयोजन होगा। मौलाना मोहम्मद हसनैन बाकरी की मजलिस के साथ कार्यक्रम का समापन होगा।

मारपीट के मुकदमें से परेशान जिपंस ने लगाई एसपी से गुहार

टांडा, अंबेडकरनगर। मारपीट का मुकदमा दर्ज होने पर जिला पंचायत सदस्य ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना-पत्र देकर मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है।

जिला पंचायत सदस्य राजेन्द्र गौतम ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना-पत्र देकर बताया कि शादी समारोह में बृजेंद्र कुमार की भतीजी के शादी ग्राम एकडल्ला थाना टाण्डा के यहाँ सम्मिलित होने गया था शादी समारोह में एक लड़का नशे की हालत में आया और मुझसे मेरा नाम पता व मो. नम्बर पूछा नेता होने के नाते मैने

उसे सब कुछ बता दिया इसके बाद निमंत्रण देकर खाना खाकर घर वापस चला आया इसके बाद क्या हुआ में नहीं जानता मुझे मालूम हुआ कि किसी ने मेरे खिलाफ मनगढ़न्त तरीके से शिकायती प्रार्थनापत्र थाना कोतवाली टाण्डा में मेरे खिलाफ दिया है जिसकी उच्च स्तरीय जाँच करवा कर दोषी पाये जाने के खिलाफ कार्यवाही सुनिश्चत किया जाना नितान्त आवश्यक है।

बाइकों की भिड़न्त में एक की मौत, पिता ने दी तहरीर

टांडा, अम्बेडकरनगर। बाइक से रिस्तेदारी जा रहे युवक को तेज रफ्तार बाइक चालक ने टक्कर मार दिया जिससे उसकी मौत हो गई। मृतक के पिता की तहरीर पर गाड़ी चालक के विरुद्ध पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर लिया है।

पीड़ित द्वारा दिये गये प्रार्थना पत्र में बताया की प्रार्थी अमरनाथ पुत्र स्व. राम पल्टन निवासी ग्राम बनियानी थाना हंसवर का मूल निवासी है बीते दिनों समय लगभग 6 बजे शाम प्रार्थी का लड़का रोहित अपनी मोटर साईकिल यूपी-45एएफ-9792 से अपनी बुआ के यहां जमऊपुर बसखारी जा रहा था जैसे ही खेमपट्टी के आगे भटपुरवा हाइवे आजमगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग पुल के ऊपर राष्ट्रीय राजमार्ग पर जा रहा था कि एक मोटरसाइकिल का चालक जिसका नम्बर यूपी-50सीआर-9885 तेजी व लापरवाही पूर्वक अनियंत्रित गति से चलाता प्रार्थी के पुत्र की मोटर साइकिल मे पीछे से जोरदार टक्कर मार दिया जिससे प्रार्थी का पुत्र गंभीर रुप से घायल हो गया।

स्थानीय पुलिस मेरे पुत्र को सीएचसी बसखारी ले गये जहां डाक्टरो ने उन्हें मृत्यु घोषित कर दिया मोटर साइकिल चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। मृतक के पिता की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर लिया है।

कृषि यंत्रों पर लाभार्थियों का कलेक्ट्रेट में चयन 3 को

अम्बेडकरनगर। कृषि यंत्रीकरण की समस्त योजनाओं के अन्तर्गत 10 हजार से अधिक अनुदान वाले समस्त कृषि यंत्र, कस्टम हायरिंग सेन्टर, थ्रेसिंग फ्लोर एवं स्माल गोदाम इत्यादि की ई-लाटरी की कार्यवाही जनपद में 3 दिसंबर को समय 11 से 3 बजे तक कलेक्ट्रेट सभागार में प्रारम्भ की जायेगी। अतः जनपद के समस्त सम्मानित कृषकों से अनुरोध है कि जिनके द्वारा कृषि विभाग में संचालित कृषि यंत्रीकरण की योजनाओं के अन्तर्गत कृषि यंत्र, कस्टम हायरिंग सेन्टर, थ्रेसिंग फ्लोर एवं स्माल गोदाम आदि की बुकिंग की गयी है तथा जिनकी बुकिंग ई-लाटरी प्रक्रिया के अन्तर्गत है। वह समस्त कृषक 3 दिसंबर को 11 से 3 बजे तक कलेक्ट्रेट सभागार में उपस्थित रहकर ई-लाटरी प्रक्रिया में भाग लें।

न्यूज

दोस्तपुर नगर पंचायत के ईओ और चेयरमैन के भ्रष्टाचार की सभासद ने खोली पोल

दोस्तपुर, सुल्तानपुर। स्थानीय नगर पंचायत के सभासद ने अधिशाषी अधिकारी व चेयर मैन पर लगाया घोर भ्रष्टाचार का आरोप। कहा कि ये लोग सिर्फ अपनी जेब भरने में मस्त है। मीडिया के सामने आकर वार्ड नंबर 8 सभासद इमरान व बीजेपी के जुझारू युवा नेता मीडिया को बताया कि मैंने नगर पंचायत दोस्तपुर में अपने वार्ड के समस्या को लेकर पिछले मार्च से ही दौड़ रहा हूं मगर यहां के अधिशाषी अधिकारी मेरी समस्या को सुनने के बाद टाल देते हैं। वहीं जब मैं उक्त जनता की बातों को अध्यक्षा को बताने की कोशिश की तो उनके प्रतिनिधि ने मुझे भगा दिया। इतना ही नहीं नगर पंचायत में अध्यक्षा व सभासद के प्रतिनधि ही नगर पंचायत का कार्य चलाते हैं जिनको जनता ने चुना है वे कभी नगर पंचायत में दिखाई ही नहीं देते। इतना ही नहीं मैं नगर पंचायत में कार्य कर रहे कर्मचारियों के वेतन और कितने लोग कार्य कर रहे है और किस पद पर हैं लेकिन पन्द्रह महीने बीत जाने के बाद भी हमें आज तक जानकारी नहीं दी गई और क्या बताऊं कि आज पन्द्रह महीने में नगर पंचायत में कोई कार्य भी नहीं किया गया है सिर्फ कागजों तक ही सीमित है और तो और अगर आप नगर पंचायत में टहल कर देख लें कि कौन सा कार्य हुआ है अगर जिम्मेदार अधिकारी अपनी नंगी आंखों से एक बार देख लें कि नगर पंचायत में क्या कार्य हुआ है और कागज में कितना दिखाया गया है। खर्च कितना किया गया है। यहां तक कि हमें तो लगता है कि ऐसा ही रहेगा तो जनता सड़क पर और अधिशाषी अधिकारी व चेयरमैन महल में रहेंगे। सभासद ने जिलाधिकारी से इस मामले को संज्ञान में लेने की मांग की है।

विश्व एड्स दिवस पर मेडिकल कॉलेज में संस्था का स्वैच्छिक रक्तदान शिविर सम्पन्न

टांडा, अम्बेडकरनगर। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर सक्षम

संस्था द्वारा सदरपुर टांडा मेडिकल कालेज रक्तकेंद्र पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, रक्तदान शिविर मे 16 लोगो ने रजिस्ट्रेशन कराया जिसमे से 10 लोग रक्तदान के लिए फिट पाये गये। कार्यक्रम मे उपस्थित सभी रक्तदानियो को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया, इस मौके पर सक्षम संस्था के प्रांत सह सचिव मानस वर्मा ने कहा हमारा प्रयास है, अपने जिले में रक्त के अभाव में किसी की जान न जाने पाये। इसी उद्देश्य के साथ हमारा संगठन समय-समय पर रक्तदान शिविर आयोजित कर गरीब और असहाय लोगों की सहायता करता रहता है। इस मौके पर सक्षम संस्था के रक्तदानी अमन वर्मा,मुकेश सोनी, रवि कुमार, राजकुमार श्रीवास्तव, शिवांश जायसवाल, मोहम्मद अरशद अंसारी, प्रतीक मद्देशीय, अमित, ने रक्तदान किया। रक्तकेन्द्र विभाग से काउंसलर दीपक नाग, संतोष, संदीप, राजकुमार, रमेश, खुशीराम, सूरज, अंशिका, रिया ने भी सहयोग किया।

अनियंत्रित कार की टक्कर से बाइक सवार एक गंभीर दूसरा घायल

अंबेडकरनगर। अज्ञात चार चक्का वाहन सवार चालक ने आगे जा रहे बाइक सवार को अनियंत्रित तेज रफ्तार टक्कर मार दिया। बाइक चालक जहां गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गया वहीं पीछे बैठे सवार को हल्की चोट लगी। सूचना पर पहुंची 112 डायल पुलिस ने गम्भीर रूप से घायल चालक को नगपुर अस्पताल ले गए। दुर्घटना के बाद चालक चार चक्का लेकर फरार हो गया। दुर्घटना मालीपुर थाना के अकबरपुर रोड स्थित निरंकारी भवन के पास घटित हुई। रविवार शाम लगभग 5 बजे मालीपुर थाना क्षेत्र के टिकरी गांव निवासी सद्दाम पुत्र सिद्धिक अली बाइक पर एक अन्य युवक को बैठाकर मालीपुर आ रहा था। जब वह रेलवे क्रासिंग से आगे निरंकारी भवन पहुंचा पीछे से आ रही तेज रफ्तार चार चक्का वाहन ने अनियंत्रित होकर लापरवाही पूर्वक टक्कर मार दिया। टक्कर से बाइक चालक और पीछे बैठा सवार गिर पड़ा। चालक का पैर आदि टूट गया। पीछे बैठा युवक को खरोचे आई। सूचना मिलते ही 112 डायल पुलिस बाइक चालक को गंभीर दशा में नगपुर अस्पताल ले गई। प्रभारी थानाध्यक्ष शिवकुमार ने घटना पहुंच जायजा लिया और बताया कि बाइक चालक गंभीर है। चार चक्का वाहन का पता लगाया जा रहा है।

एनटीपीसी की स्वर्ण जयंती वर्ष समारोह पर हुआ भव्य सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम

अम्बेडकरनगर। एनटीपीसी के 50 वर्षों की सफलता के उपलक्ष्य में एनटीपीसी में 30 नवंबर को एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण बॉलीवुड के मशहूर गायक कुणाल गांजावाला की शानदार प्रस्तुति रही, जिन्होंने अपनी सुरमयी आवाज से शाम को यादगार बना दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं एनटीपीसी गीत से हुआ। इसके बाद गणपती वंदना के साथ सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आगाज हुआ। तत्पश्चात मुंबई से आए प्लैबैक सिंगर कुणाल गांजावाला ने अपने हिट गानों पर परफॉर्म कर दर्शकों

को झूमने और गुनगुनाने पर मजबूर कर दिया।

उनके हर गाने पर दर्शकों का उत्साह देखते ही बनता था। इस कार्यक्रम में एनटीपीसी के 50 वर्षों की सफलता को धूमधाम से मानते हुए सांस्कृतिक विविधता और ऊर्जा के उत्साह को दशार्या गया। कार्यक्रम में एनटीपीसी टांडा के कार्यकारी निदेशक अशेष कुमार चट्टोपाध्याय ने अपने सम्बोधन में एनटीपीसी के 50 वर्षों की सफलतापूर्वक पूर्ण होने एवं सहयोग व समर्पित भाव से योगदान देने के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जिला न्यायाधीश, जिलाधिकारी, आदरणीय पुलिस अधीक्षक, अन्य सम्मानित प्रशासनिक अधिकारी एवं विभिन्न गांवों के ग्राम प्रधान, गरिमा महिला मंडल की अध्यक्षा एवं सदस्याएं कार्यक्रम का हिस्सा बने।

इस अवसर पर उन्होंने कार्यक्रम की प्रशंसा की और एनटीपीसी के 50 वर्षों की सफलतापूर्वक पूर्ण होने की बधाई दी। उन्होंने क्षेत्र में चल रही एनटीपीसी की गतिविधियों, सीएसआर की गतिविधियों आदि की भूरी-भूरी प्रशंसा की। कार्यक्रम में एनटीपीसी के वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य मौजूद रहे। उन्होंने एनटीपीसी की सफलता में सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजनों की भूमिका पर जोर दिया।

एनटीपीसी टांडा का यह आयोजन न केवल एक सांस्कृतिक संध्या थी, बल्कि यह कर्मचारियों के बीच एकजुटता और ऊर्जा का प्रतीक बन गया। कार्यक्रम ने एनटीपीसी के कर्मचारियों को अपनी मेहनत और उपलब्धियों पर गर्व करने का एक और अवसर प्रदान किया।

मामूली विवाद को लेकर मारपीट में एससी-एसटी का केस

टांडा, अम्बेडकरनगर। मामूली कहासुनी सुनी में एक व्यक्ति की कुछ लोगों ने जमकर पिटाई कर दी,पीड़ित द्वारा दिये गये प्रार्थना पत्र में बताया की प्रार्थी फेंकूराम चमार पुत्र स्व. चैथीराम चमार निवासी ग्राम बलरामपुर थाना इब्राहिमपुर का स्थायी निवासी है।

बीते दिनों शाम करीब 7 बजे वाद विवाद हो जाने के कारण बलरामपुर दशउआँ चैराहे पर अमित पाण्डेय पुत्र रुपचन्द्र पाण्डेय, रविन्द्र पुत्र रामानन्द पाण्डेय निवासी यादवपुर थाना इब्राहिमपुर व दो अज्ञात लोगों के साथ मिलकर मुझे जातिसूचक गाली-गलौज देते हुए मारने लगे मेरे शोर मचाने पर उपरोक्त लोग जान से मारने की धमकी देते हुए चले गये। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने एससी,एसटी सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया है।

आतंक का पर्याय बने लूटेरों को गिरफ्तार कर पुलिस ने भेजा जेल

अंबेडकरनगर। महिला बाइक सवार यात्रियों अथवा चालक से सरेराह लूट छिनैती कर जनपद में आतंक का पर्याय बने दो लुटेरों को पुलिस ने घायल अवस्था में 48 घंटे के अंदर गिरफ्तार करने का दावा किया।

लूट में शामिल एक अन्य लुटेरा अभी पुलिस पकड़ से दूर है। पकड़े गए लुटेरों का कई आपराधिक इतिहास है। ये गैंगस्टर समेत अन्य कई धाराओं के आरोप में कई बार जेल की हवा खा चुके है। इनके कब्जे से लूटे गए सोने के आभूषण आदि तो बरामद नहीं किया जा सका किंतु आभूषण बिक्री से आई

रकम को दिखाया गया है। विदित हो कि चार दिन पहले जलालपुर कोतवाली के बाबा बरुवा दास पीजी कॉलेज की शिक्षिका के साथ जलालपुर मालीपुर मार्ग पर विद्यालय के नजदीक पीछे से अपाची बाइक से पहुंचे दो अज्ञात लुटेरों ने स्कूटी के हैंडल में टांगी गई पर्स को लूट फरार हो गए थे। इसी के दूसरे दिन टांडा कोतवाली

दिनदहाड़े शिक्षिका और महिला से पर्स लूट को अंजाम दे चुके हैं शातिर अपराधी

से इलाज कराकर बाइक से लौट रहे बसखारी थाना के दरगाह किछौछा निवासी हयात मोहम्मद उर्फ फिरोज टेलर्स की पत्नी का पर्स लूट लिया था।

लूट के दौरान ही महिला हाइवे पर गौरा गुजर गांव के पास सड़क पर गिर गई थी और गंभीर रूप से घायल हो गई थी। जिसका इलाज आज भी ट्रामा सेंटर लखनऊ में जारी है। दोनों घटनाओं में सफेद रंग की अपाची बाइक कामन थी। दो दिन के अंदर दिनदहाड़े हुई दो महिलाओं के साथ लूट जहां पुलिस के लिए चुनौती बन गई थी वहीं आभूषण पहन कर महिलाएं बाइक से आने जाने पर भयभीत थी।

पुलिस अधीक्षक डॉ. कौस्तुभ के निर्देश पर एसओजी और टांडा पुलिस टीम ने सीसी टीवी फुटेज के आधार पर लुटेरों की तलाश शुरू किया और रविवार की सुबह सफलता मिल गई। पकड़े गए आरोपियों की पहचान जलालपुर कोतवाली के शाहपुर फिरोजपुर निवासी टाइगर उर्फ जुगनू पुत्र नन्हे और राहुल लोना पुत्र चंद्रभान को पुलिस ने 8:35 बजे नेशनल हाईवे मार्ग से गिरफ्तार कर लिया।

तीसरा आरोपी आजाद लोना पुत्र कृष्ण कुमार पुलिस पकड़ से दूर है। शिक्षिका से लूटे गए आभूषण की बिक्री से मिले 5 हजार और बीमार महिला की पर्स से लूटे गए 4 हजार रुपए पुलिस ने बरामद किया। शिक्षिका का मोबाइल नहर में और दोनों महिलाओं का पर्स झाड़ झंखाड़ में फेंकने की बात लुटेरों ने कबूल किया।

कुकिंग प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को बीडीओ वर्षा सिंह ने किया सम्मानित

महराजगंज-रायबरेली। भारत सरकार एवं पेट्रोलियम विभाग द्वारा महराजगंज कस्बे के रायबरेली रोड स्थित अदिती इंडेन गैस एजेंसी परिसर में खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह की अध्यक्षता में दो दिवसीय कुकिंग कंपटीशन का आयोजन किया गया। इसके पहले दिन चार प्रतिभागियों ने कुकिंग कंपटीशन में हिस्सा लिया, जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्थान पर आये प्रतिभागियों को श्वर्षा सिंहष् ने पुरस्कृत किया। भारत सरकार व पेट्रोलियम विभाग द्वारा गैस कैसे बचाई जाए व लोगों को कैसे राहत मिल सके के साथ-साथ अचानक घटने वाली घटनाओं से बचाव हेतु सरकार द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए प्रत्येक गैस एजेंसी के प्रबंधक को निर्देशित किया है। कुकिंग प्रतियोगिता के माध्यम से लोगों को गैस बचाने व अनेक प्रकार के उपायों का सुझाव लिया जाए व उन लोगों को जागरूक भी किया गया, जिससे की उचित मात्रा में गैस का उपयोग किया जाए। इसी के तहत आज इंडेन गैस एजेंसी महराजगंज में कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजित प्रतियोगिता में वशीमा खान शांति नगर महराजगंज प्रथम, सिम्मी सिंह नारायणपुर मोन द्वितीय व कोमल सिंह नरई तृतीय और चतुर्थ स्थान आरती सिंह डीहा नरई रही, जिन्हें कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह ने पुरस्कृत किया। अपने संबोधित में खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह ने कहा कि, भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही इस योजना के तहत हमारी माताएं-बहने एकजुट होकर इस योजना का लाभ उठाएं तथा गैस से बचाव के उपाय सीखें। किस प्रकार किस मात्रा में खाना बनाते समय कितनी गैस का उपभोग किया जाए यह जानना नितांत आवश्यक है। कार्यक्रम के आयोजक गैस एजेंसी के प्रबंधक महेंद्र प्रताप सिंह ने उपस्थित अधिकारियों व प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर ए0पी0ओ0 मनरेगा राजीव त्यागी, पप्पन गैस एजेंसी की प्रोपराइटर अनीता सिंह बछरावां, सुयश गैस एजेंसी से जितेंद्र जायसवाल, वरुना गैस एजेंसी से मोहम्मद रईस, भाजपा महिला मोर्चे की जिला अध्यक्ष सुधा अवस्थी, सुनील शर्मा, बबलू सिंह, मोहम्मद रिजवान, लक्ष्मी, जगन्नाथ, सुरेश, सुमन, गोमती, देशराज, अभिमन्यु सिंह, डॉ माता फेर सिंह, रेखा देवी, राधा देवी सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

मीटिंग का बहाना बनाकर कार्यालय से गायब रहते है ईओ नसीराबाद

अनुपस्थित होने के कारण कई आवश्यक फाइलें व कार्य अधर में लटके

नसीराबाद-रायबरेली। नगर पंचायत नसीराबाद के ईओ दिनेश कुमार सिंह नगर कार्यालय से आए दिन अनुपस्थित रहने के कारण विकास की फाइल पेंडिंग पड़ी है और जनहित के कार्य भी बंद है और कार्यालय में मौजूद सरकारी कई वाहन भी खराब हो चुके हैं ईओ के ईस रवैया से नगर पंचायत अध्यक्ष मोहम्मद अली फाकिर ने लिखित में ईओ के लिए संदेश दिया है कि आप के द्वारा कार्यलय से आए दिन अनुपस्थिति होना ठीक नहीं है अगर आप के द्वारा ऐसा किया जा रहा है तो लिखित में अनुपस्थित रहना होगा क्योंकि नियम सभी के लिए है अध्यक्ष का कहना है कि ईओ की अनुपस्थित के कारण आगे का काम नहीं हो पा रहा है कार्यालय के कर्मचारी बताते हैं कि साहब आए दिन मीटिंग का बहाना बना कर अक्सर कार्यलय से गायब रहते जिससे जनहित के कार्य प्रभावित है वही नगर में कूड़ा कलेक्शन करने वाली गाड़ी की बैट्री काफी दिनों से खराब पड़ी है नगर की आठ गाड़िया खराब हो गयी जिससे कार्य प्रभावित हो रहे है किसी मे बैट्री खराब है तो किसी का क्लेचप्लेट ।वही ईओ रात्रि विश्राम भी नही करते जिससे नगर वासियो को काफी समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है।

महराजगंज प्रीमियर लीग के उद्घाटन मैच पर स्पिटन स्काड और हसनगंज क्रिकेट क्लब का रहा दबदबा

महराजगंज-रायबरेली। बावन बुजुर्ग बल्ला के बबुरिहा मैदान पर महराजगंज प्रीमियर लीग का उद्घाटन मैच धमाकेदार रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत सदस्य, चेयरमैन प्रतिनिधि व भाजपा नेता प्रभात साहू एवं विशि अतिथि कस्बे के अग्रणी व्यवसायी व सपा नेता सुधीर साहू ने फीता काटकर किया। तदोपरांत खिलाड़ियों का परिचय जाना, उसके बाद दोनों नेताओं ने बारी बारी पिच पर खड़े होकर पहली ही गेंद पर चौका मारा। इसी के साथ ग्राउंड पर मौजूद दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा मैदान गूंजायमान हो गया।महराजगंज प्रीमियर लीग क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच आज रविवार को चार टीमों के बीच दो पारियों में बावन बुजुर्ग बल्ला के बबुरिहा मैदान पर खेला गया। प्रतियोगिता के उद्घाटन मैन के पहले दिन कुल दो मैच खेले गए। पहला मैच ब्लैक मुंबा और स्पिन स्काड लखनऊ के बीच खेला गया। जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए ब्लैक लंबा ने निर्धारित 10 ओवरों में 91 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करने मैदान पर उतरी स्पिटन स्कायड ने 6 ओवरों में ही मैच को जीत लिया। इस मैच के हीरो सुफियान बने, जिन्होंने धुआंधार बल्लेबाजी करते हुए 56 रन बनाए और दो विकेट भी लिए। महाराजगंज प्रीमियर लीग का दूसरा मैच ताहिर क्रिकेट क्लब और हसनगंज क्रिकेट क्लब के बीच खेला गया। पहले बल्लेबाजी करते हुए हसनगंज की टीम ने निर्धारित 10 ओवर में 103 रन बनाए। जबाब में लक्ष्य का पीछा करने मैदान पर उतरी ताहिर क्रिकेट क्लब की टीम अंत तक डटी रही और मात्र दो रन से यह मैच हार गई। इसी के साथ दूसरा उद्घाटन मैच हसनगंज क्रिकेट क्लब ने जीत लिया। इस मैच के हीरो रसीद रहे, जिन्होंने 46 रनों का योगदान दिया। इस मौके पर कमेटी के मेंबर ऋषभ वर्मा, राजमणि सिंह, राजवीर सिंह, अर्पित अवस्थी, अर्पित वर्मा, समेत बड़ी तादाद में खेल प्रेमी मैदान पर अंत तक डटे रहे और खिलाड़ियों का तालियों की करतल ध्वनि से उत्साहवर्धन करते रहे।

पिकप की टक्कर से घायल अधेड़ की मौत

रायबरेली। अपने घर से दवा लेने जा रहे एक 59 वर्षीय व्यक्ति को अज्ञात पिकअप ने टक्कर मार दी, जिस व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। सुबह जब सौंच क्रिया के लिए गए लोगों ने देखा तो घायल अवस्था में अधेड़ को एंबुलेंस द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महराजगंज ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने नब्ज़ देखते ही मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। कोतवाली पुलिस द्वारा परिजनों को दूरभाष पर घटना की जानकारी दी गई, जिसके बाद परिजन कोतवाली पहुंचे। एक दिन पहले सुबह लगभग 5 बजे थाना फुरसतगंज जिला अमेठी के पूरे हींगा।

खो खो और कबड्डी प्रतियोगिता में छात्र छात्राओं ने जीती ट्राफी

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले में लहरपुर क्षेत्र की द मिलेनियम एकेडमी के छात्र-छात्राओं ने खो-खो और कबड्डी प्रतियोगिता में विनर बनकर ट्रॉफी जीती।जनपद खीरी के हरपाल सिंह मेमोरियल अकेडमी सिकंदराबाद गोला में आयोजित सेकंड कार्निवल में मिलेनियम एकेडमी विद्यालय के छात्राओं ने अंडर चौदह गर्ल्स खो खो और अंडर चौदह बवॉयज कबड्डी प्रतियोगिता में विद्यालय का परचम फहराते हुए रनर ट्रॉफी अपने नाम करते हुए कीर्तिमान बनाया। विद्यालय के छात्र अर्श खां,फरमान खां,हर्षित, शिवांश, प्रशांत,मो. शोएब, आयुष,शोभित,आशीष,आशुतोष,मुकेश पुष्कर मो. आबिद गैद,को खो गर्ल्स में अंशिका,अनामिका,फिर दौस,रुबा,दिव्या,मुस्कान वर्मा,अलीरा,हमना,सौम्या, खुशमन,सुरी,आरुषि मुस्कान ने कबड्डी और खो खो प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए रनर ट्रॉफी जीत कर विद्यालय का नाम रोशन किया।विद्यालय के डायरेक्टर तरनजीत सिंह ने खेल प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले सभी छात्र छात्राओं का उत्साह वर्धन किया। विद्यालय के पी.टी.आई मोबीन अहमद,आकांक्षा कशिश गुप्ता सरजीत सिंह, आकाश शुक्ला,नौशाद, अमित मिश्रा,नीरज शुक्ला व अन्य शिक्षकों ने खेलों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

खेत जोतने को लेकर हुए विवाद में दर्ज हुई प्राथमिकी

तीसरा विकल्प न्यूज़- संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की लहरपुर कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में खेत जोतने को लेकर हुए विवाद में स्थानीय थाने में प्राथमिक की दर्ज कर ली गई है। जानकारी के अनुसार जिले की लहरपुर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम पिपरिया में खेत जोतने को लेकर हुए विवाद में हुई मारपीट के बाद पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया। बताने के अनुसार श्यामू पुत्र राम किशोर निवासी ग्राम लुधौनी थाना खमरिया जनपद खीरी ने लहरपुर कोतवाली पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया है कि प्रार्थी पिपरिया में वह जीवन फॉर्म में काम करता है विगत सताइस नवंबर को पीड़ित अपने सहयोगी लखविंदर सिंह के साथ फार्म में खेत जुताई करवा रहा था इतने में प्रद्युमन पुत्र अज्ञात व उनके तीन अज्ञात साथी निवासी पिपरिया लाठी-डंडा लेकर आ गए और कहने लगे खेत जोतने से मना किया और लाठी-डंडों से मुझे व मेरे साथी लखविंदर को काफी मार पीटा व जान से मारने की धमकी दी। इस सम्बन्ध में कोतवाली प्रभारी विजयेन्द्र सिंह ने बताया कि प्राप्त तहरीर के आधार पर अपराध दर्ज कर कार्यवाही की जा रही है।

लायंस क्लब रघुनाथ खरकिया मेमोरियल आई हॉस्पिटल में मेघा मुफ्त नेत्र जांच एवं ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। चिरकुंडा, एक दिसंबर रविवार को रघुनाथ खरकिया के पुण्यतिथि पर आई हॉस्पिटल के अध्यक्ष जगदीश अग्रवाल ने फीता खोलकर इस कार्यक्रम का शुरुआत किये और कहे समाज के अंतिम पायदान पर रहे लोगों की आंखों की रोशनी प्रदान करने के उद्देश्य से पिछले 28 वर्षों से फ्री मेघा नेत्र जांच एवं ऑपरेशन का आयोजन किया जाता रहा है। आंखों की जांच करने के लिए सुबह से ही भीड़ उमड़ पड़ी थी, आंखों की जांच करने के लिए कुमारधुबी, निरसा ज्ञाटी के साथ साथ दुर्दराज से आंखों की जांच करने के आई हॉस्पिटल लोग पहुंचे। समाजसेवी कृष्ण लाल रुंगटा ने मेघा मुफ्त नेत्र जांच एवं ऑपरेशन शिविर पर कहे आई हॉस्पिटल की स्थापना समाजसेवी स्वर्गीय रघुनाथ खरकिया की स्मृति में हुई है। आज 53 में पुण्यतिथि पर नेत्र जांच एवं ऑपरेशन कैंप का आयोजन किया गया। 1997 से लगातार प्रत्येक वर्ष इस प्रकार की मेघा कैंप का आयोजन होते आ रहा है। सिर्फ एक मात्र उद्देश्य है जन सेवा।

शिकायत लेकर बैंक पहुंचे किसान को प्रबंधक ने दिखाय बाहर का रास्ता

नसीराबाद-रायबरेली। थाना क्षेत्र के एक किसान ने बैंक कर्मचारियों पर आरोप लगाया है कि किसानों के खाते बैंक खुद संचालित कर रहे हैं। उनकी बिना सहमति के बचत खाते से पैसा केसीसी में और फिर केसीसी से बचत खाते में डाल दिया गया। कर्ज माफी न होने की किसानों की शिकायतों की पड़ताल में बैंकों की ऐसी ही कई खामियां सामने आ रही हैं।ऐसा ही एक मामला बैंक ऑफबड़ौदा शाखा बिरनांवा का प्रकाश में आया है।रायपुरटोड़ी निवासी किसान राज बहादुर पुत्र गया प्रसाद ने शनिवार को नसीराबाद थाने में लिखित तहरीर देते हुए बताया कि बैंक ऑफबड़ौदा शाखा बिरनांवा में खातेदार है। किसान का आरोप है कि बैंक कर्मियों ने बगैर उसके हस्ताक्षर और सहमति के उसका 12,5000 रूपए का लोन कर दिया।पीड़ित के खाते में पैसा आने पर जब उसको जानकारी हुई तो पीड़ित बैंक गया।जहां मैनेजर ने पीड़ित किसान की बात को सुनने और उसका समाधान करने के बजाय पीड़ित को गेट से बाहर निकलवा दिया। फिलहाल पीड़ित किसान ने थाने में तहरीर देते हुए कार्यवाही की मांग की है।वहीं पुलिस का कहना है कि तहरीर मिली है जांच कर कार्यवाही की जाएगी।

दीवानी स्थित लॉकअप का अपर जिला जज ने किया निरीक्षण

रायबरेली। जिला जज एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रायबरेली के अध्यक्ष राजकुमार सिंह के दिशा-निर्देशन में अपर जिला जज एवं सचिव अनुपम शौर्य ने दीवानी न्यायालय स्थित लॉकअप का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मी बृजपाल वर्मा से लॉकअप में निरुद्ध बन्दियों के बाबत जानकारी ली गयी। इस दौरान अपर जिला जज/सचिव द्वारा लॉकअप में बन्दियों के मध्य जाकर लॉकअप में साफसफाई का जायजा लिया गया। लॉकअप में पर्याप्त साफसफाई नहीं पाये जाने पर सम्बन्धित को उचित साफसफाई हेतु दिशा-निर्देश जारी किये गये। लॉकअप में 53 पुरुष व 01 महिला बन्दी की निरुद्ध बताई गयी। लॉकअप में लगे कैमरों के सम्बन्ध में पूछे पर बताया गया कि वह काम कर रहे है। निरीक्षण के दौरान प्रभारी लॉकअप बाबू उपस्थित नहीं पाये गये। दौरान निरीक्षण ड्यूटी पर तैनात सुरक्षाकर्मी उचित वेश-भूषा में नहीं पाये जाने पर उनको निर्धारित पोशाक में रहने हेतु निर्देशित किया गया। लॉकअप में बन्दियों से सम्बन्धित रजिस्टर का भी अवलोकन किया गया।

छात्रों द्वारा ईंट ढोने के वायरल वीडियो को प्रधानाध्यापक ने भ्रामक बताया

महराजगंज-रायबरेली। क्षेत्र के कटरा गांव स्थित राजा जितेंद्र सिंह इंटर कॉलेज में छात्रों द्वारा ईटा डझाये जाने का वीडियो भ्रामक बताया जा रहा है, जिसको लेकर राजा जितेंद्र सिंह इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अंजनी कुमार शर्मा व शिक्षकों ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि, जिला विद्यालय निरीक्षक के निर्देश पर विद्यालय में 1 सितंबर से 02 अक्टूबर 2024 तक स्वच्छता पखवाड़ा व स्वच्छता एवं सेवा अभियान चलाया गया था। जिसके तहत विद्यालय के शिक्षक एवं छात्रों के द्वारा स्वच्छता अभियान में भाग लिया गया था। उसी समय विद्यालय में एक शिक्षण कक्ष बहुत जर्जर होने की वजह से उसके दरवाजे को बंद करने का कार्य कॉलेज के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कर रहे थे।

बीएलपीएस स्कूल के बच्चों ने लगाई विज्ञान प्रदर्शनी

हरचन्दपुर-रायबरेली। कसबा स्थित बाबू एल.पी.एस. पब्लिक स्कूल द्वारा 卐विज्ञान प्रदर्शनी卐 का आयोजन किया गया जिसमे सभी बच्चो ने बहुत ही हर्षोल्लास के साथ प्रतिभाग लिया। विज्ञान प्रदर्शनी का उदघाटन विद्यालय के विशि सलाहकार एडवोकेट विकास श्रीवास्तव के द्वारा किया गया। प्रधानाचार्या श्रीमती सपना श्रीवास्तव ने आए हुए अतिथियों व अभिभावकों का स्वागत करते हुए अतिथियों व अभिभावकों के साथ बच्चों के द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट का अवलोकन कराया। बच्चों द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट को देखकर उनकी प्रतिभा की सराहना की। जिसमें दीपक व चंदन ने सबसे अच्छा प्रोजेक्ट बनाया जिसके माध्यम से बच्चों ने वायु दाब के बारे में समझने की कोशिश की तथा लगभग सभी बच्चों ने बहुत ही सुंदर विज्ञान प्रदर्शनी के लिए प्रोजेक्ट बनाए थे परंतु उनमें से साक्षी, उमैमा, नव्या, शिक्षा, सिंह, स्तुति वर्मा, अदिति सिंह, स्वाती, अन्नपूर्णा, युवराज, तान्या मिश्रा, नूतन सिंह,रितिका साहू, रिद्धिमा सोनी, तुलसी, रुद्र गुप्ता, अनन्या जायसवाल, आर्यन आदि के प्रोजेक्ट ज्ञानवर्धक व प्रयोगात्मक थे। बाबू एल. पी.एस. पब्लिक स्कूल के अध्यापक आकाश श्रीवास्तव ने सभी छात्र व छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। विद्यालय के उपाध्यक्ष श्री अश्विनी श्रीवास्तव ने सभी बच्चों के कार्य की सराहना करते हुए प्रमाण पत्र वितरित किए। व विद्यालय के सभी बच्चो के भविश्य की विभिन्न गतिविधियों पर विशलेषण किया व आये हुए सभी सम्मानित अतिथियों व अभिभावकों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम का समापन किय।

विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता संगोष्ठी व रैली का हुआ आयोजन

बस्ती। रविवार विश्व एड्स दिवस के अवसर पर युवा विकास समिति, रूरल अवेयरनेस फॉर कम्युनिटी इवोलूशन व विवेकानंद लोक विकास संस्थान के द्वारा जागरूकता संगोष्ठी व रैली का आयोजन भानपुर नगर पंचायत क्षेत्र के पंडित दीनदयाल नगर में संपन्न हुयी। रूरल अवेयरनेस फॉर कम्युनिटी इवोलूशन अध्यक्ष नितेश शर्मा ने जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। वैश्विक एकजुटता, साझा जिम्मेदारी विषयक पर आधारित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए दिव्यांग पुनर्वास केंद्र बस्ती के मनोवैज्ञानिक राधेश्याम चौधरी ने कहा कि संक्रमित सिरिंज, रक्त या एचआइवी संक्रमित माता से संतान तक यह संक्रमण फैलता है। यह रोग शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर देता है। जिससे मरीज टीबी, कैंसर और अन्य संक्रामक बीमारियों का शिकार हो सकता है। उन्होंने कहा कि एचआइवी संक्रमण से बचने के लिए जीवनसाथी के अलावा अन्य किसी के साथ असुरक्षित संबंध न बनाएं। युवा विकास समिति के सचिव बृहस्पति कुमार पाण्डेय ने उपस्थित लोगों को बताया कि लगातार बुखार, खांसी, वजन घटना, गले या बगल में सूजन, त्वचा पर खुजली वाले चकते, थकान और भूख न लगने जैसे लक्षण एचआइवी संक्रमण के संकेत हो सकते हैं। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत जांच करानी चाहिए।

छतोह के खेल मैदान में राष्ट्रवादी पार्टी ने आयोजित विशाल जनसभा

नसीराबाद-रायबरेली। विकास खंड छतोह के खेल मैदान में ष्ट्रवादी पार्टी के द्वारा आयोजित विशाल जनसभा में टीजी बोलते हुए ष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री के संकल्प एक भारत श्रेष्ठ भारत को पूरा करने के लिए राष्ट्रवादी पार्टी आगे बढ़ रही है। नाम के साथ भारत जोड़ने की मुहिम चला रही है। पार्टी का मॉडल दस गांव का एक केंद्र दसड्डा बनाकर एक फैक्टरी कच्चे माल के उत्पादन के अनुसार स्थापित की जाएगी। जिसमें स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सकेगा।दसड्डा यानी 10 गांव की ग्राम पालिका में पुलिस चौकी, स्वास्थ्य केन्द्र आदि सारी सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। छतोह, जायस, सलोन, लालगंज आदि सभी औद्योगिक क्षेत्रों को विकसित करके रोजगार सृजित किए जाएंगे। हमारे किसी कार्यकर्ता,पदाधिकारी या मेरे नम्बर पर किसी भी समय फोन करके देखें, हम आप सभी की हर समस्या के समाधान के लिए सदा तैयार मिलेंगे। कार्यक्रम के दौरान संगठन के ऊर्जावान पदाधिकारियों में से विजय प्रताप सिंह को कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष, सुभाष मिश्र को ष्ट्रीय उपाध्यक्ष सैनिक प्रकोष्ठ, ऊदल सिंह और अशोक कुमार श्रीवास्तव को ष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा सभी मंडलों के प्रभारियों को मनोनीत किया गया। इस मौके पर ष्ट्रीय महासचिव पूनम सिंह,ष्ट्रीय प्रवक्ता विकास भारत,आयोजक ऊदल सिंह, आदित्य भारत,सूरज पांडेय, सुभाष मिश्रा, एडवोकेट हिमांशुधर सिंह, जग नारायण सिंह, कुसुम गुप्ता, डॉ. विजय प्रताप सिंह आदि लोग मौजूद थे।

विश्व एड्स दिवस पर निकाली गई रैली

हरचन्दपुर-रायबरेली। सबला संस्था द्वारा संचालित समर्थ परियोजना द्वारा विकासखंड हरचंदपुर की 4 ग्राम ग्राम सभाओ (कठवारा के नया पुरवा, गुल्लू पर की हजियापुर में, मुबारकपुर और टांडा ग्राम सभा के हंसा पूरवा) में विश्व एड्स दिवस मनाया गया जिसमें महिलाओं एवं किशोरियों के द्वारा रैली निकाली गई जिससे अन्य ग्रामीण जनों में भी इस विषय की जागरूकता फैलाई जा सके। जैसे एचआईवी क्या है एड्स क्या है इसकी क्या लक्षण है और यह कैसे फैलता है इससे क्या परेशानियां होती हैं संक्रमित व्यक्ति को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और इसी के साथ क्या करने से क्या संक्रमण नहीं फैलता है इसकी भी जानकारी दी गई इन सभी विषयों पर ध्यान देने की कोशिश हेतु यह दिन मनाया जाता है जिससे कि इस खतरनाक बीमारी से बचा जा सके और दूसरों को भी बचाया जा सके बचाव के कर्म पर विशेष ध्यान दिया गया जैसे संक्रमित सायरन से बचना चाहिए असुरक्षित यौन संबंधों से बचना चाहिए गर्भवती मां की जांच अवश्य करनी चाहिए जिससे भ्रूण को संक्रमण से बचाया जा सके इसके साथ ही रक्त के आदान-प्रदान के वक्त एचआईवी की जांच बहुत आवश्यक है क्योंकि थोड़ी सी लापरवाही हमें संक्रमण का शिकार बन सकती है इसी विषय पर जागरूकता हेतु यह दिन मनाया जाता है और बचाव के प्रयास किए जाते हैं।

ओवर लोड डम्फरों ने बिगाड़ी सड़कों की दशा, जिम्मेदार अधिकारी झाड़ रहे पल्ला

रायबरेली। प्रयाग राज में लगने वाले महाकुम्भ के चलते जिले में गंगा एक्सप्रेसवे और रायबरेली-प्रयागराज हाईवे के चौड़ीकरण कार्य तेजी से चल रहा है। इस कार्य में लगे ओवर लोड डम्फर चलाए के कारण करीब 88 सड़कें खस्ताहाल हो गई हैं। इन सड़कों की छह महीने पहले मरम्मत कराई गई थी जिनका डामर तक गायब हो गया है। जानकारी के अनुसार गंगा एक्सप्रेसवे और प्रयागराज हाईवे के चौड़ीकरण में लगी एजेंसी और जिम्मेदार विभागीय अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। सड़कों के खराब होने से ग्रामीणों को शहर व हाट बाजार जाने में काफी समस्या से दोचार होना पड़ रहा है। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि निर्माण खंड एक और दो की कुल 76 सड़कें गंगा एक्सप्रेसवे के निर्माण में मिट्टी ढोने वाले डंपरों ने खराब कर दिए हैं। इसके साथ में ग्रामीण अभियंत्रण विभाग की 14 सड़कें भी पूरी तरह से खराब हो गईं हैं। खीरों, डलमऊ और ऊंचाहार, जगतपुर क्षेत्र में सबसे ज्यादा सड़कें प्रभावित हुईं हैं।

बिना फायर एनओसी के जिले में संचालित हो रहे है कुछ होटल व रेस्टोरेंट

❑कुछ ही अस्पतालों व होटलों में मिल सकती है फायर किट व एनओसी

रायबरेली। जनपद में अकसर देखने को मिलता है कि इस होटल में आग लग गयी उस होटल में आग लग गयी किन्तु इन घटनाओं से होटल व रेस्टोरेंट के मालिक सबक नही लेते है। जब घटना घट जाती तब फायल बिग्रेड व स्थानीय प्रशासन नींद से जागता है। इसे जागरूकता की कमी कहें या फिर होटल मालिकों की लापरवाही, हादसों के बावजूद यहां सबक नहीं लिया जाता है। शहर में फायर एनओसी लिए बिना ही लगभग 65 से अधिक होटल-गेस्ट हाउस धड़ल्ले से चल रहे हैं। शहर के एक प्रतिष्ठित होटल के किचन में आग लगने की घटना के बाद मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने होटल व गेस्टहाउस संचालकों को नोटिस देकर जवाब मांगा है। सभी को आग से निपटने के सुरक्षा मानकों को पूरा कराने के आदेश दिए हैं। इसके अलावा एनओसी लेने के निर्देश भी दिए गए हैं। शहर में वर्तमान समय में करीब 20 होटल, 45 गेस्ट हाउस संचालित हैं। इसमें पांच या छह ही ऐसे हैं जिन्होंने फायर की एनओसी ले रखी है। बाकी बिना फायर विभाग की एनओसी के संचालित हैं। यहां आग से बचाव के पुख्ता इंतजाम नहीं हैं। शहर के मुख्य मार्गों पर होटल, मॉल, निजी अस्पताल ऐसे हैं, जो दो मंजिला भवन में संचालित हो रहे हैं। इनमें आग बुझाने के पुख्ता इंतजाम नहीं है। कई ऐसे होटल और गेस्ट हाउस भी हैं जिनका संचालन संकरी गलियों में हो रहा है। यहां पर पार्किंग समेत अन्य जरूरी सुविधाओं का ध्यान नहीं रखा गया है। होटल में आग लगने के बाद मुख्य अग्निमशन अधिकारी ने संबंधित होटलों व गेस्ट हाउस के संचालकों को नोटिस देकर मानक पूरा कराने के आदेश दिए हैं।

रोड हादसे में दो युवक घायल, जिला अस्पताल रेफर

महराजगंज-रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के चंदापुर गांव के पास दो पहिया और अज्ञात चार पहिया की आमने-सामने की भिड़ंत में दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। ग्रामीणों की मदद से घायलों को एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महराजगंज पहुंचाया गया, जहां पर हालत नाजुक देख चिकित्सक एसके राय ने दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। कोतवाली क्षेत्र के चंदापुर गांव के पास अज्ञात चार पहिया वाहन महराजगंज की ओर आ ही रहा था तभी महराजगंज की तरफसे जा रहे मोटरसाइकिल सवार दोनों युवक रिंकू (17) पुत्र राम बहादुर निवासी ग्राम पुरासी थाना शिवगढ़ व शुभम (18) पुत्र संतोष निवासी ग्राम पुरासी थाना शिवगढ़ की बाइक और चार पहिया की आमने-सामने भिड़ंत हो गई जिसमें मोटरसाइकिल चालक व उस पर बैठा युवक को गंभीर चोटें आई हैं। घायल अवस्था में ग्रामीणों की मदद से एंबुलेंस से इलाज के लिए दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां हालत नाजुक देख दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

जिला कारागार के पुलिस कर्मियों की लापरवाही से चली गयी एक बंदी की जान

➲ अगर बंदी अवसाद व तनाव से ग्रसित था तो मेडिकल चेकप होना चाहिये

रायबरेली। दो दिन पूर्व जिला कारागार में निरुद्ध बंदी का संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी पर लटकता शव मिला था। आपको बता दें कि घटना से पूर्व मृतक बंदी ने जिला कारागार के पीसीओ से अपने पिता से बात की थी। इस बातचीत की रिकॉर्डिंग सुनने से ज्ञात हुआ कि मृतक बंदी बेल नहीं हो पाने से अपने परिवारी जनों से क्षुब्ध था जिसके चलते उसने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। जेल अधीक्षक अमन कुमार सिंह ने बताया कि मृतक विचाराधीन बंदी वारिस राईन कुंजडा पुत्र आरिफ बाबा निवासी मोहल्ला कंचाना कस्बा व थाना जायस रायबरेली डी0पी एक्ट थाना मोहनगंज, अमेठी में 07 नवम्बर 2019 से विचाराधीन बंदी के रुप में निरुद्ध था। इस मृतक बंदी का वाद सक्षम न्यायालय एफ0टी0सी प्रथम, रायबरेली के समक्ष निस्तारण हेतु लम्बित रहा। पिछले पाँच वर्षों में मृतक बंदी का रहन-सहन, कार्य, व्यवहार संतोष जनक रहा है तथा कभी भी अवसाद ग्रसित नहीं लगा। मृतक बंदी द्वारा 28 नवम्बर 2024 की सायंकाल 16.25 बजे कारागार पी0सी0ओ0 से अपने पिता (आरिफ बाबा) से बातचीत की गयी थी जिसकी कॉल रिकार्डिंग भी कारागार को प्राप्त है। जेल अधीक्षक ने बताया सायंकाल बंदी गणना करने के दौरान एक बंदी (वारिस राईन कुंजड़ा) कम पाये जाने पर कारागार प्रशासन द्वारा फौरी तौर पर सी0सी0टी0वी0 कैमरों को चेक कराया गया। जेल लाकिंग के समय 01 नफर बंदी गणना में कम पाये जाने पर इसकी सूचना मुख्य चीफ हेड वॉर्डर द्वारा जेलर हिमांशु रौतेला को फोन दी गयी। कारागार स्थित कण्ट्रोल रुम में स्थापित सी0सी0टी0 कैमरों की जाँच होने पर पता चला कि 28 नवम्बर 2024 को बंदी (वारिस राईन कुंजड़ा) सायंकाल कारागार पी0सी0ओ0 द्वारा अपने परिजनों से बातचीत कर के सर्किल में गया तथा पुनः सायंकाल सर्किल से निकल कर गिर्दा गेट होते हुए कारागार चिकित्सालय की तरफ जाते देखा गया। खोजबीन के दौरान जेलर, हिमांशु रौतेला के नेतृत्व में तलाशी दस्ते को सायंकाल बजे अन्दर कमान में बनी दीवानी के पास नीम के पेड़ से सिर पर बंधे हुए मफलर को फांसी का फंदा बना गले में डाल कर लटका हुआ मिला। कारागार में घटित घटना की सूचना जेलर हिमांशु रौतेला द्वारा तुरन्त ही जेल अधीक्षक एवं कारागार चिकित्सक को अपने सी0यू0जी0 नम्बर द्वारा प्रदान की गयी। सूचना पाकर देर शाम मौके पर पहुँचे कारागार चिकित्सक सुनील अग्रवाल द्वारा परीक्षणोपरान्त इस बंदी को मृत घोषित कर दिया गया। विचाराधीन बंदी वारिस राईन कुंजड़ा द्वारा अत्महत्या कारित किये जाने की घटना की जानकारी जेल अधीक्षक द्वारा विभागीय उच्चाधिकारियों एवं जनपदीय अधिकारियों तथा फोरेंसिक टीम को प्रदान कर दी गयी। नायब तहसीलदार सदर तेजस्वी त्रिपाठी व इंस्पेक्टर कोतवाली नगर रायबरेली राजेश सिंह द्वारा घटना स्थल व शव का निरीक्षण फोरेंसिक टीम के साथ किया। मौके पर पहुँची फोरेंसिक टीम द्वारा आवश्यक साक्ष्य, फोटो वीडियोग्राफी करायी गयी। बंदी की मृत्यु की सूचना उसके परिवारीजनों को कारागार के पत्र एवं दूरभाष के माध्यम से दी गयी थी। बंदी की मृत्यु की सूचना रेडियोग्राफद्वारा ष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, उत्तर प्रदेश मानवाधिकार आयोग तथा शासन को प्रेषित की गयी। अधीक्षक द्वारा बताया गया कि इस कार्यालय द्वारा न्यायिक जॉच हेतु मजिस्ट्रेट नामित करने के लिए माननीय जनपद एवं सत्र न्यायाधीश, रायबरेली से अनुरोध किया गया है। सी0सी0टी0वी0 फुटेज में पाया गया कि गिर्दा कमान ड्यूटी में तैनात हेड जेल वॉर्डर कमलेश कुमार तथा कमान प्रभारी जेल वॉर्डर अनुज राजवंशी द्वारा बंदी वारिस राईन कुजड़ा की गतिविधियों पर पैनी नजर नहीं रखी गयी जिस कारण उसे अस्पताल की तरफजाने मौका मिल गया। हेड जेल वॉर्डर कमलेश कुमार तथा जेल वॉर्डर अनुज राजवंशी द्वारा अपनी ड्यूटी के प्रति घोर लापरवाही अनुशासन हीनता तथा कर्तव्यों की उपेक्षा की गयी। इस कार्यालय द्वारा हेड जेल वॉर्डर कमलेश कुमार के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही किये जाने हेतु वरिष्ठ अधीक्षक, आर्दश कारागार लखनऊ से अनुरोध किया गया तथा अनुज राजवंशी जेल वॉर्डर को निलम्बित कर अनुशासनिक कार्यवाही की संस्थित किये जाने की संस्तुति प्रेषित की गयी है।

कोतवाली प्रभारी ने होमगार्ड जवान को प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

महराजगंज-रायबरेली। विगत माह की भांति इस माह भी 1 दिसंबर 2024 को लोगों के प्रति अच्छा कार्य व्यवहार, अच्छी ड्यूटी एवं साफ सुथरा वर्दी से प्रभावित होकर कोतवाली प्रभारी जगदीश कुमार द्वारा होमगार्ड के जवान जगदीश प्रसाद को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्लाटून कमांडर इंद्रमणि सिंह चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि, महीने की 1 तारीख को एक महीने के बेहतर कार्य व्यवहार, साफ सुथरा वर्दी तथा समय से ड्यूटी करने के मामले में कोतवाली प्रभारी द्वारा हर महीने एक व्यक्ति को सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में आज 1 दिसंबर को कोतवाली परिसर महराजगंज में होमगार्ड जगदीश प्रसाद को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा होमगार्ड के जवान जगदीश प्रसाद के सेवानिवृत्त होने पर कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव ने अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया और उनके उज्जवल भविश्य की कामना की। इस मौके पर बीओ राजेश कुमार राय, पीसी रमेश मौर्य, रमापति बाजपेयी, राजेश कुमार सिंह, राम प्रताप यादव, राजेश सिंह, रामदास यादव, सतीश प्रताप सिंह, शिवकरण यादव, मुकेश कुमार यादव, रामराज यादव, लाल मोहम्मद, दिनेश सिंह, पीसी इंद्रमणि सिंह, रामकुमार सिंह, जगदेव मिश्रा, राम भुवन सिंह, धर्मदास, छेदीलाल, रामकुमार यादव, रामजस मौर्य, ईशा मोहम्मद समेत पुलिस विभाग के एसआई दिनेश गोस्वामी, एसआई रवि पवार, दीवान अजय चौधरी, धर्मेंद्र पांडेय आदि मौजूद रहे।

आम जिंदगी से जुड़ी फिल्मों की तलाश

करीना कपूर

बॉलीवुड में ढेरों ऐसी फिल्में बनी हैं, जो तार्किक या निजी सच्ची घटनाओं पर आधारित रही हैं। इसलिए अक्सर ऐसी कई फिल्में रिलीज के बाद विचार-विमर्श का विषय बन जाती हैं। दूसरी ओर पौराणिक और ऐतिहासिक फिल्में अक्सर अपने सब्जेक्ट की वजह से अपने प्रदर्शन के पहले से ही स्वतः चर्चा का विषय बन जाती हैं। बात ज्यादा पुरानी नहीं है, जब रामायण पर आधारित प्रभास की मुख्य भूमिका से सजी फिल्म 'आदिपुरुष' के कथासार को दर्शकों ने बेहद ऊट-पटांग माना था। और यह किसी एक फिल्म की बात नहीं थी। जानिये, इसी तरह की फिल्मों के कुछ नए-पुराने संदर्भकृ

बिमल राय का सुझाव

वर्षों पहले की बात है। प्रख्यात फिल्मकार बी.आर. चोपड़ा और उनके निर्देशक भाई यश चोपड़ा उन दिनों अपनी पहली मल्टीस्टार 'वक्त' के निर्माण की तैयारी कर रहे थे। 'वक्त' के तीनों भाई के किरदार में उन्होंने राज, शम्मी और शशि को कास्ट करना लगभग फाइनल कर लिया था। इसी बीच अचानक फ्लाइट में दोनों भाइयों की मुलाकात दिग्गज फिल्मकार बिमल राय से हुई। बातों की रौ में बीआर ने उन्हें 'वक्त' की तैयारी की बात बताई। जब बिमल दा को पता चला कि तीन भाइयों की मुख्य भूमिका में चोपड़ा असल जीवन में भाई राज, शम्मी और शशि को साइन करने वाले हैं, तो उन्होंने बीआर को सुझाव दियाकृ ऋ कास्टिंग थोड़ा मिसफिट लगता है। दर्शकों को बहुत सहज नहीं लगेगा।ऋ बीआर बिमल दा की बात समझ गए और इरादा बदल दिया। इसके बाद उन्होंने राजकुमार, सुनील दत्त और शशि कपूर को लेकर यह फिल्म बनाई जो हिट रही।

चूक गए रोहित शेट्टी

फिल्म निर्माण में छोटी-छोटी बातों की बारीकी से काट-छांट करनी पड़ती है। आप किसी रोल में किस कलाकार का चयन कर रहे हैं, दर्शक इसका गहराई से अध्ययन करते हैं। हाल में आई डायरेक्टर रोहित शेट्टी की 'सिंघम रिटर्न' की विफलता इस बात की ताजा मिसाल है। माता सीता हरण की कहानी को इसमें आधुनिक संदर्भों में पेश किया गया। मगर लचर स्क्रिप्ट व निर्देशन के चलते, इस फिल्म के साथ दर्शक जुड़ाव महसूस नहीं करते हैं। सीता का रोल प्ले करने वाली करीना और रावण का मुख्य पात्र करने वाले अर्जुन कपूर दर्शकों के साथ तारतम्य बिठा नहीं पाते हैं।

टार्गेट पर पौराणिक सब्जेक्ट

पौराणिक सब्जेक्ट की बड़ी मुश्किल यह होती है कि दर्शक ऐसी फिल्मों की अतिशयोक्ति को एक हद तक ही कबूल करता है। वह चाहे रामायण की सीता हो या लक्ष्मण आदि के किरदार , दर्शक ऐसे पात्रों के साथ शुरू से ही तारतम्य जोड़ने की कोशिश करते हैं। और जब यह अभिनीत किरदार उन्हें बहुत मिसफिट लगते हैं, तो वह उसे बहुत देर तक बर्दाश्त नहीं करते हैं। अभी कुछ माह पहले सोनी की मेगा सीरीज 'रामायण' को कुछ दिनों बाद ही छोटे परदे पर दम तोड़ना पड़ा। दर्शकों ने अपने रिस्पांस से जता दिया कि रामायण के नाम पर ऐसे किसी अतार्किक घटनाओं वाले सीरियल को बर्दाश्त नहीं करते हैं। इसी तरह रामायण के एक अध्याय 'सीताहरण' पर बनी फिल्म 'आदिपुरुष' की विफलता के बारे में कोई चर्चा करना है। दरअसल, दर्शक सब्जेक्ट की लिबर्टी की बात को समझते हैं, मगर इसके साथ इसके मूल भावना में कोई बड़ा उलटफेर झट पकड़ लेते हैं। मगर चूंकि इसकी प्रस्तुति में कल्पनाशीलता के नाम पर काफी लिबर्टी ली जा सकती है, इसलिए कई फिल्मकारों को इसकी कुछ घटनाएं बहुत आकर्षित करती हैं। मगर इसमें कई प्रश्न खड़े होने की संभावना ज्यादा रहती है।

हिट रहे विधु चोपड़ा

इसके विपरीत रियलिस्टिक सब्जेक्ट हमेशा डिमांड में रहते हैं। असल में सेल्यूलाइड पर असल जिंदगी को देखने का एक अलग चार्म रहता है। बस इसके लिए जरूरत होती है एक काबिल निर्देशक की। पिछले दिनों बहुत ही खामोशी के साथ 'बारहवीं फेल' बनाने वाले निर्देशक विधु विनोद की सफलता तो यही दर्शाती है। आईपीएस की परीक्षा टॉप करने वाले एक युवक के असीमित संघर्ष की कहानी को उन्होंने बहुत ही सीधे-सादे ढंग से एक फिल्म का रूप दिया। इसका रिस्पॉन्स भी उन्हें बहुत जोरदार मिला।

फिल्मकार की बड़ी जिम्मेदारी

मगर आज के सफल निर्देशक इस तरह की जिम्मेदारी से बचते हैं। बस, कुछ नए-नए निर्देशक ऐसे सब्जेक्ट को लेकर बेहद उत्साहित हैं। वरना पुराने दौर में बिमल राय, ऋत्विक घटक, हृषिकेश मुखर्जी, राजेंद्रसिंह बेदी और बासु चटर्जी जैसे काबिल निर्देशक ऐसे सब्जेक्ट पर बहुत मेहनत करते थे। इसलिए वह ऐसी कहानी का चयन करते थे, जिसमें जीवन से जुड़ी कुछ बातें दर्शकों को पेश की जा सकें। यही वजह थी कि आनंद, बावर्ची, कोशिश, दस्तक, छोटी-सी बात जैसी दर्जनों उम्दा फिल्में दर्शकों को मिलती रही। पर अब यदा-कदा ही कश्मीर फाइल्स, बारहवीं फेल जैसी आम जिंदगी की कटु सच्चाई से भरी फिल्में देखने को मिलती हैं।

हाल ही में एआर रहमान ने अपनी पत्नी सायरा बानो से तलाक लिया है। इसके कुछ घंटे बाद ही रहमान की टीम मेंबर मोहिनी डे ने भी पति से अलग होने का ऐलान कर दिया। जैसे ही खबर सामने आई तभी से सोशल मीडिया पर रहमान और मोहिनी को लेकर अफवाहे उड़ रही है। इस पर बेटे ने दिया रिएक्शन।

बॉलीवुड इंडस्ट्री के मशहूर म्यूजिक डायरेक्टर एआर रहमान ने शादी के करीब 29 साल बाद अपनी पत्नी सायरा बानो से तलाक लिया है। जैसे ही रहमान ने तलाक ऐलान किया वैसे ही सोशल मीडिया पर सुर्खियों में आ गए। इस खबर ने रहमान के फैंस को काफी झटका लगा। एआर रहमान के तलाक के खबरों के बीच, उनकी टीम मेंबर मोहिनी डे ने भी अपने पति से तलाक का ऐलान कर दिया। जिसके बाद से ही सोशल मीडिया पर हलचल मच गई है। अब दोनों को लेकर अफवाहें उड़ने लगी है। अब लोगों कह रहे है कि एआर रहमान ने मोहिनी की वजह से अपनी पत्नी से तलाक लिया है। इस पर एआर रहमान के बेट अमीन का रिएक्शन आ गया है।

रहमान के बेटे ने शेयर किया स्क्रीनशॉट

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एआर रहमान के बेटे अमीन ने पिता और उनकी मैनेजर मोहिनी डे को लेकर एक स्क्रीनशॉट शेयर किया, इस पर उन्होंने लिखा कि, उनके बीच कोई कनेक्शन नहीं है। इसके साथ ही अमीन ने एक लंबा-चौड़ा, नोट लिखकर इन खबरों पर नाराजगी व्यक्त की।

लिख डाला लंबा-चौड़ा नोट

अमीन रहमान ने लिखा- %मेरे पिता एक महान व्यक्ति हैं, न केवल उनके अविश्वसनीय योगदान के लिए, बल्कि उन मूल्यों, सम्मान और प्यार के लिए जो उन्होंने कई सालों से कमाया है। झूठी और बेबुनियाद अफवाहे फैलते देखना निराशाजनक है। हम सभी को किसी के जीवन और विरासत के बारे में बोलते समय सच्चाई और सम्मान के महत्व को याद रखना चाहिए। प्लीज ऐसी गलती जानकारी को फैलाने या इसका हिस्सा बनने से बचें। उनकी गरिमा के साथ हम सभी पर इन चीजों का जो प्रभाव रहा, उसे भी सहज कर रखें।%

पहली फिल्म से कार्तिक को निकलवाना चाहती थीं उनकी मां

कार्तिक आर्यन ने 2011 में फिल्म प्यार का पंचनामा से बॉलीवुड डेब्यू किया था। इससे पहले उन्होंने फिल्मी दुनिया में ब्रेक पाने के लिए बहुत स्ट्रगल किया था। हालांकि ये बात कार्तिक की फैमिली को पता नहीं थी। पहली फिल्म का ऑफर मिलने के बाद कार्तिक ने कॉल करके मां को यह गुड न्यूज दी थी। एक तरफ जहां वो खुशी से रो रहे थे, तो दूसरी तरफ उनकी मां फिल्मों में आने के बारे में सुनकर घबरा गईं। यहां तक कि उन्होंने फिल्म के डायरेक्टर लव रंजन से कार्तिक को फिल्म से निकाल दिए जाने के लिए भी रिक्वेस्ट किया था। ताकि वो अपनी पढ़ाई पर फोकस कर सकें। गैलाटा इंडिया के साथ बातचीत में कार्तिक की मां माला तिवारी ने कहा, 'उसने (कार्तिक) अपने सिलेक्शन के बाद मुझे फोन किया। वो खुशी से रो रहा था। उसने कहा- मम्मी, मैंने आपसे झूठ बोला था। मैं फिल्मों में आने के लिए मुंबई आया था। इस पर मैंने कहा- मैंने तुम्हें अपनी डिग्री पूरी करने और लाइफ में सेटल होने के लिए भेजा था, तुम फिल्मों में क्यों आओगे? मैं भी रोने लगी थी। फिर उसने कहा- तुम क्यों रो रही हो। इस पर मैंने कहा कि मैं इसलिए रो रही हूं कि उस डायरेक्टर ने तुममें क्या देखा?'

कार्तिक को फिल्म से बाहर कर देने के लिए कहा था माला तिवारी ने कहा, 'इस खबर के दो दिन बाद मैं डायरेक्टर लव रंजन से मिलने चली गई। मैंने उनसे सिर्फ एक सवाल पूछा था- बेटा, दुनिया के सभी लोगों में से आपने मेरे बेटे को क्यों चुना? इस बात को अपने बीच रखते हैं और प्लीज मेरे बेटे को फिल्म से हटा दीजिए। लेकिन उन्होंने मेरी इस शर्त को मानने से इनकार कर दिया। कार्तिक की मां ने उन्हें सिर्फ इस शर्त पर फिल्मों में काम करने की परमीशन दी थी कि वो इंजीनियरिंग की डिग्री पूरी करेंगे और अपना वादा निभाएंगे। कार्तिक को हाल ही में फिल्म भूल भुलैया 3 में देखा गया है। हॉरर कॉमेडी जॉनर की इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परफॉर्म किया है।

करोड़ों की मालकिन हैं राखी सावंत

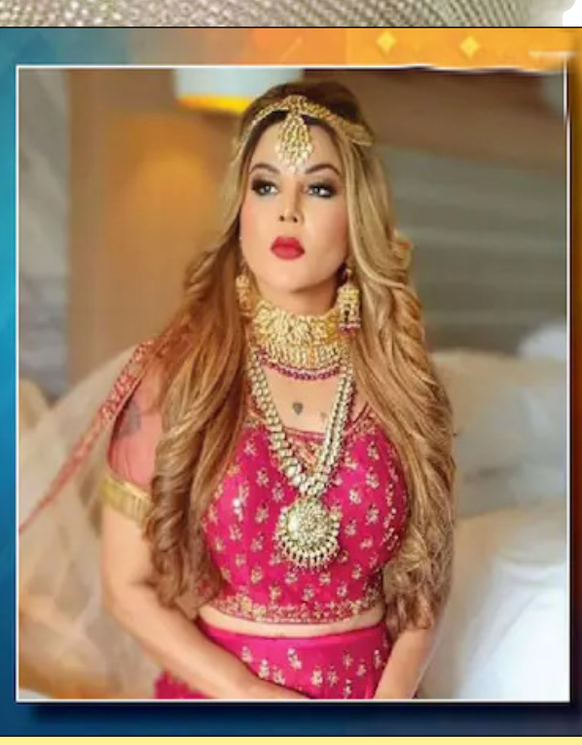

आज हम आपको बॉलीवुड की ड्रामा क्वीन यानि राखी सावंत की लग्जरी लाइफ से रूबरू करवाने जा रहे हैं. एक्ट्रेस ने सालों के करियर में अपार संपत्ति जमा कर ली है. आज हम आपको बॉलीवुड की ड्रामा क्वीन यानि राखी सावंत की लग्जरी लाइफ से रूबरू करवाने जा रहे हैं. एक्ट्रेस ने सालों के करियर में अपार संपत्ति जमा कर ली है. राखी सावंत को बॉलीवुड की ड्रामा क्वीन भी कहा जाता है. जो कभी शादी तो कभी बोल्ड लुक को लेकर चर्चा में बनी रहती हैं. लेकिन यहां हम आपको उनकी अपार संपत्ति से रूबरू करवा रहे हैं.

जिसे आंकड़े जानकर आपको भी झटका लगेगा. राखी सावंत ने सिर्फ 11 साल की उम्र में ही फिल्मों में काम करना शुरू कर दिया था. उस वक्त राखी को सैलरी के नाम पर सिर्फ 50 रुपए मिलते थे. लेकिन एक्ट्रेस ने कभी हार नहीं मानी और कई सालों तक कड़ा संघर्ष किया. फिर उन्हें फराह खान की फिल्म 'मैं हूं ना' में एक किरदार निभाने का मौका मिला. इस रोल में उन्हें काफी पसंद भी किया गया. हालांकि ये फिल्म राखी को एक्टिंग में सफल नहीं कर पाई. इसके बाद राखी ने डांस में अपना करियर बनाने का फैसला लिया. राखी ने बॉलीवुड की कई सुपरहिट फिल्मों में आइटम सॉन्ग किए. जो ब्लॉकस्टर हिट भी रहे. एक वक्त था जब राखी बी-टाउन की टॉप आइटम गर्ल कहलती थी. हर कोई उनके लटकों-झटकों के दीवाना था. लेकिन अब पिछले काफी वक्त से राखी ने कोई आइटम सॉन्ग नहीं किया. ना ही वो किसी फिल्म और सीरियल में नजर आई. हालांकि इसके बाद भी राखी की लग्जरी लाइफ में कोई कमी नहीं आई है. दरअसल राखी सावंत फिल्मों के अलावा ऐड शूट, ब्रांड प्रमोशन के साथ-साथ सोशल मीडिया के जरिए भी काफी मोटी कमाई करती हैं. मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो राखी सावंत आज अपने दम पर 37 करोड़ रुपये से भी ज्यादा की संपत्ति बना चुकी हैं. वहीं मुंबई और दुबई में आलीशान घर के अलावा राखी सांवत कई लग्जरी गाड़ियों की भी मालकिन हैं.

टीम इंडिया से मिले ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री, विराट कोहली के पर्थ टेस्ट शतक की तारीफकी

वहीं दोनों टीमों के बीच 6 दिसंबर से दूसरा मैच खेला जाएगा लेकिन इससे पहले टीमें पिंक बॉल टेस्ट की तैयारी करेंगी। फिलहाल, टीम इंडिया कैनबरा पहुंची और ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीज से मिली। जहां ऑस्ट्रेलियाई पीएम ने विराट कोहली की तारीफकी।

टीम इंडिया मौजूदा समय में ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर है। जहां दोनों टीमों के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी खेली जा रही है। वहीं इसका पहला टेस्ट मैच पर्थ में खेला जा चुका है जिसे भारत ने जीत लिया। वहीं दोनों टीमों के बीच 6 दिसंबर से दूसरा मैच खेला जाएगा लेकिन इससे पहले टीमें पिंक बॉल टेस्ट की तैयारी करेंगी। फिलहाल, टीम इंडिया कैनबरा पहुंची और ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीज से मिली। जहां ऑस्ट्रेलियाई पीएम ने विराट कोहली की तारीफ की। इस दौरान ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री ने भारतीय खिलाड़ियों की तारीफकी और उनसे काफी बातचीत की। इसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें पीएम एंथोनी अल्बानीज भारतीय पेसर जसप्रीत बुमराह, विराट कोहली और अन्य खिलाड़ियों से मिल रहे हैं। इस दौरान विराट और अल्बानीज के बीच जो बातचीत हुई वह काफी मजेदार थी। अल्बानीज ने विराट को देखा तो उनसे हाथ मिलाया और हाल चाल पूछआ। इसके बाद ऑस्ट्रेलियाई पीएम बोले कि, पर्थ में आपने शानदार सेंचुरी जड़ी। मानो उस समय हम पर्याप्त कष्ट नहीं झेल रहे थे। ये वाकई में शानदार था। इस पर विराट कहते हैं कि आप इसमें मसाला लगा रहे हैं। कोहली ने पर्थ में अपने टेस्ट करियर की 30वीं सेंचुरी ठोकी और इंटरनेशनल क्रिकेट में 81वां शतक जड़ा। वहीं प्रोफेशनल क्रिकेट में उनके शतकों की संख्या 100 हो चुकी है। वे दूसरे ऐसे बल्लेबाज हैं जिन्होंने ये मुकाम प्रतिस्पर्धा क्रिकेट में हासिल किया है। सचिन तेंदुलकर एकमात्र बल्लेबाज हैं जिन्होंने प्रोफेशनल क्रिकेट में 100 से ज्यादा शतक जड़े हैं।

डे-नाइट टेस्ट में भारत का रिकॉर्ड, 75 प्रतिशत मैच जीते, एडिलेड में ही मिली है एकमात्र हार

एडिलेड। भारत के लिए अच्छी बात यह है कि नियमित कप्तान रोहित शर्मा की वापसी हो चुकी है। इसके अलावा शुभमन गिल भी फिट होने की कगार पर हैं। इन दोनों की वापसी से भारतीय बल्लेबाजी मजबूत हो जाएगी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा मुकाबला एडिलेड में छह दिसंबर से खेला जाएगा। यह गुलाबी गेंद से खेला जाने वाला डे-नाइट टेस्ट होगा। पर्थ में 295 रन से जीत हासिल करने के बाद भारतीय टीम आत्मविश्वास से लबरेज है। वहीं, दूसरी तरफ ऑस्ट्रेलियाई टीम अपने घर में हार से परेशान है। हालांकि, डे-नाइट टेस्ट अलग बात होगी। ऐसे मैचों में ऑस्ट्रेलियाई टीम कड़ी टक्कर देती है और उनका रिकॉर्ड शानदार रहा है। रोहित और शुभमन गिल फिट हुए भारत के लिए अच्छी बात यह है कि नियमित कप्तान रोहित शर्मा की वापसी हो चुकी है। इसके अलावा शुभमन गिल भी फिट होने की कगार पर हैं। इन दोनों की वापसी से भारतीय बल्लेबाजी मजबूत हो जाएगी। हालांकि, टीम मैनेजमेंट के सामने प्लेइंग-11 को लेकर परेशान होगा। रोहित और गिल को विनिंग कॉम्बिनेशन में फिट करना चिंता का विषय है। देवदत्त पडिक्कल का बेंच पर बैठना तय माना जा रहा है। इसके अलावा ध्रुव जुरेल भी बेंच पर बैठे दिख सकते हैं। सबसे बड़ी परेशानी यह होगी कि केएल राहुल को ओपनिंग भेजा जाएगा या उन्हें फिर से नंबर पांच पर भेजा जाएगा। आइए उससे पहले हम डे-नाइट टेस्ट या पिंक बॉल टेस्ट में भारत के आंकड़े देखते हैं... भारत ने अब तक चार डे-नाइट टेस्ट खेले हैं। इसमें से तीन में उन्हें जीत मिली है, जबकि एक में हार का सामना करना पड़ा है। टीम इंडिया ने डे-नाइट टेस्ट में 75 फीसद मैच जीते हैं। जिस एकमात्र टेस्ट में भारतीय टीम को हार मिली थी, वह चार साल पहले एडिलेड में ही खेला गया था। यह 2020ध्21 में भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे का पहला टेस्ट था। विराट कोहली की कप्तानी वाली टीम इंडिया को इसमें आठ विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा था। एडिलेड में पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने 244 रन बनाए थे। चेतेश्वर पुजारा ने 43 रन और अजिंक्य रहाणे ने 42 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 191 रन पर ही सिमट गई थी। मार्नस लाबुशेन 47 रन और कप्तान टिम पेन ने 73 रन बनाए थे। भारतीय टीम दूसरी पारी में तहस नहस हो गई थी और सिर्फ 36 रन पर सिमट गई थी। यह भारत का टेस्ट में सबसे कम स्कोर भी है। पृथ्वी शॉ चार रन, मयंक अग्रवाल नौ रन, जसप्रीत बुमराह दो रन, विराट कोहली चार रन, हनुमा विहारी आठ रन और ऋद्धिमान साहा चार रन बनाकर आउट हुए थे। वहीं, पुजारा, रहाणे और अश्विन खाता भी नहीं खोल सके थे। कमिंस ने चार और हेजलवुड ने पांच विकेट लिए थे। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के सामने बढ़त मिलाकर 90 रन का लक्ष्य रखा था। ऑस्ट्रेलिया ने दो विकेट पर 93 रन बनाकर मैच जीत लिया था। मैथ्यू वेड ने 33 रन बनाए थे, जबकि जो बर्न्स 51 रन बनाकर नाबाद रहे थे। भारत ने पहला डे नाइट टेस्ट 2019 में खेला था भारत ने अपना पहला डे नाइट टेस्ट 2019 में बांग्लादेश के खिलाफ खेला था और 46 रन से जीत हासिल की थी। यह मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेला गया था। इसके बाद 2020 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफखेलने के बाद टीम इंडिया ने फरवरी 2021 में इंग्लैंड को अहमदाबाद में डे-नाइट टेस्ट में 10 विकेट से और फिर बेंगलुरु में मार्च 2022 में श्रीलंका को 238 रन से शिकस्त दी थी। डे-नाइट टेस्ट में भारत का उच्चतम स्कोर 347ध्9 का है। बांग्लादेश के खिलाफ टीम इंडिया ने इतने रन बनाए थे। वहीं, न्यूनतम स्कोर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 36 रन का है। टीम इंडिया 2020 में मिली हार को भुलाकर एक नई शुरुआत करना चाहेगी और पर्थ की तरह एडिलेड भी फतह करना चाहेगी। विराट डे नाइट टेस्ट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय भारत के लिए डे-नाइट टेस्ट में सबसे ज्यादा रन विराट ने ही बनाए हैं। उन्होंने ऐसे चार मैचों में 46.16 की औसत से 277 रन बनाए हैं। वहीं, रोहित शर्मा तीन मैचों में 43.25 की औसत से 173 रन के साथ दूसरे नंबर पर हैं। लिस्ट में तीसरे स्थान पर श्रेयस अय्यर हैं। उन्होंने एक डे नाइट टेस्ट में 79.50 की औसत से 155 रन बनाए हैं। वहीं, गेंदबाजों की बात करें तो डे नाइट टेस्ट में भारत की ओर से सबसे ज्यादा विकेट रविचंद्रन अश्विन ने लिए हैं। उन्होंने ऐसे चार मैचों में 18 विकेट झटके हैं। वहीं, अक्षर पटेल ने दो पिंक बॉल टेस्ट में 14 विकेट झटके हैं। उमेश यादव ने ऐसे दो मैचों में 11 विकेट लिए हैं। डे-नाइट टेस्ट में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन खिलाड़ी मैच कुल रन औसत विराट कोहली 4 277 46.16 रोहित शर्मा 3 173 43.25 श्रेयस अय्यर 1 155 79.50 डे-नाइट टेस्ट में भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट खिलाड़ी मैच कुल विकेट औसत रविचंद्रन अश्विन 4 18 13.83 अक्षर पटेल 2 14 9.14 उमेश यादव 2 11 15.54 डे नाइट टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के आंकड़े ऑस्ट्रेलिया के लिए चिंता की बात यह है कि 2020 में कहर बरपाने वाले हेजलवुड दूसरे टेस्ट में नहीं खेलेंगे। वह चोटिल हैं। ऑस्ट्रेलिया का डे नाइट टेस्ट में असाधारण रिकॉर्ड है। उन्होंने अब तक 12 डे-नाइट टेस्ट खेले हैं, जिनमें से 11 में जीत हासिल की है, जबकि सिर्फएक में हार का सामना करना पड़ा है। जो बात उनके रिकॉर्ड को और भी प्रभावशाली बनाती है, वह यह है कि उनकी जीत अलग अलग विरोधियों के खिलाफ आई है। इनमें भारत, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका और वेस्टइंडीज शामिल हैं। ऑस्ट्रेलिया ने 2015 में एडिलेड में पहले अंतरराष्ट्रीय डे-नाइट टेस्ट में न्यूजीलैंड को तीन विकेट से हराया था।

रूट ने चौथी पारी में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में सचिन को पीछे छोड़ा, कार्से ने झटके कुल 10 विकेट

क्राइस्टचर्च। रूट के अब टेस्ट की चौथी पारी में 1630 रन हो गए हैं, जबकि सचिन ने अपने करियर में इस दौरान 1625 रन बनाए थे। इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रूट ने न्यूजीलैंड के खिलाफ क्राइस्टचर्च में खेले गए पहले टेस्ट मैच के दौरान एक खास उपलब्धि अपने नाम दर्ज कर ली है। रूट ने टेस्ट की चौथी पारी में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में भारत के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ दिया है। अपना 150वां टेस्ट खेलने वाले रूट ने अपनी टीम की जीत में योगदान दिया और वह 15 गेंदों पर 22 रन बनाकर नाबाद रहे। सबसे आगे निकले रूट रूट भले ही बड़ी पारी नहीं खेल पाए, लेकिन वह चौथी पारी में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में सभी से आगे निकल गए हैं। रूट के अब टेस्ट की चौथी पारी में 1630 रन हो गए हैं, जबकि सचिन ने अपने करियर में इस दौरान 1625 रन बनाए थे। तीसरे नंबर पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलेस्टियर कुक हैं और दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ हैं। इन दोनों ही बल्लेबाजों ने चौथी पारी में कुल एक समान 1611 रन बनाए हैं। वेस्टइंडीज के पूर्व बल्लेबाज शिवनारायण चंद्रपॉल ने 1580 रन बनाए हैं। इंग्लैंड ने आठ विकेट से जीता मैच मैच की बात करें तो इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड को आठ विकेट से हरा दिया है। इस तरह इंग्लैंड ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है। तेज गेंदबाज ब्राइडन कार्से की शानदार गेंदबाजी के दम पर इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड की दूसरी पारी 254 रन पर ऑलआउट की। न्यूजीलैंड ने इंग्लैंड के सामने 104 रनों का लक्ष्य रखा जिसे इंग्लैंड ने 12.4 ओवर में दो खोकर हासिल कर लिया। न्यूजीलैंड केन विलियमसन के अर्धशतक के बाद डेरिल मिचेल की 84 रन की पारी की मदद से इंग्लैंड के खिलाफबढ़त लेने में सफल रहा था। हालांकि, लक्ष्य इतना बड़ा नहीं था और न्यूजीलैंड के गेंदबाज इसका बचाव नहीं कर सके। कार्से ने किया कमाल ब्राइडन कार्से ने इस मैच में कमाल की गेंदबाजी की। पहली पारी में चार विकेट लेने वाले कार्से ने दूसरी पारी में 42 रन देकर छह विकेट झटके। इस तरह कार्से मैच में कुल 10 विकेट लेने में सफल रहे। अपना तीसरा टेस्ट मैच खेलने वाले कार्से ने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। न्यूजीलैंड ने पहली पारी में 348 रन बनाए थे, जबकि इंग्लैंड ने पहली पारी में 499 रन बनाकर 151 रन की बढ़त हासिल की थी। लक्ष्य का पीछा करते हुए अपना पहला टेस्ट खेलने वाले जैकब बेथेल ने नाबाद 50 रन की पारी खेली और टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में बना एक अनोखा वर्ल्ड रिकॉर्ड, 20 ओवर के मैच में 11 के 11 खिलाड़ियों ने की गेंदबाजी

दरअसल, दिल्ली के नाम एक एकदम ही हटके वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। दिल्ली की ओर से टी20 मैच में 11 के 11 खिलाड़ियों ने गेंदबाजी कर डाली। आयुष बदोनी टीम के कप्तान हैं और साथ ही विकेटकीपर भी हैं। इस मैच में उन्होंने भी अपने हाथ गेंदबाजी में आजमा लिए। 11 के 11 खिलाड़ियों में किसी ने अभी अपने कोटे के चार ओवर पूरे नहीं किए।

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024 के ग्रुप सी दिल्ली और मणिपुर के बीच मुकाबला खेला गया। इस मैच में ऐसा कुछ हुआ, जो इससे पहले कभी टी20 क्रिकेट में नहीं हुआ है। दरअसल, दिल्ली के नाम एक एकदम ही हटके वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। दिल्ली की ओर से टी20 मैच में 11 के 11 खिलाड़ियों ने गेंदबाजी कर डाली। आयुष बदोनी टीम के कप्तान हैं और साथ ही विकेटकीपर भी हैं। इस मैच में उन्होंने भी अपने हाथ गेंदबाजी में आजमा लिए। 11 के 11 खिलाड़ियों में किसी ने अभी अपने कोटे के चार ओवर पूरे नहीं किए। इस मुकाबले में दिल्ली की तरफसे हर्ष त्यागी, दिग्वेश राठी और मयंक रावत ने तीन-तीन ओवर किए, जबकि आयुष सिंह, अखिल चौधरी और आयुष बदोनी ने दो-दो ओर किए। वहीं आर्यन राणा, हिम्मत सिंह, प्रियांश आर्या, यश धुल और अनुज रावत ने एक-एक ओवर फेंका। मणिपुर ने 20 ओवर में आठ विकेट पर 120 रन बनाए। 41 रनों तक मणिपुर ने 6 विकेट गंवा दिए थे। कप्तान रेक्स राजकुमार, विकेटकीपर अहमद शाह ने मिलकर इसके बाद मणिपुर के लिए कुछ रन जोड़े। अहमद शाह मणिपुर की ओर से बेस्ट स्कोरर रहे और उन्होंने 32 रनों की पारी खेली। टॉप ऑर्डर में उलेनयई ने 19 रन बनाए, इसके बाद तो एक के बाद एक बैटर आउट होता चला गया। मणिपुर की ओर से अगर आखिरी के ओवरों में लोअर मिडिल ऑर्डर के बल्लेबाज रन नहीं बनाते तो, टीम का स्कोर 100 रन भी नहीं हो पाता। टी20 क्रिकेट में इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ है, जब किसी टीम की ओर से 11 के 11 खिलाड़ियों ने गेंदबाजी की हो और अब ये वर्ल्ड रिकॉर्ड दिल्ली के नाम दर्ज हो गया है।

ग्लेन फिलिप्स ने हवा में एक हाथ से लपका हैरतअंगेज कैच, आंखों पर नहीं होगा यकीन

न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के बीच क्राइस्टचर्च में खेले जा रहे मुकाबले में इंग्लैंड ने दूसरे दिन के अंत तक पांच विकेट खोकर 319 रन बना लिए थे। हैरी ब्रूक 132 रन बनाकर नाबाद थे। उन्होंने ओली पोप के साथ 151 रन की साझेदारी की। इस साझेदारी को तोड़ने का श्रेय ग्लेन फिलिप्स को जाता है। जिन्होंने हैरतअंगेज कैच लपक कर अपनी टीम को सफलता दिलाई है। टिम साउदी की गेंद पर स्ट्राइक पर मौजूद पोप ने कट शॉट खेला। गेंद की रफ्तार को देखकर नहीं लगाया था कि कोई उसे रोक पाएगा। फिलिप ने दाएं और डाइव किया और एक हाथ से कमाल का कैच लपका। हवा में पकड़ा कैच देखकर सभी हैरान रह गए। यहां तक की ओली पोप खुद भी कैच देखकर हैरान रह गए थे, पोप ने इस दौरान 77 रन बनाए। इस ओवर से पहले ग्लेन फिलिप्स से एक कैच छूटा भी था। 51वें ओवर में ब्रूक को फिलिप्स के कैच छोड़ने के कारण तीसरा जीवनदान मिला। इस बार फिलिप्स की गेंद पर डेवॉन कॉनवे ने उनका कैच टपकाया था। ये कैच इंग्लैंड को काफी भारी पड़ा। ब्रूक 132 रन बना चुके हैं उनकी पारी के कारण ही इंग्लैंड बेहतर स्थिति में है।

रोहित शर्मा की वापसी के बाद किस नंबर पर खेलेंगे केएल राहुल, सुनील गावस्कर ने दिया ये जवाब

6 दिसंबर से भारतीय टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरा टेस्ट मैच एडिलेड में खेलेगी। इस टेस्ट मैच में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा की वापसी होने वाली है। इस कारण टीम की प्लेइंग इलेवन और बल्लेबाजी क्रम में बदलाव तय है। भारत के दिग्गज बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने बताया कि रोहित के आने के बाद केएल राहुल को किस नंबर पर खेलना चाहिए। रोहित शर्मा अपने दूसरे बच्चे के जन्म के कारण पहले टेस्ट का हिस्सा नहीं थे। वहीं शुभमन गिल वॉर्म अप मैच के दौरान अपने अंगूठे में चोट लगवा बैठे थे। इसी कारण वह भी पहला मैच नहीं खेले। हालांकि, अब दोनों की टीमें में वापसी होने वाली है। केएल राहुल ने पहली पारी में ओपनिंग की। उन्होंने 74 गेंदों में 26 रन बनाए वहीं दूसरी पारी में उनके बल्ले से 77 रन आए। रोहित शर्मा की वापसी के साथ ही राहुल का ओपनर की जगह से हटना तय है। वहीं अगर गिल भी वापस आते हैं तो तीसरे नंबर पर उन्हीं को मौका मिलेगा। सुनील गावस्कर ने कहा कि, मुझे ऐसा लगता है कि बैटिंग ऑर्डर में बदलाव होगा जहां रोहित शर्मा भारतीय बल्लेबाज केएल राहुल की जगह लेंगे, शुभमन गिल तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे और ध्रुव जुरेल को टीम से बाहर होना होगा। ऐसे में केएल राहुल को छठे नंबर पर बल्लेबाजी करनी चाहिए। साथ ही सुनील गावस्कर ने आगे कहा कि, टीम में एक और बदलाव हो सकता है। वॉशिंगटन सुंदर की जगह रविंद्र जडेजा को टीम में मौका मिल सकता है। सुंदर ने दोनों पारियों में मिलाकर कुल पांच ही रन बनाए। वहीं उनके खाते में दो ही विकेट आए। ये दोनों विकेट उन्होंने दूसरी पारी में झटके।

इस क्रिकेटर की मैच के दौरान हुई मौत, 4 महीने पहले ही हुआ था बेटी का जन्म

महाराष्ट्र के क्रिकेटर इमरान पटेल की बुधवार रात एक लीग मैच खेलते हुए मौत हो गई। 35 वर्षीय इमरान गरवारे स्टेडियम में खेले जा रहे लीग मैच में बतौर ओपनर उतरे थे। मैच खत्म भी नहीं हुआ और इमरान की जान चली गई। इमरान के परिवार को इससे गहरा सदमा लगा है। इमरान टीम के कप्तान थे और बल्लेबाजी करते हुए लगातार दो चौके मार चुके थे। कुछ ओवर का खेल होने के बाद उन्होंने अंपायर से शिकायत की कि, उनके गले और हाथ में दर्द हो रहा है। अंपायर से बात करने के बाद पटेल पवेलियन की ओर जाने लगे। हालांकि, वह पवेलियन पहुंचने से पहले ही गिर पड़े। लोगों ने उनकी मदद की कोशिश की उन्हें अस्पताल लेकर गए जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। बता दें कि, इमरान चार महिने पहले ही तीसरी बार पिता बने थे। उनके परिवार में उनकी मां और तीन बेटियां हैं। इमरान पटेल के साथी नसीर खान ने बताया कि खिलाड़ी को मैच से पहले कभी इस तरह की दिक्कत नहीं हुई थी। उन्होंने कहा कि, इमरान की कोई पुरानी मेडिकल कंडीशन नहीं है। वह फिट था। वह ऑलराउंडर था जो क्रिकेट से बहुत प्यार करता था।

पंत और हमारी विचारधारा में अंतर था, पैसे से इसका कोई लेना देना नहीं

नयी दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स के सह-मालिक पार्थ जिंदल ने खुलासा किया कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मेगा नीलामी से पहले ऋषभ पंत को बनाए रखने के लिए फ्रेंचाइजी ने हर संभव कोशिश की लेकिन इस दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज के साथ टीम संचालन को लेकर प्रबंधन के विचार एक जैसे नहीं थे। कैपिटल्स ने पंत को टीम में बरकरार नहीं रखा और बाएं हाथ के इस खिलाड़ी को हाल ही में मेगा नीलामी में लखनऊ सुपर जायंट्स ने 27 करोड़ रुपये में खरीदा। वह आईपीएल इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए। जिंदल ने 'ईएसपीएनक्रिकइन्फो' से कहा, '' फ्रेंचाइजी के संचालन पर हमारी सोच अलग-अलग थी। यही कारण है कि यह (पंत का टीम से अलग होना) हुआ। इसका पैसे से इसका कोई लेना-देना नहीं है।'' उन्होंने कहा, '' ऋषभ के लिए पैसा कभी कोई मुद्दा नहीं रहा। हमारे लिए भी पैसा कभी कोई मुद्दा नहीं था। मुझे लगता है कि हम तीनों (किरण ग्रांधी, जिंदल और पंत) की सोच एक जैसी नहीं थी।''

नेशनल शूटिंग चौंपियनशिप में हिस्सा नहीं लेंगी मनु भाकर

मनु भाकर ने दोबारा ट्रेनिंग शुरू कर दी है। लेकिन उनके फैंस के लिए एक निराशाजक खबर है क्योंकि मनु अगले महीने होने वाली नेशनल चौंपियनशिप का हिस्सा नहीं होंगी।

पाकिस्तान के कारण आईसीसी को होगा बड़ा नुकसान, चौंपियंस ट्रॉफी को लेकर होगी मीटिंग

चौंपियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर अभी बीसीसीआई बनाम पीसीबी का पेंच सुलझा भी नहीं है कि, पाकिस्तान के कारण अब आईसीसी को बड़ा नुकसान होने वाला है। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद को सुनिश्चित करना होता है कि टूर्नामेंट शुरू होने से 90 दिन पहले तक भाग ले रहे सभी देशों के क्रिकेट बोर्ड्स को शेड्यूल भेजा दिया जाए। लेकिन भारत और पाकिस्तान के टकराव के बीच एख नया अपडेट सामने आया है कि शेड्यूल में हो रही देरी के कारण चौंपियंस ट्रॉफी के ब्रॉडकास्टर्स को भारी नुकसान उठान पड़ सकता है। क्रिकबज की एक रिपोर्ट अनुसार शेड्यूल जारी करने की डेडलाइन निकल चुकी है। इस कारण प्रसारणकर्ता डिजनी और जियो को भारी नुकसान झेलने की नौबत आ गई है। चूंकि अब तक चौंपियंस ट्रॉफी का शेड्यूल सामने नहीं आया है इसलिए ब्रॉडकास्टर्स भी इस आगामी आईसीसी टूर्नामेंट का फायदा उठाने में पूरी तरह असमर्थ दिखाई पड़ रहे हैं। कमर्शियल मुद्दों पर आईसीसी ने अब तक कोई बयान जारी नहीं किया है, लेकिन इतना जरूर है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा शहीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।